प्रसिद्ध आर्यनेता,
स्वतन्त्रता सेनानी
श्री शारदा का

# देशभक्त कुंवर चांदकरण शारदा
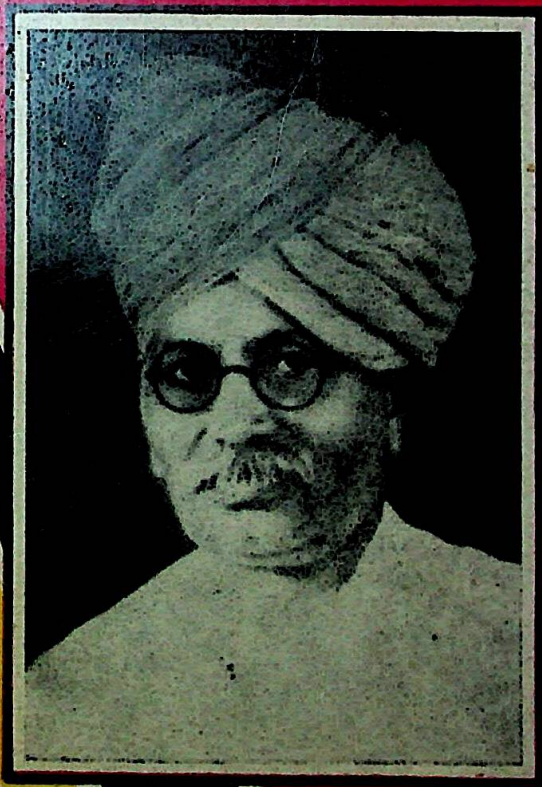
डा० भवानीलाल भारतीय

॥ ओ३म् ॥


# देशभक्त कुंवर चांदकरण शारदा

[प्रसिद्ध आर्यनेता, स्वतन्त्रता-सेनानी का जीवन-चरित]

लेखक
डॉ० भवानीलाल भारतीय
अध्यक्ष, महर्षि दयानन्द अनुसंधान-पीठ
पंजाब विश्वविद्यालय – चण्डीगढ़

प्रकाशक
श्रीमती परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर

प्रथमावृत्ति : १९८१ ई.
मूल्य ५) रु.

* ओ३म् *

# देशभक्त कुंवर चांदकरण शारदा

[प्रसिद्ध आर्यनेता, स्वतन्त्रता-सेनानी का जीवन-चरित]

लेखक
डॉ० भवानीलाल भारतीय
अध्यक्ष, महर्षि दयानन्द अनुसंधान-पीठ
पंजाब विश्वविद्यालय – चण्डीगढ़
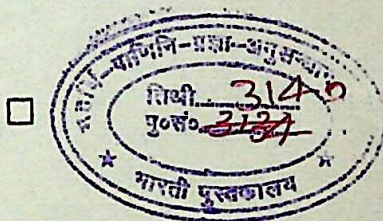
प्रकाशक
श्रीमती परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर

मूल्य ५) रु. प्रथमावृत्ति : १९८१ ई.
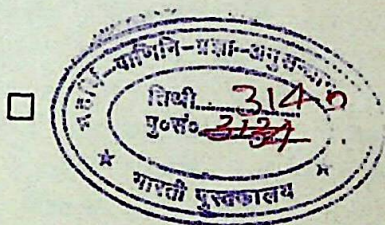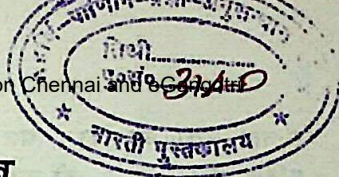
# प्राक्कथन

कु० चांदकरण शारदा का जीवन विविध प्रकार की कार्य प्रवृत्तियों का एक मनोहर संगम स्थल था। वे एक साथ ही धर्म, समाज, राजनीति, शिक्षा, साहित्य, संस्कृति आदि के विभिन्न क्षेत्रों में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान कर सके, यह इसलिये सम्भव हुआ क्योंकि उन्हें प्रारम्भ से ही आर्यसमाज तथा महर्षि दयानन्द की उस विचारधारा से परिचित होने का अवसर मिला था, जिसके अन्तर्गत मानव जीवन के बहुमुखी विकास को सर्वाधिक महत्त्व दिया जाता है। चांदकरण शारदा आदर्शवादी महापुरुष थे। बिना सर्वोच्च आदर्श को अपना लक्ष्य बनाये सार्वजनिक जीवन में सफलता प्राप्त करना कठिन होता है। स्वदेश और स्वसंस्कृति के प्रति उनकी अनन्य निष्ठा का कारण भी यही था और महर्षि दयानन्द के उदार राष्ट्रवादी दृष्टिकोण ने उनमें भी देश और धर्म के लिये कुछ कर गुजरने का भाव भर दिया था।

नवीन पीढ़ी के लोगों को सम्भवतः इस बात का किञ्चित् मात्र भी ज्ञान नहीं होगा कि राजस्थान में राजनीतिक गतिविधियों का प्रारम्भ और विस्तार शारदा जी के द्वारा ही हुआ। उस युग में जबकि समस्त राजस्थान सामन्तशाही शासन के दुर्धर्ष चक्र में पिस रहा था, यहां की जनता को अपने अधिकारों की मांग करने के लिये उद्बोधित एवं उत्तेजित कर शारदा जी ने वास्तविक अर्थों में राजनीतिक जागृति एवं चेतना उत्पन्न की। सेठ जमनालाल बजाज, गणेशशंकर विद्यार्थी, विजयसिंह पथिक जैसे राष्ट्रकर्मियों के सहयोग से शारदा जी ने प्रारम्भ में राजपुताना मध्यभारत सभा की स्थापना की। उसके पश्चात् वे कांग्रेस के राष्ट्रीय आन्दोलन में सम्मिलित हुए और १९२२ में असहयोग के दिनों में कारावास यात्रा भी की। निश्चय ही जिन लोगों ने देश की स्वतन्त्रता के लिये वास्तविक रूप से त्याग और बलिदान किया था, वे स्वतन्त्रता के पश्चात् भी प्रायः उपेक्षित ही रहे, परन्तु उन्होंने कोई पुरस्कार प्राप्त करने हेतु तो देश की बलिवेदी पर अपना बलिदान किया नहीं था, जिसके कि क़ारण वे निराश होते। अस्तु शारदा जी ने भी स्वातन्त्र्योत्तर काल में अपनी गतिविधियों को पूर्व के ही भाँति समाज सेवा, धर्मप्रचार, आर्य सभ्यता एवं संस्कृति के प्रसार आदि में सीमित रक्खा।

खेद है कि इस प्रकार के राष्ट्रभक्त, समाजसेवी तथा आर्य संस्कृति के अनन्य उपासक महापुरुष का जीवनचरित अभी तक सुव्यवस्थित रूप

से नहीं लिखा जा सका। अजमेर शारदा जी की कर्मभूमि रही थी। यहाँ प्रतिवर्ष आषाढ़ कृ. २ को उनका जन्मदिन मनाया जाता है। वर्षों पूर्व मैंने यह संकल्प किया था कि देशभक्त कु. चांदकरण शारदा का एक सर्वांगीण जीवनचरित लिखूं। तदनुसार मैंने उपादान सामग्री का संग्रह भी किया। उनके द्वारा रचित विभिन्न ग्रन्थों, तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं तथा उनके व्यक्तिगत पुस्तक संग्रह, कागज-पत्रों आदि को भी भलीभाँति देखा तथा उपयोगी उपादानों का संग्रह किया। जीवनी की पाण्डुलिपि तो १९७६ ई. में ही तैयार हो गई थी, यह प्रसन्नता की बात है कि शारदा जी की ९३ वीं जन्म-तिथि पर यह जीवनी प्रकाशित हो रही है।

इस पुस्तक के प्रूफ-संशोधन में श्री शारदा जी की सुपुत्री सुश्री सरला जी शारदा, प्रधानाध्यापिका—आर्य पुत्री उच्च माध्यमिक विद्यालय, अजमेर ने जो सहयोग दिया है, उसके लिये मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

चण्डीगढ़ **भवानीलाल भारतीय**

आषाढ़ कृष्णा २, संवत् २०३८ वि.

# जन्म और शैशव काल

राजस्थान की वीरप्रसविनी मरुभूमि ने विगत काल में अनेक ऐसे नररत्नों को जन्म दिया है, जो अपने शौर्य और पराक्रम, त्याग और बलिदान, दान एवं दाक्षिण्य के कारण देश के इतिहास में अपना नाम अजर-अमर कर गये हैं। स्वतंत्रता के लिये अपना सर्वस्व होम देनेवाले महाराणा प्रताप स्वामिभक्ति का आदर्श उपस्थित करनेवाले वीर दुर्गादास जैसे क्षत्रिय नर पुंगवों की बात छोड़िये, वैश्य कुलावतंस भामाशाह का सर्वस्व त्याग भी राजस्थान के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा। वस्तुतः राजस्थान के इतिहास के सम्बन्ध में कर्नल जेम्सटॉड की यह उक्ति सर्वथा सार्थक ही है कि इस प्रदेश का कोई ऐसा भूमिकण नहीं है, जहाँ यूनानी रणस्थली थर्मोपली की तरह के युद्ध न लड़े गये हों और न कोई ऐसा ग्राम है, जिसने ल्योनीडास जैसे ग्रीक वीरों को जन्म न दिया हो।

भारतीय समाज की चतुर्विध वर्णव्यवस्था गुण-कर्मानुसार ही निर्धारित की गई थी परन्तु इतिहास में ऐसे दृष्टान्त भी देखने में आते हैं जब कि शील, सौजन्य तथा दया एवं क्षमा के भण्डार कहे जानेवाले ब्राह्मणों में उग्रकर्मा क्षत्रिय स्वभाववाले व्यक्तियों का भी जन्म हो गया और कृषि, गोरक्षा एवं वाणिज्य जैसे व्यवसाय करने वाली तथा स्वभाव से ही भीरु समझी जाने वाली वैश्य जाति में धीर वीर, पराक्रमी तथा देश, धर्म एवं समाज की रक्षा के लिये सर्वस्व न्यौछावर कर देनेवाले पुरुषों का आविर्भाव हुआ। यदि परशुराम ब्राह्मणों में अपवाद स्वरूप हो सकते हैं, तो वैश्य वंश में उत्पन्न वीरवर हेमू जैसे शास्त्रोपजीवी सेनापति ने भी अकबर जैसे नीतिनिपुण सम्राट् का सामना कर वीरता का एक नवीन कीर्त्तिमान स्थापित किया था, यह इतिहास से सुस्पष्ट है।

राजस्थान में वैश्यों के अनेक वर्ग शताब्दियों से वाणिज्य-व्यवसाय एवं कृषि आदि आजीविकाओं में लगे हुए देश और समाज को समुन्नत बनाने में अपना योगदान करते रहे हैं। मूलतः ये वैश्व क्षत्रिय ही रहे होंगे। कालान्तर में वैष्णव, जैन आदि मतों का अवलम्बन कर लेने के कारण इनमें क्षत्रियोचित शस्त्रधारण तथा मारकाट की प्रवृत्ति कम हो गई और शान्तिपूर्वक जीवन यापन करने हेतु इन लोगों ने कृषि, व्यापार आदि के कृत्यों को अपना लिया। 'माहेश्वरी' नाम से विख्यात प्रसिद्ध वैश्य जाति मूलतः राजस्थान की ही निवासिनी है, किन्तु अपनी औद्योगिक क्षमता तथा व्यवसायगत कौशल के कारण उन्नीसवीं शताब्दी में उसने महाराष्ट्र, बंगाल,

आसाम, मद्रास जैसे सुदूरवर्ती प्रान्तों में जाकर अपना आर्थिक और वित्तीय वर्चस्व बढ़ाया तथा भारत के इन प्रदेशों के सामाजिक एवं नागरिक जीवन में अपनी प्रभुता स्थापित की। अंग्रेजों के भारत में जम जाने के पश्चात् व्यापार और व्यवसाय के क्षेत्र में 'मारवाड़ी' कही जानेवाली जिस वैश्य जाति ने अपना प्रायः एकाधिकार स्थापित कर लिया था, वह अन्यों के लिये एक ईर्ष्या की वस्तु थी। राजस्थान से इतर प्रान्तों में मात्र लोटा और डोर साथ लेकर जानेवाले किन्तु कुछ समय पश्चात् ही अपने व्यवसाय-कौशल के कारण कोटयधीश की संज्ञा प्राप्त कर लेने वाले मारवाड़ी श्रेष्ठियों की कथायें पौराणिक उपाख्यानों के तुल्य स्मरणीय बन गई हैं।

किन्तु जो वैश्य राजस्थान में ही रहते थे, उनका जीवन अत्यन्त साधारण कोटि का ही होता था। आवागमन के अपर्याप्त साधनों, वर्षा के घोर अभाव, शिक्षा की कमी तथा दरिद्रता के ताण्डव-नृत्य ने राजस्थान के जन-जीवन को सदा ही कण्टकाकीर्ण बनाये रक्खा। इसके साथ-साथ मध्यकालीन सामन्ती शासन के ध्वंसावशेषों के रूप में जिन देशी रजवाड़ों को यहाँ की शासनव्यवस्था सुपुर्द की गई थी, उनकी स्वेच्छाचारिता, अलोकतंत्रीय राज्यशासन तथा निरंकुश प्रवृत्तियों के कारण सामान्य जनता का जीवन अत्यन्त कष्टपूर्ण हो गया था। सूर्य और चन्द्र वंश के गौरव को समेटे हुये राजस्थान के राजा-महाराजा अपनी अशिक्षित, पिछड़ी तथा विपन्न प्रजा पर अशेष अत्याचारों की वृष्टि करते हुये भी प्रजावत्सल, दीनबंधु और अन्नदाता जैसे विरुदों को धारण किये हुये थे।

उन्नीसवीं शताब्दी में जब समस्त देश में पुनर्जागरण की लहर व्याप्त थी और देश का नवशिक्षितवर्ग पश्चिम के ज्ञान-विज्ञान तथा विचारों के सम्पर्क में आकर एक नवीन प्रेरणा, उत्साह तथा उमंग का अनुभव कर रहा था, उस समय भी राजस्थान की लाखों-करोड़ों जनता सामन्ती अभिशापों से ग्रस्त होकर दोहरी गुलामी में अपना जीवन यापन कर रही थी। अंग्रेजों ने तो समस्त देश को अपने फौलादी शिकंजे में कस ही रक्खा था, इधर क्षत्रिय, कुलोद्भव राजस्थान के राजा-गण भी अपनी गौरवपूर्ण परम्पराओं को विस्मृत कर गौरांग महाप्रभुओं के चरण चुम्बन करते हुये उनके आदेशों-निर्देशों का पालन करने में ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझे बैठे थे। गुलामी, बेगार आदि अभिशप्त प्रथाओं की शिकार यहाँ की मूकजनता पशुओं की भाँति यंत्रणामय जीवन बिताते हुये भी अपने कष्ट और अनुताप को नियति का एक क्रूर विधान मान कर ही संतोष कर लेती थी।

ऐसी स्थिति में आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द का ध्यान राजस्थान की उन्नति और सुधार की ओर गया। उन्होंने यह अनुभव किया कि यदि राजस्थान के क्षत्रिय शासकों में एक बार पुनः उनके पूर्वजों के

स्वाभिमान, गौरव तथा अस्मिता का संचार किया जा सके, तो वे स्वकर्त्तव्य पालन के प्रति जागरूक होकर प्रजाहित में दत्तचित्त हो सकेंगे। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये इस युगविधाता, दूरदर्शी संन्यासी ने अपने जीवन के संध्या-काल में राजस्थान को ही अपनी कार्य-प्रवृत्तियों का केन्द्र बनाया तथा उदयपुर, शाहपुरा तथा जोधपुर जैसे राज्यों के शासकों को अपना शिष्य और अनुयायी वना कर उनके माध्यम से स्वदेश हित के लक्ष्य की पूर्ति का अनुचिन्तन करने लगे। इससे पूर्व भी वे जयपुर, अजमेर आदि राजस्थान के प्रसिद्ध नगरों का अनेक बार भ्रमण कर चुके थे तथा इन नगरों में निवास करनेवाले सभ्य, शिक्षित, उदारमना एवं विचारशील पुरुषों को अपना अनुगत बना चुके थे।

अजमेर की स्थिति राजस्थान के अन्य राज्यों से भिन्न थी। मुगलों के अधिकार से हटकर यह सीधे अंग्रेजी शासन व्यवस्था के अन्तर्गत आ गया था, अतः शिक्षा, स्वास्थ्य तथा अन्य जीवन के लिये आवश्यक सुख-सुविधाओं से सम्पन्न यह छोटा सा जिला प्रान्त के अन्य पिछड़े गतानुगतिक जीवन व्यतीतकरने वाले लोगों के लिये एक आदर्श था। अजमेर के जिन सम्भ्रान्त, सुपठित एवं विचारवान् व्यक्तियों को स्वामी दयानन्द के सम्पर्क में आने तथा व्याख्यान सुनने का अवसर मिला, उनमें नवयुवक विद्यार्थी समुदाय भी था। ऐसे ही युवकों में एक माहेश्वरी युवक रामविलास शारदा भी थे, जिन्होंने स्वामी दयानन्द के व्याख्यान बूटासिंह के छापेखाने (सेठ गजमल जी गली कड़क्का चौक, लूनियाजी का मकान) में सुने थे। अपरिपक्व मस्तिष्कवाले इस किशोर को स्वामी जी के व्याख्यानों के मुख्यांशों का तो स्मरण नहीं रहा था परन्तु उनके द्वारा प्रदत्त 'अंधेर नगरी गबरगंड राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा' वाला दृष्टान्त उन्हें चिरकाल तक याद रहा।

३० अक्टूबर १८८३ ई. की सायंकाल को जब आर्य धर्म और वैदिक सभ्यता का प्रचारक यह महापुरुष अजमेर की भिणाय कोठी में अपनी मानवी लीला को संवरण कर परलोक की ओर प्रस्थान कर रहा था, उस समय रामविलास शारदा अपने कतिपय युवक मित्रों के साथ उस कोठी के एक कमरे में मौजूद था। उसने भारतीय नवजागरण के सूत्रधार महर्षि दयानन्द के मोक्षधाम पधारने का दिव्य दृश्य देखा। उस समय साथ में उनके चचेरे भाई हरविलास जी शारदा भी थे। शीघ्र ही वह अपने साथियों सहित आर्यसमाज का सभासद् बन गया और उसकी गतिविधियों में सर्वात्मना भाग लेने लगा। कालान्तर में यही रामविलास शारदा आर्यसमाज के गणमान्य नेता, विचारक, लेखक और कार्यकर्ता रावसाहब रामविलास शारदा के नाम से विख्यात हुये। उन्होंने न केवल अजमेर में ही आर्यसामाजिक प्रवृत्तियों का अत्यन्त योग्यतापूर्वक संचालन किया, अपि तु राजस्थान प्रान्तीय

आर्यप्रतिनिधि सभा की स्थापना और संगठन में भी अपना भरपूर योग दिया। जिस समय आर्यसमाज की अखिल भारतीय प्रवृत्तियों का संचालन करने के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की भी नींव नहीं पड़ी थी, उस समय यही कर्मठ महापुरुष रामबिलास शारदा, महात्मा मुन्शीराम, स्वामी नित्यानन्द तथा मास्टर आत्मारामजी अमृतसरी जैसे आर्य नेताओं और मनीषियों से सम्पर्क रखकर इस महत्त्वपूर्ण आन्दोलन की गतिविधियों का दक्षतापूर्वक नेतृत्व तथा मार्गदर्शन किया करते थे। देशभक्त कुंवर चांदकरण शारदा इन्हीं रामबिलास जी के द्वितीय पुत्र थे।

**वंश परिचय तथा जन्म—**

डीडवाना निवासी माहेश्वरी वैश्यों का एक परिवार वहाँ से चल कर मेड़ता के निकट आलनियावास ग्राम में आकर बस गया। वहाँ से चल इस परिवार के लोग अजमेर नगर में मदारगेट के भीतर सराय गणपतपुरा मुहल्ले में रहने लगे। इसी कुल में सेठ रामरतन जी शारदा नाम के सम्पन्न गृहस्थ के यहाँ हमारे चरितनायक चांदकरणजी के पिता रामविलास जी का जन्म हुआ था। सेठ रामरतन जी व्यापार कृषि और गोपालन जैसे वैश्य वर्णोचित कार्य करते हुये जीविका निर्वाह करते थे, किन्तु उनके पुत्र ने उर्दू, फारसी और अंग्रेजी की शिक्षा ग्रहण की। वे रेलवे के कैरिज वैगन विभाग में चीफ क्लर्क थे, परन्तु उनका सम्पूर्ण जीवन सार्वजनिक कार्यों के लिये ही समर्पित था। इस प्रकार हम देखते हैं कि चांदकरण जी को सार्वजनिक सेवा, देश, समाज और धर्म के प्रति अनन्य प्रेम, तथा राष्ट्रीयता का आदर्श अपने पिता से दाय के रूप में ही प्राप्त हुआ था, क्योंकि रावसाहब यद्यपि सरकारी सेवा में रहे, किन्तु वे प्रारम्भ से ही स्वामी दयानन्द द्वारा प्रवर्तित स्वदेशभक्ति के भावों की दीक्षा ग्रहण कर चुके थे। राष्ट्रीय महासभा (इण्डियन नेशनल कांग्रेस) के अनेक अधिवेशनों में वे स्वयं सम्मिलित हुये थे तथा स्वदेशी वस्तुओं के अनन्य भक्त थे। चांदकरण जी का जन्म उनके पारम्परिक निवास गृह सराय गणपतपुरा मोहल्ले के मकान में आषाढ़ कृ. २ सं. १९४५ वि. तदनुसार २५ जून १८८८ ई. के दिन हुआ। चाँदकरणजी बाल्यकाल में अत्यन्त सुन्दर मेधावी, कुशाग्रबुद्धि थे। 'होनहार विरवान के होत चिकने पात' सूक्ति को उनके जीवन में चरितार्थ किया था।

**शारदाजी के बाल्यकाल के संस्मरण उन्हीं के शब्दों में निम्न हैं—**

जब हम छोटे-छोटे थे और डी. ए. वी. स्कूल में पढ़ते थे तो अपने पिताजी को समाचार पत्र पढ़ते और वैदिक प्रेस में जो पुस्तकें छपती थीं उनके अंतिम प्रूफ पढ़ते देखते थे। मेरे पिताजी प्रातः जल्दी उठ कर स्नानादि से निवृत्त होकर समाचार पढ़ते ९.३० बजे भोजन कर सीधे गाड़ी में बैठ कर रेल्वे दफ्तर जहां वे क्लर्क थे १० बजे पहुँच जाते। मेरी दादी

ठीक समय भोजन बना दिया करती थी और बड़े प्रेम से भोजन कराती थी। उसको हम 'मांजी' कहा करते थे। मेरे पिताजी की प्रबल इच्छा थी कि वो 'महाभारत' का ऐसा संस्करण निकालें जिसमें से पोपलीला के पौराणिक कहानी-किस्से जो भरे पड़े हैं, वो निकाल दिये जावें और वेदव्यास के असली १० हजार श्लोक लिख दिये जावें। इस काम के लिये उन्होंने महाभारत के कई संस्करण मंगवाये थे। हम लोग भी गर्मी की छुट्टियों में दोपहर को महाभारत या चन्दकान्ता उपन्यास पढ़ा करते थे। कभी-कभी अन्य खेल भी खेला करते थे। सायंकाल को भोजन करके घूमने जाया करते थे। और रात के ७ बजे तक वापिस लौट कर अपने दादा-दादी से कहानियाँ सुना करते थे और उनकी गोद में ही सो जाते। हमारे पिताजी आर्यसमाज की मीटिंगों में सम्मिलित होने के लिए दफ्तर से आकर जल्दी-जल्दी भोजन करके केसरगंज चले जाते और रात को बहुत देर से आते। और हम सोते हुओं को गोदी में उठा-उठा कर रावटी जो हमारी हवेली के तीसरे मंजिल पर बनाई थी, उसमें ले जाकर सुला देते। इस प्रकार हमारा बाल्यकाल दादा-दादी की स्नेहभरी छत्र-छाया में बीता। शिक्षा—अजमेर में आर्यसमाज की शैक्षिक प्रवृत्तियाँ प्रारम्भ से ही सक्रिय रही हैं। महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित तथा उनकी उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा ने आर्यसमाज अजमेर द्वारा स्थापित वैदिक पाठशाला को ही अपने संरक्षण में लिया तथा १८८८ ई. में उसकी प्रबंध व्यवस्था का भार उक्त आर्यसमाज को ही सौंप दिया। इस विद्यालय का पाठ्यक्रम डी. ए. वी. कालेज, लाहौर द्वारा निर्धारित प्रणाली के अनुसार होता था। प्रारम्भ में यह विद्यालय दयानन्द आश्रम एंग्लो वैदिक स्कूल कहलाता था, परन्तु कुछ काल पश्चात् आर्यसमाज अजमेर की सीधी व्यवस्था में आजाने के पश्चात् इसे डी. ए. वी. स्कूल कहा जाने लगा। चाँदकरण जी ने एन्ट्रेंस तक की शिक्षा इसी विद्यालय में प्राप्त की। अध्ययन के प्रति उत्कट लालसा तथा परिश्रमी होने के कारण वे सदा अपनी कक्षा में प्रथम अथवा द्वितीथ स्थान प्राप्त करते रहे। सार्वजनिक जीवन के प्रति आपका आकर्षण छात्रावस्था से ही रहा। १९०६ में जब आप एन्ट्रेंस कक्षा में थे, तभी आपने अपने सहपाठियों के सहयोग से एक वाचनालय की स्थापना की जिसमें अंग्रेजी और हिन्दी के अनेक समाचार-पत्र मंगवाये जाते थे। यह वह समय था जब देश का सार्वजनिक जीवन बंगभंग की घटना से आन्दोलित हो उठा था। विदेशी शासकों के प्रति जनता में उग्र भावनायें पनप रही थीं तथा स्वदेशी और स्वराज्य की चर्चाओं ने वातावरण को भर दिया था। चांदकरण जी भी समाचार-पत्रों में बंगभंग तथा अन्य राजनैतिक चर्चाओं को रुचिपूर्वक पढ़ते तथा अपने मित्रों से इस सम्बन्ध में विचार-

विमर्श करते। साथी विद्यार्थियों में स्वदेशभक्ति के भाव भरने में आप सदा आगे रहते। इन्हीं दिनों आपके प्रयत्नों से आर्यकुमार सभा की भी स्थापना हुई।

१९०६ में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एन्ट्रेन्स की परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने के पश्चात् आप गवर्नमेंट कालेज, अजमेर में प्रविष्ट हुये। १९१० में इसी महाविद्यालय से आपने बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। अध्ययन के प्रति आप की रुचि यहां भी यथावत् रही। तर्कशास्त्र के अध्ययन में आपकी विशिष्ट गति थी। तर्कशास्त्र के तत्कालीन प्रोफेसर गोडबोले आपसे इसी कारण प्रसन्न रहते। आपने इस विषय में सर्वोच्च अंक प्राप्त कर पुरस्कार भी प्राप्त किया। सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी को मिलने वाला कर्नल पिन्हें स्वर्णपदक भी शारदाजी को गवर्नमेंट कालेज, अजमेर से प्राप्त हुआ।

स्नातकोत्तर अध्ययन की सुविधा उन दिनों में राजस्थान में उपलब्ध नहीं थी। अतः एम. ए. और कानून की शिक्षा हेतु चांदकरण जी को आगरा जाना पड़ा। वहाँ ये आगरा कालेज, आगरा में प्रविष्ट हुये। आगरा में उस समय आर्य युवकों का सक्रिय संगठन था, जो महाविद्यालयों के छात्रों में वैदिक धर्म और आर्यसंस्कृति के प्रति अनुराग उत्पन्न करने के लिये सतत प्रयत्नशील रहता था। शारदाजी भी आर्यमित्रसभा नामक संगठन के सक्रिय सदस्य बन गये और युवावर्ग को आर्यसमाज की ओर आकृष्ट करने में आपने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। एल. एल. बी. की परीक्षा आपने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की तथा अजमेर आकर वकालत का व्यवसाय प्रारम्भ किया।

## सार्वजनिक जीवन में प्रवेश[1]

शारदा परिवार का देश के सार्वजनिक कार्यों से प्रारम्भ से ही सम्पर्क रहा है। चांदकरण जी के पिता रामबिलास शारदा का यद्यपि सक्रिय राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं था, किन्तु वे देश की स्वाधीनता हेतु किये

---

१. शारदा जी के पुराने कागजों में १८८८ में सम्पन्न हुई चतुर्थ इण्डियन नेशनल कांग्रेस के प्रतिनिधियों की हिन्दी में छपी एक सूची प्राप्त हुई है। इसके साथ में उनके हाथ की लिखी निम्न टिप्पणी द्रष्टव्य है—"मैं मैं तो पहली बार इलाहाबाद की कांग्रेस में जो सर विलियम वेडरबर्न के सभापतित्व में हुई थी तब सम्मिलित हुआ था, उसके बाद मैं प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी अजमेर, मध्यभारत और राजस्थान का प्रधान रहा। जेल में गया। अमृतसर, देहली, बम्बई, कलकत्ता आदि कांग्रेसों में सक्रिय भाग लिया। सन १९२१ से १९२२ तक जेल में ६ मास रहा। वकालत छोड़ी। आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी का वर्षों तक सभासद् रहा।"

जानेवाले सभी प्रयत्नों को बड़ी सतर्कतापूर्वक देखते थे। १८८८ ई. में प्रयाग में नेशनल कांग्रेस का चतुर्थ अधिवेशन हुआ जिसकी स्वागतकारिणी सभा के अध्यक्ष पं० हृदयनाथ कुञ्जरु के पिता पं० अयोध्यानाथजी थे। इस अधिवेशन में अजमेर नगर कांग्रेस की ओर से सर्वश्री रामबिलास शारदा, हरविलास शारदा, रायसाहब, गोपीनाथजी तथा किशनलाल जी प्रतिनिधि बन कर गयेथे। दिसम्बर १८९१ में नागपुर में सम्पन्न हुई सातवीं कांग्रेस में भी वे सम्मिलित हुये तथा सुप्रसिद्ध बंगाली देशभक्त सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के प्रेरणा-प्रद भाषण को सुना[१]। इसी प्रकार बनारस कांग्रेस (१९०५) में सम्मिलित होकर उन्होंने स्वदेशी की प्रेरणा ग्रहण की तथा अजमेर में लौट कर स्वदेशी के प्रचार में जुट गये।

अपने पिता के पद-चिह्नों पर चलते हुये चांदकरणजी ने भी भारत की राष्ट्रीय महासभा की प्रवृत्तियों में प्रारम्भ से ही रुचि लेना प्रारम्भ किया। वे १९११ की इलाहाबाद कांग्रेस में सम्मिलित हुये, जिसकी अध्यक्षता सर विलियम वेडरबर्न ने की थी। इस अवसर पर प्रयाग में बृहत् प्रदर्शनी भी आयोजित की गई थी। १९१४ ई० से चांदकरणजी राष्ट्रीय जीवन की प्रत्येक गतिविधि में रुचिपूर्वक भाग लेने लगे। उन दिनों श्रीमती एनी बेसेन्ट द्वारा संचालित होमरूल लीग की बड़ी चर्चा थी। शारदाजी ने भी अजमेर में होम-रूल लीग वाचनालय स्थापित किया और पूर्ण उत्साह के साथ १९१७ से १९२० तक लीग का कार्य करते रहे। इसी बीच आप इण्डियन एसोसियेशन के मंत्री भी रहे तथा मान्टेग्यू चैम्सफोर्ड सुधार योजना के अन्तर्गत अजमेर मेरवाड़ा को पूर्ण अधिकार दिये जाने के लिये आन्दोलन किया। धीरे-धीरे देश के सार्वजनिक जीवन में सरगर्मी बढ़ रही थी। ज्यों-ज्यों देश-वासियों की राजनैतिक आकांक्षायें बढ़ती गई, सरकार का रुख अधिकाधिक कठोर होता गया परन्तु चांदकरणजी सरकार के कोप अथवा अनुग्रह की कुछ भी चिन्ता किये बिना अपने मार्ग पर अग्रसर होते गये।

## महात्मा गांधी का भारतीय राजनीति में प्रवेश और स्वाधीनता आन्दोलन में नव प्राणोन्मेष--

महात्मा गांधी का देश के सार्वजनिक जीवन में प्रवेश एक युगान्तरकारी घटना थी। महात्माजी ने देश की स्वतंत्रता के लिये की जानेवाली लड़ाई को सच्चे अर्थों में जनता का संघर्ष बनाया। उससे पूर्व कांग्रेस का रूप एक वाद-विवाद क्लब से अधिक भिन्न नहीं था। प्रति वर्ष किसी बड़े नगर में

---

१. सुरेन्द्रनाथ बनर्जी का यह भाषण शेक्सपियर के प्रसिद्ध नाटक हैमलेट के एक स्वगत कथन "To be or not to be that is the question" पर आधारित था।

एकत्रित होकर देश के कुछ वकील बैरिस्टर, बड़े व्यापारी और धनी वर्ग के लोग अंग्रेजी में अपनी भाषण कला का प्रदर्शन करते और बड़े विनम्र भाव से शासकों के समक्ष राजकीय सेवाओं का कुछ हिस्सा भारतीयों को भी देने के लिये प्रणत निवेदन करते। यह था 'आल इण्डिया नैशनल कांग्रेस' का स्वरूप और चरित्र। परन्तु महात्मा गांधी ने अफ्रीका में रह कर अहिंसा, सत्य, असहयोग और सविनय अवज्ञा के जो प्रयोग किये थे, अब वे उन्हें भारत में आजमाना चाहते थे। फलत: उन्होंने कांग्रेस में प्रवेश किया और इस संस्था को वास्तविक अर्थ में जनता की संस्था बनाने के लिये प्रयास आरम्भ किये। महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तुत असहयोग का प्रस्ताव कांग्रेस की पुरानी पीढ़ी के दिग्गज नेताओं के लिये नितान्त महत्त्वहीन एवं बचकाना था। वे इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि इस प्रकार के साधनों के द्वारा उस विशाल साम्राज्य को भयकंपित किया जा सकता है जिसके सम्वन्ध में यह उक्ति प्रसिद्ध है कि सूर्य के अस्त होने पर भी यूनियन जैक संसार के किसी न किसी कोने में फहराता ही रहता है। अस्तु।

महात्मा गांधी के नेतृत्व को कांग्रेस ने सर्वात्मना स्वीकार किया। लाला लाजपतराय, देशबंधु, चित्तरञ्जनदास और महामना मालवीय जी जैसे वरिष्ठ कांग्रेसी नेता भी महात्मा गांधी के सम्मोहक व्यक्तित्व के समक्ष नतमस्तक हुये और कांग्रेस ने असहयोग का पाञ्चजन्य फूंका। महात्माजी का यह सुनिश्चित विश्वास था कि यह असहयोग आन्दोलन की पद्धति पर देशवासी निष्ठापूर्वक अमल करते रहे तो देश को स्वाधीन होने में अधिक देर नहीं लगेगी। महात्मा जी की प्रेरणा से सहस्त्रों विद्यार्थियों ने विदेशी शिक्षण पद्धति से संचालित होनेवाले स्कूल, कालेजों का बहिष्कार किया, वकीलों ने अपने आर्थिक लाभ की कुछ भी परवाह न कर वकालत को लात मारी, विदेशी वस्त्रों की होलियाँ जलाई गई, सरकारी न्यायालयों का बहिष्कार किया गया। ऐसे उत्तेजनापूर्ण वातावरण में चांदकरणजी जैसे स्वदेशभक्त का चुप होकर बैठना असंम्भव था। वे अजमेर मेरवाड़ा के प्रतिनिधि रूप में काँग्रेस के अधिवेशन में बराबर सम्मिलित होते थे। रौलेट एक्ट के पास होने पर जब कांग्रेस ने उसका तीव्र विरोध किया तो जनता का भंयकर रोष अंग्रेजी सरकार के प्रति उमड़ पड़ा। स्थान-स्थान पर हड़तालें और गिरफ्तारियाँ हुई। शारदाजी की प्रेरणा से अजमेर में भी पूर्ण हड़ताल हुई। १९२० से कलकत्ता में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन लाला लाजपतराय की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें असहयोग के महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम को स्वीकार कर लिया गया। चांदककरणजी ने भी कांग्रेस के एक अनुशासित कार्यकर्ता की भांति अपनी हजारों की आयवाली वकालत छोड़ दी और असहयोग आन्दोलन में पूर्णशक्ति के साथ कूद पड़े।

सरकार का क्रुद्ध होना स्वाभाविक ही था। आपके भाषणों को राजद्रोहात्मक करार दिया गया जिसके कारण आपको ६ मास का कठोर कारावास दण्ड मिला। यहां यह ध्यान देने की बात है कि महात्मा गांधी ने असहयोग के इस राजनैतिक आन्दोलन में मुसलमानों का सक्रिय सहयोग प्राप्त करने के लिये खिलाफत का समर्थन किया था। तुर्की में खिलाफत की रक्षा के लिये भारतीय मुसलमान प्राणपण से कटिबद्ध थे और उनका अंग्रेजों के प्रति क्रोध भड़क उठा था। मुसलमानों की इसी धार्मिक भावना का लाभ उठाने के लिये कांग्रेस ने खिलाफत कमेटियों के पूर्ण सहयोग और सहायता दी। उस समय अनेक कांग्रेसी नेता खिलाफ़त कमेटियों के अधिकारी बने थे, शारदाजी ने भी खिलाफत के समर्थन में कार्य किया और फतवे बाँटे। उनकी गिरफ्तारी का एक कारण यह भी था।

शारदाजी का शुभ विवाह आर्यसमाज के प्रसिद्ध नेता आर्यन फिलोसोफर श्री आत्मारामजी दूदानी की पुत्री सुखदादेवी के साथ तत्कालीन रुढ़ियों तथा पर्दा प्रथा तोड़कर बड़ौदा में १९७४ विक्रमी संवत आषाढ़ शुक्ला पंचमी सन् १९१७ की २७ जून को सम्पन्न हुआ। शारदाजी की वरयात्रा हाथी पर निकाली गई।

शारदाजी को पत्नी भी योग्य, रूपवती, गुणवती तथा सुशिक्षिता मिली। वे 'यथानाम तथा गुण:' का साक्षात् स्वरूप थीं। उन्होंने शारदाजी की सच्ची जीवन संगिनी के रूप में सब कार्यों में पूर्ण सहयोग दिया। पर्दा प्रथा को तोड़कर अजमेर में आनेवाली वे प्रथम माहेश्वरी नववधू थीं। किन्तु उन्होंने अपने शील, लज्जा माधुर्य तथा सुसंस्कारों से सबका दिल मोह लिया। उन्होंने स्त्री आर्यसमाज, लेडीज क्लब, वीमेन लीग, सावित्री कन्या पाठशाला आदि संस्थाओं की स्थापना तथा विकास में पूर्ण सहयोग प्रदान किया तथा मंत्री आदि पदों को सुशोभित किया। सुखदादेवी यावज्जीवन शारदाजी के कार्यों में सच्चे मित्र की भाँति सहयोग देती रहीं तथा बड़ी से बड़ी आपत्ति में भी अडिग रहीं। यद्यपि जीवन के ३४ वें वसंत में अकाल में ही कराल काल ने उन्हें छीन लिया किन्तु उनकी यश:काया चिरकाल तक भारत की नारी जाति के लिये प्रकाश दीपशिखा की तरह पावन प्रेरणा प्रदान करती रहेगी।

शारदा जी की पत्नी श्रीमती सुखदादेवी भी अपने वीरपति की सच्ची अनुगामिनी थीं। विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार तथा विदेशी वस्त्रों की होली जलाने में उन्हें किञ्चित् मात्र भी संकोच नहीं हुआ। जब शारदा जी ने असहयोग के फलस्वरूप कृष्णमंदिर की ओर प्रयाण किया तो सुखदादेवी ने सच्ची सहधर्मिणी के रूप में उन्हें विदा किया और स्वंय ने स्त्री स्वंयसेवकों को संगठित कर शराब की दूकानों के आगे पिकेटिंग किया। इस अवसर पर

उन्होंने महिला स्वयंसेवकों के समक्ष एक प्रभावशाली भाषण देते हुये उन्हें देश के प्रति कर्त्तव्यारूढ़ होने की प्रेरणा दी। जिस समय शारदाजी कारावास का दण्ड भोग ही रहे थे कि उनकी बड़ी पुत्री श्रीमती विद्यावती देवी के विवाह का प्रसंग उत्पन्न हुआ। सरकार ने उन्हें पैरोल पर छोड़ने का प्रस्ताव किया, किन्तु स्वाभिमानी शारदाजी को विदेशी सरकार की यह शर्त किसी भी रूप में स्वीकार नहीं हुई। फलतः उनकी अनुपस्थिति में वैवाहिक कार्य सम्पन्न हुआ। श्रीमती विद्यावती देवी राठी का शुभविवाह प्रसिद्ध क्रांतिकारी देशभक्त उद्योगपति सेठ दामोदरदास जी राठी के पुत्र श्री विट्ठलदास जी राठी के साथ सम्पन्न हुआ।

१ अगस्त १९२० को लोकमान्य तिलक का निधन हो गया। तिलक के परलोकगमन के साथ ही भारत के राजनैतिक क्षितिज का एक भासमान नक्षत्र विलीन हुआ और महात्मा गांधी के रूप में प्रचण्ड मार्तण्ड का उदय हुआ। शारदा जी १९२१ में अहमदाबाद कांग्रेस अधिवेशन में सम्मिलित हुये तथा तिलक स्वराज्य फण्ड हेतु पर्याप्त धनराशि एकत्र की। शारदाजी ने देश के आह्वान पर असहयोग को सच्चे मन से स्वीकार किया था। १९२०, २१, २२ में उनकी राजनैतिक सरगर्मियाँ अपने सर्वोच्च शिखर पर थीं। उन्होंने अपनी बी. ए. और एल.एल. बी की डिग्रियाँ यह कर विश्वविद्यालय को लौटा दीं कि इन गुलामी के चिह्नों को अपने नाम के साथ जोड़े रखना वे राष्ट्रीय स्वाभिमान के प्रतिकूल समझते हैं। डिग्रियाँ लौटाते समय जो पत्र शारदाजी ने विश्वविद्यालय के अधिकारियों को लिखा उसकी प्रतिलिपि पं. मोतीलाल नेहरु के संरक्षण में प्रकाशित होने वाले दैनिक अंग्रेजी-पत्र 'दि इण्डिपेन्डेण्ट' के मुख पृष्ठ पर प्रकाशित हुई।

१९२० में लोकमान्य तिलक; खापर्डे तथा विट्ठलभाई पटेल जैसे लोक पूज्य नेताओं को आपने अजमेर में आमंत्रित किया तथा उनका शानदार जुलूस निकाला। वे जलियाँ वाला बाग हत्याकाण्ड के बाद हुई अमृतसर कांग्रेस में भी सम्मिलित हुये थे। उन दिनों शारदा जी के आमंत्रण पर देश के प्रायः सभी वरिष्ठ नेता अजमेर आये। महात्मा गांधी, पं. मोतीलाल नेहरू, भारत कोकिला श्रीमती सरोजिनी नायडू, डा. अंसारी, मौलाना मुहम्मदअली, बैरिस्टर आसफ अली, प्रो. इन्द्र विद्यावाचस्पति, श्री देशबंधु गुप्त आदि कांग्रेस के सभी मूर्धन्य नेता समय-समय पर अजमेर आकर शारदाजी की प्रेरणा से यहाँ के जनमानस को राष्ट्रीय भावनाओं से उद्वेलित करते। इसी समय वे राजपूताना कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भी रहे।

□□

# देशी राज्यों मे राजनैतिक चेतना के सूत्रधार

अंग्रेजों ने अपनी कूटनीति के वल पर भारत को ब्रिटिश साम्राज्य का अंग तो बनाया, परन्तु जो देशी राजा और नवाब मुगल साम्राज्य के अन्तर्गत अपने स्वतन्त्र राज्यों के स्वामी बने हुये थे, उन्हें यथावत् रहने दिया। परिणाम यह निकला कि इन देशी शासकों की ब्रिटिश हकूमत से स्वतन्त्र सन्धियाँ हुईं। ब्रिटिश शासन ने उनको आश्वासन दिया कि वे अपने राज्यों के भीतरी शासन में पूर्ण स्वाधीन रहेंगे किन्तु विदेशी मामलों, सुरक्षा, संचार व्यवस्था तथा मुद्राविषयक सारे प्रश्न ब्रिटिश अधिकार की वस्तु रहेंगी। इन तथाकथित देशी राज्यों पर ब्रिटिश अंकुश को और कड़ा रखने के लिये प्रत्येक रियासत अथवा रियासत समूह पर एक अंग्रेज रेजिडेन्ट की नियुक्ति होती थी जो वायसराय के समक्ष रियासतों के पेचीदा मामलों को उपस्थित करता तथा राजाओं को ब्रिटिश नीति के अनुसार आदेश-निर्देश देता। इस प्रकार ये स्वदेशी राजा एक ओर तो ब्रिटिश शासन से पूर्ण निर्लिप्त रह कर अपनी प्रजा पर निरंकुश ढंग से दमन चक्र चलाते, राज्य के राजस्व तथा अन्य मदों की आय को अपने विलासपूर्ण जीवनयापन में लगाते, दूसरी ओर ब्रिटिश सिंह के समक्ष भीगी बिल्ली बन कर उसके सभी उचित-अनुचित आदेशों को प्रभुसम्मित मान कर पालते। देशी राज्यों की जनता मध्यकाल का सामन्त-युगीन जीवन व्यतीत कर रही थी। उसे न तो अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता थी और न वह अपने जीवनयापन को सुकर बनाने के लिये किसी प्रगतिशील जीवनपद्धति को ही अपना सकती थी। अज्ञान, अशिक्षा, अन्धविश्वास, मूढ़ता आदि दुर्गुणों का बोलबाला था। राजा चापलूस दरबारियों से घिरे रहते, नौकरशाही के द्वारा प्रजा का दमन एक सामान्य बात थी। न तो सभा संस्थाओं की स्थापना की आज्ञा ही दी जाती और न समाचारपत्रों का प्रकाशन ही हो पाता। जो व्यक्ति तनिक सिर ऊंचा उठाने की चेष्टा करता अथवा जनता के अधिकारों की रक्षा के लिये संघर्ष का मार्ग अपनाता, उसे विविध प्रकार के कष्ट उठाने पड़ते। देशनिष्कासन तो एक साधारण बात थी, अन्यथा जन्म भर कारावास की कालकोठरी में ही उसे अपना जीवन समाप्त कर देना पड़ता।

आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द ने भी देशी राज्यों की समस्याओं को अपने दृष्टिकोण से समझने का यत्न किया था। वे राजाओं का हृदय

परिवर्तन करने के पक्षपाती थे। उनकी धारणा थी कि यदि शासक वर्ग को सुधार के मार्ग पर डाल दिया जाय तो जनता का बहुविध उत्थान असम्भव नहीं है। इसी दृष्टिकोण को अपने सम्मुख रख कर स्वामीजी ने राजस्थान को अपना कार्यक्षेत्र चुना था। वे एक ओर जहाँ राजाओं को चरित्रवान् बनने, दुर्व्यसनों को त्यागने, प्रजापालन को अपना प्राथमिक कर्त्तव्य समझने तथा शासनतन्त्र को सुधारने का उपदेश देते वहां वे प्रजा को भी निर्भीक बनने, अज्ञान एवं अविद्या को तिलाञ्जलि देकर जागरूक होने की प्रेरणा देते। काश! महर्षि कुछ अधिक समय तक राजस्थान में कार्य करने का अवसर पा जाते, तो निश्चय ही यहां के जन-जीवन में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन होता।

परन्तु स्वामीजी के निधन के पश्चात् भी राजस्थान में आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने अपने आचार्यप्रवर के संदेश को प्रसारित करने में कुछ कसर नहीं उठा रक्खी। शिक्षाप्रचार, अछूतोद्धार, स्त्रीशिक्षा, पर्दा आदि कुप्रथाओं का उन्मूलन, अनाथ-विधवा-संरक्षण आदि के सामाजिक कार्यक्रमों के द्वारा वे जनता को शक्तिशाली तथा संगठित बना कर उसे राजनैतिक अधिकारों के हेतु अपने संघर्ष प्रारम्भ करने के लिये अधिकाधिक साधन-सम्पन्न बनाना चाहते थे। उनकी धारणा थी कि ज्यों ही जनता जागृत हुई, वह अपने अधिकारों की रक्षा के लिये प्राणपण से जुट जायगी और वह तब तक दम नहीं लेगी जब तक उसके लक्ष्यों की पूर्ति नहीं हो जाती। ऐसी बात नहीं कि देशी राज्यों के सभी शासक एक से ही स्वेच्छाचारी, क्रूर, प्रजापीड़क तथा प्रतिक्रियागामी थे। उनमें भी कई पुरुष स्वाभिमानी, प्रजा के प्रति सुहृत् भाव रखनेवाले, प्रगतिशील विचारयुक्त तथा सुधारप्रिय थे। उदयपुर के महाराणा सज्जनसिंह ने स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं को जिस अनुकूल भावना से ग्रहण किया था, तथा वे महर्षि के चरणों में बैठ कर मनु, शुक्र और अन्य ऋषियों द्वारा प्रणीत राजनीति शास्त्रों का जिस प्रकार अध्ययन कर रहे थे, उससे सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि यदि वे दीर्घ-जीवी होते तो निश्चय ही उनकी प्रगतिशील नीतियों का सुफल उदयपुर राज्य की जनता को प्राप्त होता। इसी प्रकार जोबनेर के रावल कर्णसिंह ने अपनी छात्रावस्था में ही स्वामीजी की शिक्षाओं से प्रेरणा लेकर अपने राज्य में कतिपय सुधार कार्यों का प्रारम्भ किया था। डी. ए. वी. स्कूल की स्थापना, आर्यसमाज के उपदेशकों को यदा-कदा आमन्त्रित कर प्रजा में नवीन भावनाओं का संचार करने तथा क्षत्रिय जाति को मदिरापान, विलासवासना तथा अन्य दुर्व्यसनों के उन्मूलन के लिये तत्पर करने हेतु उनके प्रयत्न उल्लेखनीय हैं।

परन्तु ये बातें सभी शासकों के सम्बन्ध में नहीं कही जा सकतीं। धीरे-धीरे देश में जब राजनैतिक चेतना का वातावरण सघन होने लगा तो देशी

राज्यों में भी नव जागृति के लिये चेष्टा होनी आरम्भ हुई। यह लिखने में हमें कोई संकोच नहीं है कि राजस्थान की प्रजा में राजनैतिक स्वाधीनता के भावों को भरने में देशभक्त चाँदकरण शारदा का स्थान अग्रगण्य है। वे राजस्थान के प्रजाहितैषी नेताओं में मूर्धन्य हैं, जिन्होंने सर्वप्रथम देशी राज्यों की जनता के अधिकारों का शंख फूंका तथा नाना प्रकार से शोषित, पीड़ित तथा त्रस्त करोड़ों लोगों के आँसू पोछने का प्रयत्न किया। यह सत्य है कि देश की स्वाधीनता के पश्चात् जब राजा गए निःसत्व हो गये और भारत की अन्य जनता की ही भाँति देशी रियासतों के प्रजागए भी लोकतन्त्रात्मक शासन प्रणाली के भागीदार बने तो उन देशसेवकों को सहज ही भुला दिया गया, जिनके अशेष त्याग, बलिदान तथा सेवाभाव के कारए ही देश ने स्वतन्त्रता का स्वर्ण-विहान देखा था। अब सत्ता प्राप्ति की होड़ में अवसरवादियों की वन आई और चाँदकरए शारदा जैसे स्वतन्त्रता के ज्योतिर्धर महापुरुषों का त्याग और बलिदान भी इतिहास में उल्लेख की वस्तु तो रह गया, परन्तु उनके ज्ञान और अनुभव का लाभ उठाने का प्रयास नहीं हुआ।

सर्वप्रथम २८ दिसम्बर १९१८ को प्रताप के सम्पादक तथा देशी राज्यों के सच्चे शुभचिन्तक पं. गणेशशंकर विद्यार्थी, श्री विजयसिंह पथिक तथा सेठ जमनालाल बजाज के सहयोग से दिल्ली के चाँदनी चौक स्थित मारवाड़ी पुस्तकालय में शारदा जी ने राजपुताना मध्यभारत सभा की स्थापना की। इसका लक्ष्य था राजस्थान और मध्य भारत की देशी रियासतों की प्रजा में अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों की भावना जागृत करना, तथा उनके न्यायोचित संघर्ष में सहायता पहुँचाना। देशी राज्यों की प्रजा की राजनैतिक आकांक्षाओं की पूर्ति करनेवाली यह प्रथम संस्था थी।

राजपुताना मध्यभारत सभा का द्वितीय अधिवेशन ३१ दिसम्बर १९१९ को अमृतसर के कटरा अहलूवालिया नामक स्थान पर हुआ। इसमें शारदा जी ने देशी रियासतों को उत्तरदायी शासन देने के सम्बन्ध में प्रस्ताव उपस्थित किया। सभा का कार्यालय अजमेर में रखने का निश्चय हुआ।

तृतीय अधिवेशन २८ मार्च १९२० को अजमेर में ही आयोजित किया गया। इस अधिवेशन में देशी राज्यों में राजनैतिक तथा सामाजिक सुधार विषयक अनेक प्रस्ताव स्वीकृत हुये। मेवाड़ राज्य के विजौलिया ठिकाने में किसानों को जो कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था, उसके सम्बन्ध में शारदाजी ने प्रस्ताव स्वीकार करवाया। आगे चल कर श्री विजयसिंह पथिक के नेतृत्व में विजौलिया के किसानों को सत्याग्रह करना पड़ा, जिसमें उनकी विजय हुई।

राजपुताना मध्य भारत सभा के उद्देश्य थे—(१) देशी राज्यों में उत्तरदायी शासन की स्थापना तथा (२) देशी राज्यों की प्रजा के कष्टों का

निवारण करते हुये उसको उन्नत बनाना। १९३१ तक शारदाजी ने सभा के महामन्त्री के पद पर कार्य किया। तत्पश्चात् उन्हें अध्यक्ष बनाया गया।

देशी राज्यों में उत्तरदायी शासन की स्थापना राजपुताना मध्यभारत सभा का प्रमुख लक्ष्य था। इस ध्येय की पूर्ति के लिये जनजागरण तथा राजनीतिक चेतना को उद्दीप्त करना आवश्यक था। शारदाजी ने एतद् विषयक महत्त्वपूर्ण प्रयत्न किये, जिसके फलस्वरूप विभिन्न राज्यों में लोकपरिषदें तथा प्रजा-मण्डलों की स्थापना हुई, राजाओं ने प्रजा के प्रतिनिधियों द्वारा निर्वाचित विधायिकाओं की स्थापना करना आवश्यक समझा और अन्ततः रियासतों की जनता को पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त हुई।

राजपुताना मध्य भारत देशी राज्य प्रजा परिषद् का १९३६ में वार्षिक अधिवेशन पुष्कर में हुआ तो शारदा जी उसके स्वागताध्यक्ष निर्वाचित हुये। उस अधिवेशन की अध्यक्षता राजस्थान के एक अन्य जनसेवक श्री कन्हैयालाल कलयन्त्री ने की थी। २७ नवम्बर को स्वागताध्यक्ष के रूप में अपना भाषण देते हुये चांदकरण जी ने राजस्थान के प्राचीन गौरव और वर्तमान परिस्थितियों का भावपूर्ण शब्दों में दिग्दर्शन कराते हुये राजस्थान और मध्य-भारत की वर्तमान राजनैतिक दशा का उल्लेख किया। जिन रियासतों में शासन सुधार तथा लोकहित के कार्य हुये उनका सिंहावलोकन करते हुये उन्होंने पुरजोर शब्दों में रियासती जनता की मांगों को प्रस्तुत किया। किसानों से लगान कम लेने, बेगार तथा लाग बाग जैसी अत्याचार पूर्ण प्रथाओं को समाप्त करने, प्रजा को भाषण और लेखन की पूर्ण स्वतन्त्रता देने तथा प्रतिनिधि शासन व्यवस्था स्थापित करने पर उन्होंने अपने भाषण में विशेष जोर दिया।

## अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद्

अब तक देशी रियासतों का राजनैतिक आन्दोलन कांग्रेस का पिछलग्गू बना हुआ था। रियासती नेताओं में सम्भवतः उतना आत्मबल नहीं था कि वे स्वयं अपनी आवाज बुलन्द करते। उन्हें अपनी प्रत्येक मांग के लिये कांग्रेस के अखिल भारतीय स्तर के नेताओं का मुखापेक्षी होना पड़ता था। यद्यपि कांग्रेस ने भी रियासती जनता के अभावों और अभियोगों के प्रति अपनी चिन्ता सदा व्यक्त की थी तथा उसकी आशाओं और आकांक्षाओं की पूर्ति के लिये उसने अपने विधान में भी संशोधन किया। अब केवल ब्रिटिश भारत ही नहीं, किन्तु रियासती क्षेत्रफल से संयुक्त सम्पूर्ण भारत के लिये आजादी प्राप्त करना कांग्रेस का लक्ष्य स्थिर हुआ। १९२० में नागपुर कांग्रेस के समय अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद् की स्थापना हुई। देशी राज्यों में उत्तरदायी शासन की स्थापना इस संस्था का मुख्य लक्ष्य था। पं. जवाहरलाल

नेहरू जैसे वरिष्ठ नेता का इस संस्था पर सदा ही वरद हस्त रहा। शारदाजी वर्षों तक परिषद् के महामन्त्री रहे। जब जोधपुर (मारवाड़) रियासत में राजनैतिक गतिविधियों के संचालनार्थ मारवाड़ प्रजा परिषद् की स्थापना हुई तो शारदा जी को उसका अध्यक्ष बनाया गया। राजस्थान के लोकनायक तथा मारवाड़ के अद्वितीय नेता स्व. जयनारायण व्यास इसके मन्त्री थे।

देशी राज्यों की स्वाधीनता के लिये कार्य करते समय शारदाजी का देश के सभी वरिष्ठ नेताओं से सम्पर्क होता रहता था। अजमेर में जो भी नेता आता, वह शारदाजी का ही अतिथि बनता। शारदाभवन की दीवारें न जाने कितने लोकपूज्य नेताओं, महात्माओं तथा महापुरुषों के आतिथ्य-सत्कार की साक्षिणी हैं। १९२४ में राजपुताना मध्यभारत सभा के वार्षिक अधिवेशन की अध्यक्षता करने के लिये पं० मोतीलाल नेहरू अजमेर आये। शारदाभवन में उनके निवास की व्यवस्था की गई। अचानक जब उन्हें शौच जाने की इच्छा हुई तो अंग्रेजी तौर-तरीके के कमोड का प्रयोग करने वाले पं० मोतीलालजी की कठिनाई की आप कल्पना करें, जिन्हें उस देशी हवेली में परम्परागत शौचालय का प्रयोग करने के लिये कहा गया। परन्तु आतिथ्यकर्ता शारदाजी ने पण्डित जी की कठिनाई समझ ली। अविलम्ब एक लकड़ी का स्टैण्ड बनवाया गया और उसके नीचे राजस्थान में आपद-विपद में शौच के लिये प्रयुक्त किया जानेवाला पीतल का पात्र 'पाला' रख दिया गया। पं० मोतीलाल जी की कमोडवाली समस्या इस प्रकार हल हो गई।

□□

## महर्षि दयानन्द जन्मशताब्दी मथुरा—

आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द की जन्मशताब्दी का उत्सव फरवरी १९२५ में मथुरा में विशेष समारोहपूर्वक मनाया गया। सार्वदेशिक सभा के तत्त्वावधान में आयोजित इस महामेले की व्यवस्था महात्मा नारायण स्वामी जी जैसे कार्यकुशल नेता को सौंपी गई थी। महोत्सव की सम्पूर्ण जिम्मेदारी शताब्दी सभा ने उठाई जिसमें सार्वदेशिक सभा तथा परोपकारिणी सभा के सभी सभासद् सदस्य रूप में थे। चांदकरण जी भी शताब्दी सभा के सदस्य थे। उन्होंने जन्मशताब्दी के सभी कार्यक्रमों में उत्साहपूर्वक भाग लिया। १५ फरवरी महोत्सव का प्रथम दिन था। इसी दिन के मुख्य समारोह में चांदकरणजी का प्रभावशाली भाषण 'महर्षि दयानन्द का संदेश' विषय पर हुआ। १९ फरवरी को आर्यस्वराज्यसम्मेलन का विशेष अधिवेशन स्वामी श्रद्धानन्द जी की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ किन्तु अन्यत्र व्यस्त होने के कारण स्वामी जी सम्मेलन की अध्यक्षता का भार चाँदकरण जी को सौंप कर चले गये। शारदा जी की अध्यक्षता में शेष कार्यवाही सम्पन्न हुई और स्वराज्य सभा के नाम से आर्यों का एक राजनीतिक संगठन बनाने का निश्चय हुआ। शारदा जी ने आर्यकुमार सम्मेलन में भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस प्रकार जन्मशताब्दी महोत्सव आर्यसमाज की भावी पीढ़ी के लिये एक नवजीवन का संदेश छोड़ गया।

## महर्षि दयानन्द निर्वाण अर्द्ध शताब्दी अजमेर :

जन्म शताब्दी के ठीक आठ वर्ष पश्चात् १९३३ में महर्षि के निर्वाण के पचास वर्ष पूरे होने पर निर्वाण अर्द्ध शताब्दी मनाई गई। अजमेर तो चांदकरण जी का मुख्य कार्यक्षेत्र ही था, इसलिये यहां उन पर समारोहों की सफलता का गुरुतर दायित्व उपस्थित हुआ। वे निर्वाण अर्द्ध शताब्दी समिति में साधारण सदस्य तथा उसकी कार्यकारिणी के सदस्य, मनोनीत किये गये। इसी प्रकार धनसंग्रह उपसमिति, आन्दोलन उपसमिति, स्वयंसेवकदल उपसमिति, कार्यकर्तृ उपसमिति, व्यायामादि सम्मेलन उपसमिति के सदस्य रूप में भी उन्हें कार्य करना पड़ा। आन्दोलन उपसमिति के तो वे संयोजक ही थे, इसलिये प्रचार और जनसम्पर्क का सम्पूर्ण तन्त्र ही उनके जिम्मे था। इस समारोह के अवसर पर दि. १८ अक्टूबर १९३३ को आयोजित प्रवासी-सम्मेलन की अध्यक्षता चांदकरण जी ने की। उन्होंने अस्पृश्यता-निवारण

श्री चांदकरणजी शारदा अपने पिता व भाइयों के साथ

बैठे हुए बाएं से : श्री चांदकरणजी शारदा, भाई श्री सूरजकरणजी शारदा, पिताजी श्री रामबिलासजी शारदा, भाई श्री अमरचन्दजी शारदा, अनुज डॉ॰ मानकरणजी शारदा। पीछे खड़े हुए : अनुज श्री विजयकरणजी शारदा, तथा आया की गोद में पुत्र श्री श्रीकरणजी शारदा

## आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के अधिवेशन के अवसर पर

बैठे हुए बाएं से : श्री हरविलासजी शारदा, श्री रामविलासजी शारदा. पीछे की लाइन में : श्री चांदकरणजी शारदा व श्री सूरजकरणजी शारदा. पीछे की लाइन में पगड़ी बांधे हुए श्री पं. जियालालजी खड़े हैं.

श्री चांदकरणजी शारदा के विवाह के पश्चात्

दाएं से बाएं : श्री चाँदकरणजी शारदा, धर्मपत्नी श्रीमती सुखदादेवी, श्वसुर राजरत्न पं० आत्मारामजी अमृतसरी, सास श्रीमती यशोदादेवी दूदानी.

## श्री चांदकरणजी शारदा अपने परिवार के साथ : सन् १९३२

कुर्सी पर बैठे हुए श्री चांदकरण जी शारदा, धर्मपत्नी सुखदादेवी जी, पीछे खड़े हुए पुत्र श्रीकरणजी दांई ओर बैठी हुई पुत्री सुमित्रा, बैठे हुए बाएं से : पुत्री लीला, पुत्र रमेश, पुत्री सरला व पुत्र वीरेन्द्रजी.
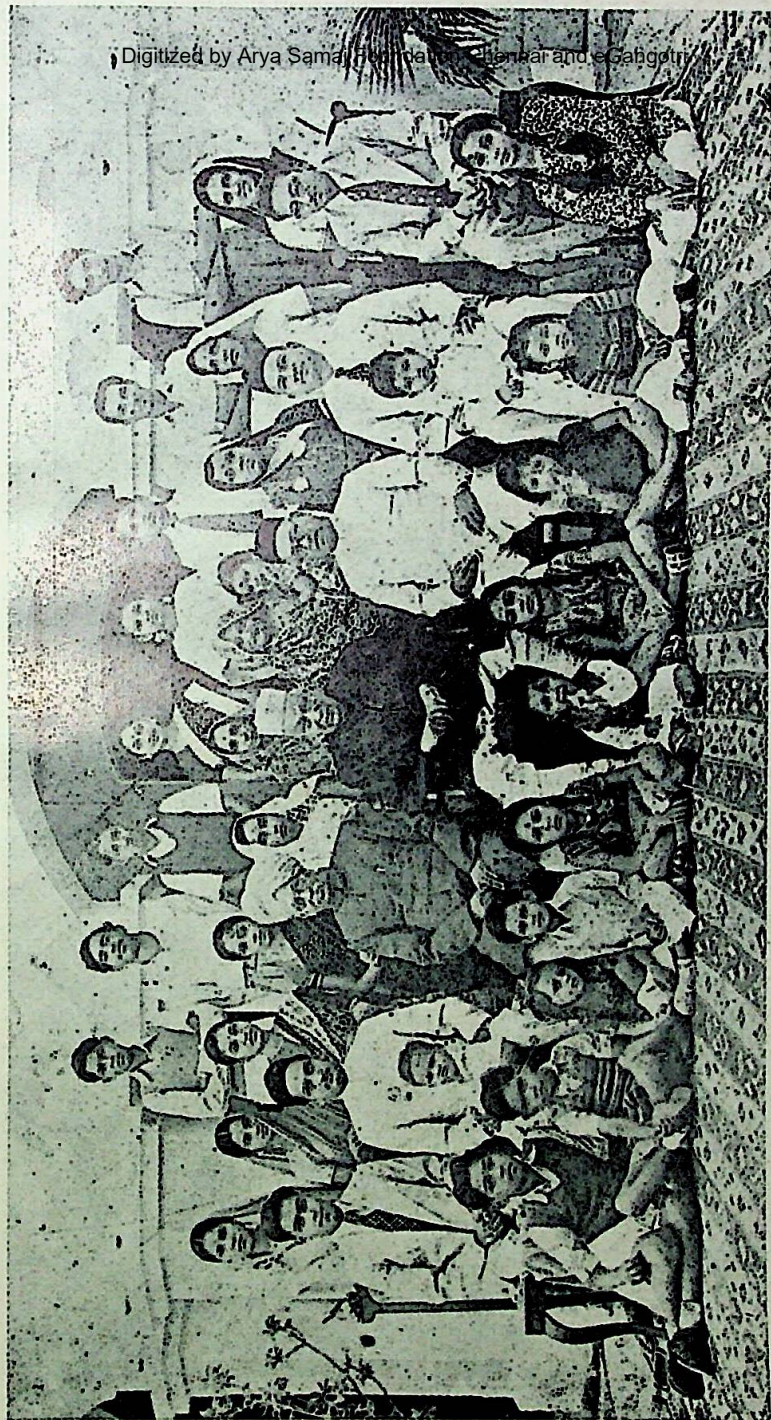
श्री चांदकरणजी शारदा परिवार के साथ. बीच में दीवान बहादुर हरबिलासजी शारदा बैठे हैं.

श्री चाँदकरणजी शारदा अपनी सबसे छोटी पुत्री सुधाजी के विवाह के अवसर पर अपने परिवार के साथ

अ. भा. हिन्दू महासभा के अध्यक्ष : वीर सावरकर सन् १९३८ में अजमेर में
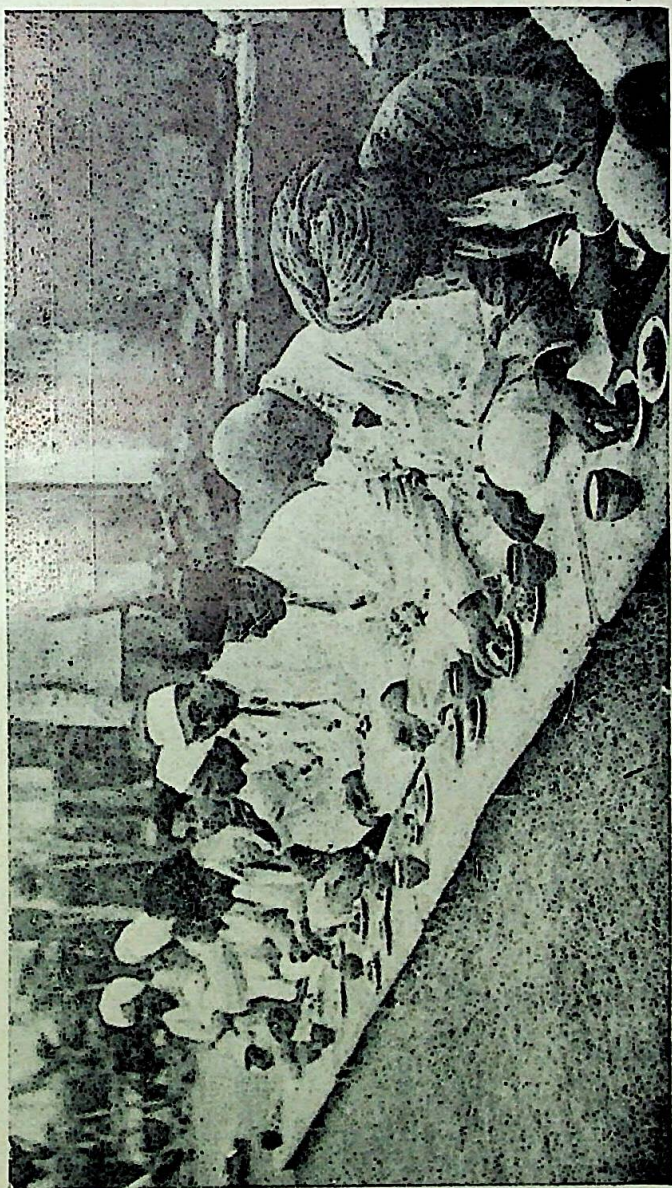
बैठं हुए : दाएं से दीवानबहादुर हरबिलासजी शारदा, बैरिस्टर सावरकर, चांदकरणजी शारदा, दुर्गाप्रसादजी, मन्त्री हि. म. सभा, मास्टर कन्हैयालालजी व बाबू खुशीरामजी.

दयानन्द विद्यालय प्रबन्धकारिणी सभा के सदस्यों के साथ : वाएं से दाएं : बैठे हुए : श्री श्यामसुन्दरजी गुप्त, श्री केशवदेवजी कपूरिया (उपप्रधान), श्री चाँदकरणजी शारदा (प्रधान), श्री भगवानस्वरूपजी न्यायभूषण (मंत्री), श्री मोतीसिंहजी कोठारी (उपमंत्री)। खड़े हुए—श्री बाबूप्रसादजी जिज्ञासु, श्री कर्मचन्दजी गुप्त (उपमंत्री), श्री रामस्वरूप जी,

## डॉ. श्यामप्रसादजी मुखर्जी द्वारा सन् १९५१ में अजमेर में भारतीय जनसंघ की शाखा का उद्घाटन

बैठे हुए : बाएं से तीसरे दयाशंकरजी एडवोकेट, घीसूलालजी एडवोकेट, डॉ. श्यामाप्रसादजी मुखर्जी, राजा कल्याणसिंहजी भिनाय; चांदकरणजी शारदा, राव नारायणसिंहजी मसूदा, मूलचन्दजी ललवाणी एडवोकेट। खड़े हुए : प्रो. मदनसिंहजी, किशनलालजी सांखला जेठानन्द वाधूमल, अमरचन्दजी ईनाणी एडवोकेट, किस्तूरचन्दजी झंवर एडवोकेट, रमेशचन्द्रजी शारदा, बालमुकुन्दजी झंवर एडवोकेट.

सत्यार्थप्रकाश पर सिंध में पाबंदी लगाई गई, तब सत्याग्रह के समय का चित्र

पं. धुरेन्द्रजी शास्त्री, खुशालचन्दजी खुरसंद (म. आनन्द स्वामी), म. नारायण स्वामी जी, घनश्यामसिंहजी गुप्त, श्री चांदकरणजी शारदा व अन्य
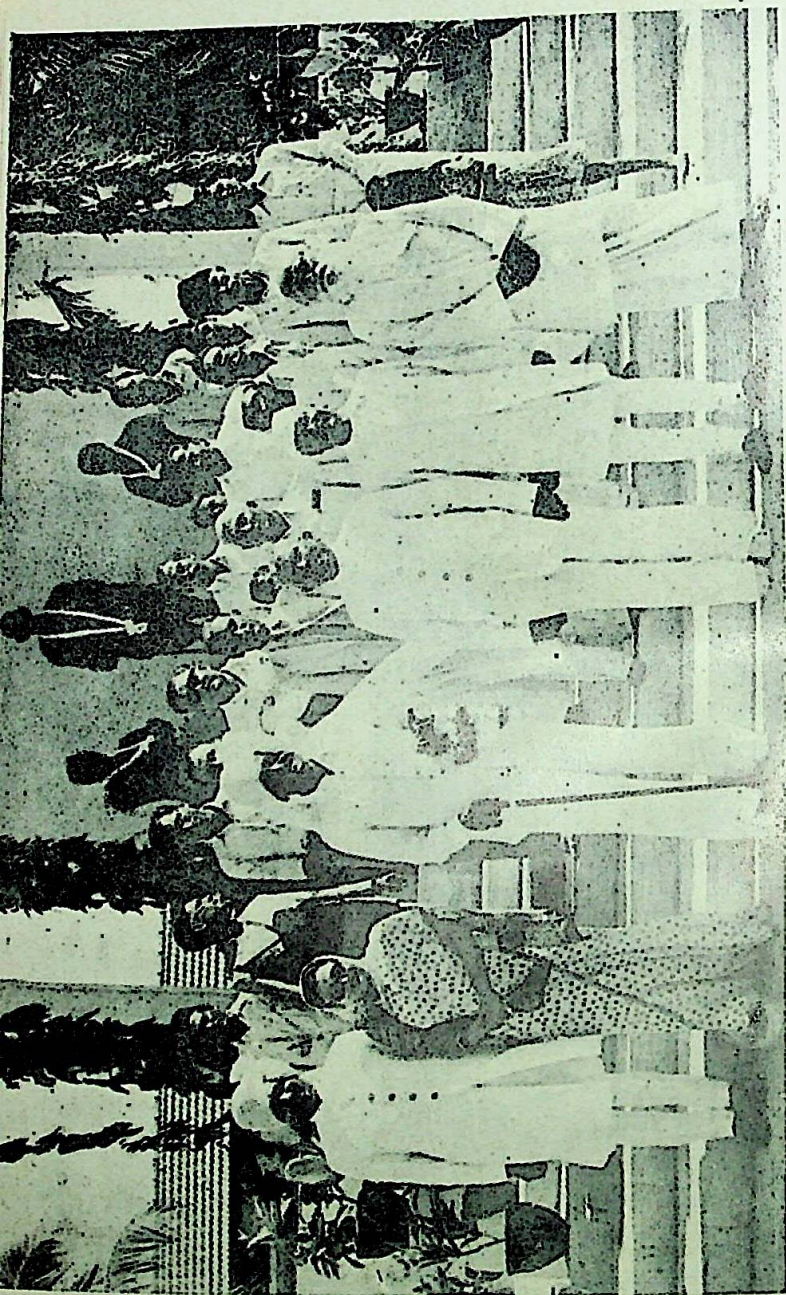
चांदकरणजी शारदा, सेठ नानजी कालीदासजी मेहता और पोरबन्दर के तत्कालीन महाराणा नटवरसिंहजी, उनके महाराजकुमार व राजकुमारी खड़े हुए हैं। सेठ नानजी भाई द्वारा पोरबन्दर में महात्मा गांधी, सरदार पटेल व जवाहरलाल नेहरू की मूर्तियों के उद्घाटन के अवसर पर लिया गया चित्र.

सम्मेलन में भाषण दिया तथा विधवा-विवाह-सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष के रूप में अपना प्रारम्भिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। इस प्रकार अजमेर के इस ऐतिहासिक समारोह को सफल बनाने में चांदकरण जी का योगदान नितान्त महत्त्वपूर्ण था।

## परोपकारिणी सभा के सभासद् के रूप में—

महर्षि दयानन्द ने अपने दिवंगत होने से पूर्व स्व उद्देश्यों की पूर्ति हेतु परोपकारिणी सभा के रूप में २३ सदस्यों का एक न्यास (ट्रस्ट) स्थापित किया। इस सभा के द्वारा महर्षि द्वारा लिखित ग्रन्थों का मुद्रण एवं प्रकाशन होता है तथा देश-देशान्तरों एवं द्वीप-द्वीपान्तरों में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ विविध योजनाओं को क्रियान्वित किया जाता है। रावसाहब रामविलास शारदा जी के निधन के कारण हुये रिक्त स्थान पर दि. २१ मार्च १९३० को कु. चांदकरण जी शारदा परोपकारिणी सभा के सभासद् निर्वाचित हुये। सभा की विभिन्न प्रवृत्तियों में शारदा जी का पूर्ण सहयोग रहता था। जब १९३३ में परोपकारिणी सभा ने महर्षि दयानन्द की निर्वाण अर्द्धशताब्दी मनाने का निश्चय किया तो शारदाजी इस समारोह में प्रचारमन्त्री बनाये गये। सभासद् बनने के पचात् आप सभा के २८ वार्षिक साधारण अधिवेशनों के सम्मिलित हुये तथा समय-समय पर सभा को उचित मार्गदर्शन देते रहे। शारदा जी के दिवंगत होने पर उनके सुपुत्र श्रीकरण जी शारदा ने अपने पुण्य श्लोक पिता का महत्त्वपूर्ण पुस्तक संग्रह परोपकारिणी सभा के श्रीमद्दयानन्द पुस्तकालय को भेंट कर दिया। इस पुस्तकालय में विभिन्न विषयों की सैकड़ों उत्तमोत्तम पुस्तकों के अतिरिक्त पुराने पत्रपत्रिकाओं की बहुमूल्य संचिकायें विभिन्न सभा-संस्थाओं के कार्य विवरण आदि दुर्लभ सामग्री का संग्रह है। राजस्थान के राजनैतिक एवं सामाजिक विकास के अध्ययन की दृष्टि से यह पुस्तक-संग्रह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

## सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा में शारदा जी—

आर्यसमाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ चांदकरण जी का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा। वे वर्षों तक सभा के साधारण सदस्य तथा कार्यकारिणी के सभासद् भी रहे। सभा के तत्त्वावधान में समय-समय पर जो महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होते, उनमें शारदाजी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहता। सभा द्वारा संचालित हैदराबाद आर्य सत्याग्रह तथा सिन्ध में सत्यार्थप्रकाश की रक्षार्थ किये गये सत्याग्रह में शारदाजी ने सर्वाधिकारी के रूप में भाग लिया। इसी प्रकार इस सभा के तत्त्वावधान में अखिल भारतीय स्तर पर जो महासम्मेलन समय-समय पर आयोजित किये, उनमें भी शारदा जी ने अपना उल्लेखनीय सहयोग प्रदान किया।

नवम्बर १९२७ में महात्मा हंसराज जी की अध्यक्षता में जो प्रथम आर्य महासम्मेलन हुआ, उसमें आर्य रक्षा समिति के गठन का निश्चय किया गया। इस समिति के द्वारा आर्य जाति के धार्मिक तथा सामाजिक अधिकारों की रक्षा की अपेक्षा की गई थी। शारदाजी समिति के सदस्य निर्वाचित हुये। द्वितीय आर्य महासम्मेलन फरवरी १९३१ में बरेली में महात्मा नारायण स्वामीजी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इसके एक प्रस्ताव के अनुसार आर्यसमाजियों की राजनैतिक आकांक्षाओं की पूर्ति हेतु राजार्य सभा की स्थापना का निश्चय हुआ। शारदाजी की तो राजनीति में प्रारम्भ से ही रुचि थी और वे एक ऐसा मञ्च तैयार करना चाहते थे, जिसके द्वारा आर्य राजनीतिक का स्वरूप निश्चित किया जा सके तथा आर्यसंस्कृति की रक्षा हेतु आर्यसमाजियों की राजनीतिक गतिविधियों में तालमेल स्थापित हो! अतः राजार्य सभा के निर्माणविषयक उपसमिति के भी वे सदस्य मनोनीत हुये। तृतीय आर्य महासम्मेलन अक्टूबर १९३३ में प्रो. रामदेव जी की अध्यक्षता में अजमेर में सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में आर्य (हिन्दू) जाति में वीरत्व के भावों को स्फूर्त करने हेतु आर्यवीरदल के निर्माण का निश्चय हुआ। इस कार्य हेतु जो उपसमिति बनाई गई, शारदा जी को उसका सभासद् मनोनीत किया गया। शोलापुर में दिसम्बर १९३८ में लोकनायक माधव श्रीहरिअणे की अध्यक्षता में चतुर्थ सार्वदेशिक आर्य सम्मेलन हुआ। इस समय हैदरावाद रियासत में आर्यसमाज के धार्मिक अधिकारों के हनन का प्रश्न विचाराधीन था। शारदाजी ने इस सम्मेलन में पूर्ण उत्साहपूर्वक भाग लिया। वे सत्याग्रहविषयक प्रस्ताव पर बोले तथा उन्होंने स्पष्ट किया कि आर्यसमाज द्वारा निकट भविष्य में चलाया जानेवाला सत्याग्रह नितान्त असाम्प्रदायिक तथा अराजनीतिक होगा। पञ्चम आर्यसम्मेलन फरवरी १९४४ में भारत की राजधानी दिल्ली में डा. श्यामाप्रसाद मुकर्जी की अध्यक्षता में हुआ। इस समय देश का वायुमण्डल सत्यार्थप्रकाश पर सिंध में लगाये गये प्रतिवन्ध, मुस्लिम लीग द्वारा प्रस्तुत की गई देश विभाजन की मांग आदि की ज्वलन्त समस्याओं के कारण गरम था। इस सम्मेलन में राजार्य सभा के निर्माण का प्रश्न पुनः विचारार्थ आया क्योंकि भारत के राजनैतिक वातावरण में होने वाले दैनन्दिन परिवर्तनों तथा द्वितीय महायुद्ध के निकट भविष्य में समाप्त होने पर संसार के राष्ट्रों के परिवर्तित स्वरूप को देखते हुये आर्यसमाज के दृष्टिकोण का निर्धारण आवश्यक था। फलतः सम्मेलन में स्वीकार किये गये एक प्रस्ताव के अनुसार आर्यसमाज के मूर्धन्य विचारकों की एक समिति गठित की गई। शारदाजी का मनोनयन होना तो अवश्यम्भावी ही था।

देश के स्वतन्त्र होने के पश्चात् की परिवर्तित राजनैतिक और सामाजिक

परिस्थितियों में आर्यसमाज के कार्यक्रम की क्या रूपरेखा हो, यह निश्चय करने के लिये दिसम्बर १९४८ को कलकत्ता में षष्ठ आर्य महासम्मेलन हुआ। शारदाजी पूर्व की भांति इस सम्मेलन में भी सम्मिलित हुये। यद्यपि आर्यसमाज के राजनैतिक महत्वाकाँक्षावाले सदस्यों के मार्गदर्शन हेतु राजार्य सभा के निर्माण की चेष्टा बहुत पहिले से ही चल रही थी परन्तु इसमें अभी तक कृतकार्यता प्राप्त नहीं हो सकी। अतः कलकत्ता सम्मेलन में पुनः एक प्रस्ताव द्वारा आर्यसमाज की राजनैतिक मांगों का स्वरूप निश्चित करने के लिये जो उपसमिति बनी, शारदा जी पूर्व की ही भांति इसके सभासद बनाये गये। शारदाजी के शेष जीवनकाल में १९५१ में मेरठ तथा १९५४ में हैदराबाद में आर्य महासम्मेलन सम्पन्न हुये, परन्तु कतिपय दुर्निवार कारणों से वे इनमें सम्मिलित नहीं हो सके। इस प्रकार हम देखते हैं कि श्री चांदकरण शारदा का आर्यसमाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ पूर्ण सहयोग रहा।

□□

४

# आर्यसमाज के विभिन्न आन्दोलनों और सत्याग्रह कार्यक्रमों में शारदाजी की महत्त्वपूर्ण भूमिका

आर्यसमाज के प्रत्येक कार्यक्रम के प्रति चांदकरण जी में अत्यन्त निष्ठा और विश्वास का भाव रहता था। वे केवल संध्यावदन और हवन करने को ही आर्यसमाजी होने का पर्याप्त प्रमाणपत्र नहीं समझते थे। उनके लिये धर्म आत्मिक श्रद्धा की वस्तु थी, जिसके लिये अन्य कोई विकल्प नहीं होता। अवसर आने पर धार्मिक मन्तव्यों और सिद्धान्तों की रक्षा के लिये यदि सर्वस्व त्याग करना पड़े, यहाँ तक कि प्रियजनों एवं प्राणों का बलिदान भी करना पड़े तो इसमें उन्हें कोई संकोच नहीं होता। उनके जीवन में अनेक ऐसे प्रसंग आये जब उन्होंने धार्मिक संकीर्णता, कट्टरता तथा धार्मिक अत्याचारों का डटकर मुकाबिला ही नहीं किया, विरोधी को ऐसी करारी मात दी कि उसने भी अनुभव किया होगा कि किसी ऐसे-वैसे से उसका पाला नहीं पड़ा है।

आर्यसमाज के लिये जब-जब परीक्षा की घड़ियां उपस्थित हुईं, शारदाजी सदा अग्रिम पंक्ति में रहे। उनकी पहली परीक्षा थी आर्यसमाज मन्दिर की रक्षा के लिये धौलपुर राज्य में सत्याग्रह की स्थिति। धौलपुर नगर में एक नई सड़क निकालने के लिये महाराणा ने अपने मुस्लिम प्रधानमंत्री काजी अज़ीजुद्दीन अहमद के कहने से आर्यसमाज मन्दिर को तुड़वाने की आज्ञा प्रसारित कर दी। उस समय चांदकरणजी आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के उपमंत्री थे। आपको ज्यों ही यह समाचार मिला कि समाज-मन्दिर को धराध्वस्त करने के आदेश राज्य ने दिये हैं, आप तुरन्त धौलपुर पहुंचे और १७ अगस्त १९१८ को सत्याग्रह का उद्घोष किया। यह समाचार आग की भाँति आर्यजगत् में सर्वत्र प्रचरित हो गया। आर्यमुसाफिर विद्यालय के कई छात्र बाबू नाथमलजी के साथ आगरा से धौलपुर पहुंचे। स्वामी श्रद्धा-

नन्दजी महाराज का भी आगमन हुआ। अन्ततः शारदाजी का सत्याग्रह सफल हुआ और महाराणा को समझौता करना पड़ा।

## हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के द्वितीय सर्वाधिकारी के रूप में—

दक्षिण हैदराबाद की मुसलमानी रियासत में हिन्दुओं पर किये जानेवाले अत्याचार अपनी पराकष्ठा पर पहुंच चुके थे। मन्दिरों, व्यायाम-शालाओं तथा अखाड़ों का निर्माण बंद था। ओमध्वज फहराने का निषेध था। नगर-कीर्तन निकालने, धर्म प्रचार करने तथा अन्य धार्मिक सत्संगों का आयोजन करने के लिये भी राज्य से आज्ञा लेनी पड़ती। मंदिरों में शंख, घण्टे और घड़ियाल बजाना बंद हुआ। आर्यसमाजमंदिरों में संध्यावन्दन और अग्निहोत्र पर प्रतिबंध लगा दिया गया। पं० रामचन्द्र देहलवी जैसे विद्वान् एवं प्रगल्भ वक्ता को रियासत में आने की मनाई थी। जहाँ आर्यों को अपना धर्म पालने में इतनी बाधाओं का सामना करना पड़ता था, वहाँ मुसलमानों को अपने मत के प्रचार के लिये राज्यकोष से भरपूर सहायता ही नहीं मिलती, हिन्दुओं पर अत्याचार करने के लिये उन्हें प्रोत्साहित भी किया जाता। ऐसी स्थिति में आर्यसमाज जैसी स्वाभिमानिनी तथा जागरूक संस्था के लिये तथ्यों की अवगणना करना सम्भव नहीं था।

सारे आर्यजगत् में असन्तोष की व्यापक लहर फैल गई। नवम्बर १९३८ में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की स्वर्णजयन्ती हुई तब आर्य सम्मेलन (१७ नवम्बर) में हैदराबाद राज्य में धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिये आर्यसमाज सत्याग्रह करे, यह प्रस्ताव श्री चांदकरण शारदा ने प्रस्तुत किया। आर्य जगत् को सत्याग्रह संग्राम के लिये पूर्णतया सन्नद्ध करने तथा जनमत को जागृत एवं प्रभावित करने के लिये २५, २६, २७ दिसम्बर को महाराष्ट्र के शोलापुर नगर में सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन हुआ। लोकनायक अणे इसके अध्यक्ष थे। आर्यसमाज की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने समस्त आर्य संसार के विचारों को सुनकर शोलापुर सम्मेलन करने का निश्चय किया। शारदाजी भी इस समय शोलापुर सम्मेलन में उपस्थित थे। आपने पुरजोर शब्दों में सत्याग्रह के भावी कार्यक्रम का समर्थन किया।

महात्मा नारायण स्वामीजी को सत्याग्रह का प्रथम सर्वाधिकारी घोषित किया गया था। उनके गिरफ्तार होते ही चांदकरण जी शारदा द्वितीय सर्वाधिकारी नियत किये गये। आपके द्वारा सत्याग्रह की कमान हाथ में लेते ही सम्पूर्ण आर्यजगत् में उत्साह एवं जोश की एक अपूर्व लहर दौड़ गई। हजारों रुपये सत्याग्रह की सहायता के लिये एकत्रित होने लगे तथा सहस्रों

लोगों ने अपने आपको सत्याग्रह करने लिये प्रस्तुत किया। २२ जनवरी १९३९ को जब सम्पूर्ण देश में सत्याग्रह दिवस मनाया गया तो अजमेर में शारदाजी की प्रेरणा से पूर्ण हड़ताल रही तथा वृहद् जुलूस निकला। द्वितीय सर्वाधिकारी के रूप में चांदकरण शारदा ने ५ मार्च को फाल्गुन पूर्णिमा-होली के दिन निजाम के गुलवर्गा नगर में सत्याग्रह किया। अपने ६२ साथियों सहित वे अविलम्ब गिरफ्तार कर लिये गये। १५ मार्च को आपको १३ मास का कठोर कारावास का दण्ड सुनाया गया। आपको करीमनगर जेल में रक्खा गया जो निजाम का काला-पानी कहलाता था। यद्यपि आपको कारावास में नाना प्रकार की यातनायें दी परन्तु एक निर्भीक वीर की भाँति आपने उन्हें सहन किया। अन्ततः सत्याग्रह के समाप्त होने पर विजयी सेनापति के रूप में आप १७ अगस्त १९३९ को करीमनगर जेल से ही मुक्त हुये।

सत्याग्रह इसी शर्त पर समाप्त किया गया था कि निजाम राज्य में लगे हुये सारे धार्मिक प्रतिबंध समाप्त हो जायेंगे। फलतः हैदराबाद में जब आर्य समाज ने विजयोत्सव आयोजित किया तो ओमृध्वज फहराने का सौभाग्य शारदाजी को ही प्राप्त हुआ। हैदराबाद के इस विजयी वीर का अजमेर की जनता ने दिल खोल कर स्वागत किया। समस्त नगर को तोरण द्वारों से सजाया गया। हाथी पर जुलूस निकाला गया। अभूतपूर्व स्वागत हुआ। ऐसा सन्मान अजमेर में अन्य किसी नेता को नहीं मिला है, ब्यावर में भी शानदार स्वागत हुआ। चांदी की फ्रेम में मानपत्र दिया गया वहाँ भी अनेक द्वारों को फूलों से सजाया गया, जनता अपने प्रिय नेता का दर्शन करने हजारों की संख्या में उमड़ पड़ी। जोश और उत्साह की लहर नगर भर में फैल गई।

## सत्यार्थप्रकाश के चौदहवें समुल्लास पर प्रतिबन्ध : सत्याग्रह का नेतृत्व

नवम्बर १९४४ में सिंध की मुस्लिम लीगी सरकार ने ऋषि दयानन्द के अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के चौदहवें समुल्लास पर प्रतिबंध लगा दिया। सर गुलाम हुसैन हिदायतुल्ला उस समय सिंध के मुख्यमंत्री थे। सिंध सरकार की आपत्ति का यद्यपि कोई तर्कसंगत आधार नहीं था, मात्र सामुदायिक विद्वेष के कारण ही उसने एक जगत्प्रसिद्ध धर्मगुरु की विश्वविख्यात कृति के विरुद्ध ऐसा अन्यायपूर्ण आदेश प्रसारित किया था। समस्त देश में इस विद्वेषपूर्ण कार्य की निंदा हुई तथा आर्यसमाज ने अपने प्रिय ग्रन्थ की रक्षा के लिये अपने आपको पूर्णतया सन्नद्ध किया।

सत्यार्थप्रकाश की जब्ती के विरुद्ध आर्यसमाज अपने संग्राम को किस प्रकार संचालित करे, इस पर विचार करने के लिये दिल्ली में आर्य महासम्मेलन का अधिवेशन आमंत्रित किया। इसकी अध्यक्षता प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी ने की। यह निश्चय हुआ कि सिंध में सत्यार्थप्रकाश के प्रतिबंध का प्रतिकार सत्याग्रह से किया जाय। सत्याग्रह का स्वरूप सार्वदेशिक सभा ने ही निश्चित किया। शारदा जी ने पंजाब और सिंध का व्यापक दौरा किया तथा सत्यार्थप्रकाश की रक्षा के लिये जनता में उत्साह का वातावरण बनाया। सहस्रों व्यक्ति सत्याग्रह में जाने के लिये तैयार हुये।

अन्ततः महात्मा नारायण स्वामी पं. धुरेन्द्र शास्त्री, लाला खुशहालचंद स्वामी अभेदानन्द तथा चाँदकरणजी शारदा कराँची पहुंचे तथा उन्होंने ग्रन्थ पर लगे प्रतिबंध के विरोध में सत्यार्थप्रकाश (जिसमें चौदहवाँ समुल्लास भी सम्मिलित था) को अपने समक्ष रख कर व्याख्यान दिये, कथा की तथा उसे वेचा। सरकार का साहस नहीं हुआ कि वह सत्यार्थप्रकाश रखनेवाले इन सत्याग्रहियों के विरुद्ध कोई कार्यवाही करती। अतः यह निष्कर्ष निकला कि सत्याग्रह सफल हुआ है और सिंध सरकार सत्यार्थप्रकाश रखनेवालों को न तो गिरफ्तार करना चाहती है और न उनके विरुद्ध कोई कार्यवाही ही करने का इरादा रखती है। इस प्रकार आर्यसमाज के विजयी नेता सत्यार्थप्रकाश का जयघोष करते हुये लौटे। पंजाब का हिन्दी सत्याग्रह—देश के स्वाधीन होने के पश्चात् भी आर्यसमाज को अनेक कठिन परीक्षाओं में से गुजरना पड़ा। पंजाब में सिक्ख साम्प्रदायिकता का एक घिनौना रूप उस समय प्रकट हुआ जब वहाँ की सरकार ने प्रान्तीय भाषा के मोह में पड़ कर हिन्दी के अबाध प्रयोग पर नाना प्रकार के प्रतिबंध लगा दिये। आर्यसमाज सदा से ही भाषा-स्वातन्त्र्य का समर्थक रहा है। इसके प्रवर्तक ने भारत की राष्ट्रभाषा की समस्या को एक अभूतपूर्व दूरदर्शिता केसाथ हल किया था। स्वयं की मातृभाषा गुजराती होते हुये तथा संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् होने पर भी उन्होंने अपने भाषणों और ग्रन्थों में विचाराभिव्यक्ति के लिये हिन्दी का प्रयोग किया। आर्यसमाज को राष्ट्रभाषा के प्रति यह प्रेम अपने गुरुदेव से एक विरासत के रूप में मिला। आर्यसमाज ने अपने शैशवकाल में ही पंजाब जैसे प्रान्तों में भी हिन्दी का प्रचार एवं प्रसार किया तथा उसे लोकप्रिय बनाने हेतु उल्लेखनीय कार्य किये। यदि पंजाब के तत्कालीन शासकों एवं राजनीतिज्ञों के भाषाविषयक प्रस्तावों को आर्यसमाज बिना किसी ननु नच के स्वीकार कर लेती तो पंजाब में उसकी हिन्दी विषयक उपलब्धियों पर पानी फिर जाता। फिर अपनी मातृभाषा

के रूप में हिन्दी को प्रयुक्त करने का आग्रह करनेवाले आर्यसमाजियों को इस बात के लिये विवश करना कि उनके बच्चों की शिक्षा पंजाबी माध्यम से ही होगी, दुराग्रह की पराकाष्ठा थी। भाषा का विशुद्ध तकनीकी मसला राजनीति के दलदल में फंस कर इस प्रकार विकृत हो गया कि उसका समाधान कराने हेतु आर्यसमाज को एक बार पुनः सत्याग्रह और संघर्ष के पथ पर आरूढ़ होना पड़ा।

जिस समय पंजाब में भाषा स्वातन्त्र्य के लिये लाखों आर्यसमाजी अपनी जान की बाजी लगा रहे थे। उस समय आर्यसमाज का यह वृद्ध केसरी चांदकरण शारदा रोग शय्या पर पड़ा हुआ सत्याग्रहियों को अपना मौन आशीर्वाद भेज रहा था। शारदाजी का शरीर चाहे उस समय जीर्ण-शीर्ण हो गया हो परन्तु उनका मन और मस्तिष्क पूर्ण स्वस्थ थे। फलतः उन्होंने पत्र-पत्रिकाओं में लेख आदि लिख कर सत्याग्रह के पक्ष में वातावरण बनाया। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि वे भी सत्याग्रह कर पंजाब के कारावास के निवासी बनें परन्तु शारीरिक अशक्तता ने उनकी अभिलाषा को पूरा नहीं होने दिया।

□□

# महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा (सौराष्ट्र) को शारदाजी की सेवायें-

१९५१ में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधानत्व से मुक्त होकर शारदाजी ने एक अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य अपने जिम्मे लिया। आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द का जन्म सौराष्ट्र प्रदेश के टंकारा नामक ग्राम में हुआ था। जब १९२५ ई० में महर्षि की जन्मशताब्दी का उत्सव मथुरा में मनाया गया तो स्वामी श्रद्धानन्द आदि आर्यसमाज के तत्कालीन नेताओं का विचार हुआ कि ऋषि की जन्मदायिनी भूमि टंकारा में भी महर्षि के आविर्भाव के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में उल्लेखनीय कार्यक्रम होने चाहियें। तदनुसार शिवरात्रि १९२६ के अवसर पर टंकारा में जन्मशताब्दी उत्सव आयोजित किया गया। इसमें बम्बई प्रदेश आर्यप्रतिनिधि सभा का पूर्ण सहयोग था। काठियावाड़ की अनेक रियासतों के नरेश भी उत्सव में सम्मिलित हुये। कालान्तर में टंकारा में आर्यसमाज की गतिविधियों को बढ़ाने के लिये प्रयत्न हुये। श्री गिरिधर गोविन्दजी मेहता तथा श्रीमती चंचल बहिन पाठक के प्रयत्नों से टंकारा में आर्यसमाज मंदिर का निर्माण हुआ। धीरे-धीरे टंकारा आर्यसमाजियों के आकर्षण का केन्द्र बनता गया।

१५ मई १९५१ को पोरबंदर के प्रसिद्ध आर्य श्रेष्ठी स्व. नानजी भाई कालिदास मेहता ने स्वयं डेढ़ लाख रुपया प्रदान कर महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा का निर्माण किया। उनकी यह योजना थी कि आर्यजगत् भी डेढ़ लाख रुपये की धनराशि एकत्रित करे। इस द्रव्य से टंकारा ग्राम में डेमी नदी के किनारे पर स्थित मोरवी नरेश का सुविस्तृत विशाल राजप्रासाद स्मृति-भवन के रूप में क्रय किया जाये तथा इस महर्षि-महालय में संन्यास आश्रम, उपदेशक विद्यालय, पुस्तकालय, यज्ञशाला आदि विभिन्न प्रवृत्तियों का संचालन हो। इस ट्रस्ट के प्रबन्ध के लिये मेहताजी ने सात ट्रस्टियों का एक बोर्ड नियुक्त किया। इन ट्रस्टियों में प्रथम स्थान श्री चांदकरण शारदा का था। ट्रस्ट की प्रथम बैठक दि. १६ जुलाई १९५१ को हुई, इसमें सेठ नानजी भाई मेहता को प्रधान तथा शारदा जी को उनका मन्त्री चुना गया।

ट्रस्ट का आगामी अधिवेशन २ अप्रैल १९५२ को जूनागढ़ में हुआ। इसमें सार्वदेशिक सभा के प्रधान को ट्रस्टी बनाने का निश्चय किया गया।

२८ अप्रैल १९५२ को पोरबन्दर में तथा १५ मार्च १९५३ को बड़ौदा में ट्रस्ट की विभिन्न बैठकें हुई, जिनमें दयानन्द स्मारक की योजनाओं को क्रियान्वित करने के लिये अनेक महत्त्वपूर्ण निर्णय किये गये। यह स्मरणीय है कि सेठ नानजी भाई ने डेढ़ लाख की राशि इसी शर्त पर प्रदान की थी कि आर्यजगत् भी उतनी ही धनराशि एकत्रित करने में असमर्थ रहे तो सेठजी को अपना रुपया वापस ले लेने का अधिकार था। पर्याप्त प्रयत्न करने पर भी धनसंग्रह कार्य में गति नहीं आई। अतः ११ फरवरी १९५४ को गुरुकुल पोरबन्दर में ट्रस्ट की एक बैठक आमन्त्रित की गई। इसमें यह निश्चय हुआ कि सेठ नानजी भाई से प्रार्थना की जाय कि वे आर्यसमाज के हिस्से की राशि एकत्र करने की अवधि एक वर्ष के लिये बढ़ादें तथा इसी बीच ट्रस्ट के मन्त्री श्री शारदाजी को धनसंग्रहार्थ अफ्रीका भेजा जाये। शारदाजी की यात्रा का व्यय ट्रस्ट ने देना स्वीकार किया।

इस निश्चय के अनुसार शारदाजी ने प्रथम तो धनसंग्रहार्थ भारत का ही भ्रमण किया। इस बीच वे बम्बई, बड़ौदा, पोरबन्दर, जूनागढ़, जामनगर, मेरठ, दिल्ली आदि नगरों में गये। इस प्रकार उन्होंने देश के विभिन्न भागों की चार बार यात्रायें की तथा धनसंग्रह कार्य को गति दी। २३ मार्च १९५४ को शारदाजी ने अफ्रीका के लिये प्रस्थान किया। यहाँ वे पांच मास तक रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वी अफ्रीका का ३३ वाँ अधिवेशन १, २, अगस्त १९५४ को नैरोबी में सम्पन्न हुआ। इसमें टंकारा ट्रस्ट की सहायता विषयक प्रस्ताव पारित हुआ तथा अफ्रीका महाद्वीप की आर्यसमाजों से यह प्रार्थना की गई कि वे ट्रस्ट के लिये मुक्तहस्त होकर आर्थिक सहायता प्रदान करें। प्रस्ताव के अनुसार यहाँ से लगभग ५० सहस्र शिलिंग की सहायता प्राप्त हुई। शारदाजी को दारेस्सलाम, जेंजीबार, कम्पाला, नैरोबी, टांगा आदि स्थानों की यात्रा करनी पड़ी। अफ्रीका से लौटने पर शारदाजी गम्भीर रूप से अस्वस्थ हो गये। उन्हें हृदय रोग ने घर दबाया। अतः १८ दिसम्बर १९५४ को अजमेर में जब ट्रस्ट की बैठक महाशय कृष्णजी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई तो उसमें शारदाजी के स्थान पर पं. आनन्दप्रिय जी को ट्रस्ट का मन्त्री बनाया गया। इस प्रकार टंकारा ट्रस्ट के संस्थापक ट्रस्टियों में शारदाजी का कार्य नींव के पत्थर तुल्य ही था।

### अफ्रीका-यात्रा

महर्षि दयानन्द की स्मृति में उनके जन्मस्थान टंकारा में जिस विशाल स्मारक के स्थापित करने हेतु 'टंकारा स्मारक ट्रस्ट' बनाया गया था, उसी के लिये धन संग्रहार्थ शारदाजी को अफ्रीका भेजने का निश्चय किया गया। अफ्रीका के लिये प्रस्थान करने से पूर्व शारदाजी दिल्ली गये। वहाँ महाशय कृष्णजी तथा सार्वदेशिक सभा के नेताओं से आवश्यक परामर्श किया।

अंजमेर की विभिन्न संस्थाओं ने विदेश-यात्रा के उपलक्ष्य में शारदाजी की विदाई हेतु अनेक आयोजन किये। अजमेर साहित्य परिषद् ने ९ मई १९५४ को श्री मदनमोहन गुप्त सम्पादक दरबार के सभापतित्व में एक आयोजन किया। इसमें अनेक कवियों ने कविता पाठ किया। श्री सरसवियोगी, सज्जन कवि आदि की कविताओं के पश्चात् शारदाजी ने अपनी अफ्रीका यात्रा का प्रयोजन स्पष्ट किया। नगर आर्यसमाज अजमेर ने भी शारदाजी को भावभीनी विदाई दी। पं. भगवानस्वरूपजी न्यायभूषण तथा अन्य वक्ताओं ने शारदाजी की आर्यसामाजिक सेवाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा उनकी विदेश-यात्रा के प्रति शुभकामनायें व्यक्त कीं। बम्बई से जलयान द्वारा प्रस्थान करने से पूर्व शारदाजी १२ मई को जूनागढ़ में सेठ नानजी भाई से मिले। उनका परामर्श और मार्गदर्शन अफ्रीका प्रवास के लिये अत्यन्त उपयोगी था। आर्य कन्या महाविद्यालय, बड़ौदा में स्व. पं. शान्ति-प्रियजी की अध्यक्षता में विदाई समारोह का आयोजन किया गया। इसमें पं. आनन्दप्रियजी आदि वक्ताओं ने शारदाजी की यात्रा के प्रति अपनी शुभाशंसायें व्यक्त कीं। इसी प्रकार का आयोजन बम्बई में राजा बहादुर गोविन्दलालजी (पित्ती) की अध्यक्षता में कच्छ कैसल में सेठ प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास के निवास-स्थान पर बम्बई नगर की समस्त आर्यसमाजों की ओर से हुआ। शारदाजी के सार्वजनिक कार्यों में पुराने सहयोगी श्री कन्हैयालाल जी कलयन्त्री भी इस सभा में उपस्थित थे।

२३ मई को अमरानामक जलयान के द्वारा शारदाजी ने मातृभूमि से विदा लेकर विदेश के लिये प्रस्थान किया। लगभग एक सप्ताह की लम्बी यात्रा के पश्चात् शारदाजी ३० मई को प्रातः मोम्बासा पहुंचे। आर्यसमाज मोम्बासा के अधिकारियों ने बन्दरगाह पर आगत नेता का भावभीना स्वागत किया तथा सेठ नानजी भाई के विश्राम गृह 'संतोक विला' में उन्हें ठहराया गया। इसी दिन सायंकाल डेली मेल पत्र के सम्पादक पण्ड्याजी ने शारदाजी से भेंट की तथा उनका वक्तव्य अपने पत्र में प्रकाशनार्थ ले गये। नगर में गण्यमान्य भारतीयों ने शारदाजी के सम्मान में चायपान आदि के अनेक आयोजन किये। रिपब्लिकन स्कूल में 'भारतीय गौरव' विषय पर उनका प्रभावशाली भाषण हुआ, जिसे अफ्रीकन छात्रों ने भी रुचिपूर्वक सुना। २ जून को मोम्बासा नगर के स्त्री-आर्यसमाज में शारदाजी का स्वागत आयोजित किया गया। यहाँ भी उनका नारी जाति के कर्त्तव्य विषय पर भाषण हुआ। ३ जून को श्री एम. डी. जोशी के सभापतित्व में शारदाजी का एक भाषण हिन्दूमण्डल में हुआ। इसी दिन रात्रि को सनातनधर्मियों द्वारा संचालित मंदिर में भी शारदाजी का व्याख्यान आयोजित किया गया।

४ जून को गीता हॉल में 'उपनिषद् रहस्य' विषय पर शारदा जी का

सारगर्भित व्याख्यान हुआ। इसी दिन सेटरडे-क्लब ने उनके सम्मान में प्रीतिभोज का आयोजन किया। भोज के पश्चात् 'आर्यसमाज व उसका कार्य' विषय पर शारदा जी का भाषण हुआ, जिसे क्लब के सम्मानित सदस्यों ने रुचिपूर्वक सुना। मोम्बासा से ५ जून को उन्होंने नैरोबी के लिये प्रस्थान किया तथा ६ जून को नैरोबी पहुँचे। स्टेशन पर आर्य नर-नारी सैकड़ों की संख्या में उनके स्वागतार्थ उपस्थित थे। शारदाजी को पुष्पमालाओं से लाद दिया गया तथा आर्यभवन में उन्हें ठहराया गया। आर्यसमाज के वयोवृद्ध नेता श्री मथुरादास जी, श्री गुरुदासराम जी, श्री महेन्द्रपालजी चड्ढा आदि से उनकी भेंट हुई। ११ जून को अफ्रीका में भारत के राजदूत श्री आर. के. टण्डन ने शारदा जी के सम्मान में चायपार्टी का आयोजन किया। पुनः ब्राह्मण सभा के हॉल में टण्डन जी की अध्यक्षता में शारदा जी का सेवाधर्म पर मार्मिक प्रवचन हुआ। १२ जून को संतोक बेन आर्यपुत्री पाठशाला के मैदान में शारदा जी का भाषण 'नवभारत का संदेश' विषय पर हुआ। आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री महेन्द्रपाल चड्ढा ने अध्यक्ष पद ग्रहण किया था। केन्या यूनाइटेड क्लब ने भी शारदा जी के सम्मान में भोज का आयोजन किया। न्यूस्टेनले नामक स्थान में नैरोबी के वकीलों ने शारदाजी को प्रीतिभोज पर आमन्त्रित किया। केन्या मन्त्रिमण्डल के सदस्य श्री पटेल तथा भारत के उच्चायुक्त श्री टण्डन भी इसमें सम्मिलित हुये। १५ जून को यूनाइटेड केन्या क्लब के तत्त्वावधान में शारदा जी ने 'संसार की सभ्यता में भारत की देन' विषय पर प्रभावशाली भाषण दिया। नैरोबी के शिक्षाविभाग के निदेशक ने इस सभा की अध्यक्षता की थी। पूर्व अफ्रीका आर्यप्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान तथा इण्डियन नेशनल कांग्रेस, पूर्व अफ्रीका के अध्यक्ष श्री डी. डी. पुरी ने सेठ माधवाजी, डा. जयदेवजी ने शारदा जी को स्वगृह पर आमन्त्रित किया तथा पर्याप्त समय तक आर्यसमाज की समस्याओं के विषय में विचार विनिमय करते रहे।

इस प्रकार शारदा जी ने अपने प्रवासकाल में अफ्रीका के दर्शनीय स्थानों को देखा, प्रवासी भारतीयों का आतिथ्य ग्रहण कर उनके जीवन और समस्याओं को निकट से अनुभव किया तथा आर्यसमाज का संदेश अत्यन्त प्रभावोत्पादक शैली में उस महादेश के निवासियों के सम्मुख प्रस्तुत किया। जिस उद्देश्य को लेकर यह यात्रा आयोजित की गई थी, उसमें भी उन्हें पर्याप्त सफलता मिली और वे लगभग ५० सहस्र शिलिंग चन्दा लेकर आये। मोम्बासा और नैरोबी के पश्चात् वे नकुरू, अेल्ड्रेट, जिंजा, टांगा, अरूशा, मोशी, डोडोमा, शिनियंगा, टबोरा, मेवान्जा, कुसुमु आदि केन्या के अन्य स्थानों पर भी गये। तत्पश्चात् टैंगानिका, यूगाण्डा आदि देशों में वैदिक धर्म का शंखनाद करते हुये भ्रमण किया। इस यात्रा में उनके सैकड़ों व्याख्यान हुए। अफ्रीका के

पत्रों में उनके अनेक लेख छपे। प्रवासी भारतीयों की ही भाँति यूरोपीयनों तथा अफ्रीकनों ने भी विश्वशान्ति हेतु वैदिक धर्म के सन्देश को बड़े उत्साह के साथ सुना।

अफ्रीका की यात्रा समाप्त कर २३ अक्टूबर १९५४ को शारदा जी वायुयान से बम्बई पहुँचे। बम्बई की २१ आर्यसमाजों ने सम्मिलित रूप से आपका भावभीना स्वागत किया। जब वे बम्बई से अजमेर लौट रहे थे तो सूरत और बड़ौदा के बीच यात्रा के दौरान ही आप पर हृदय रोग का अप्रत्याशित आक्रमण हुआ। बड़ौदा में चिकित्सा हेतु उन्हें 15 दिन रुकना पड़ा। वहाँ पं. आनन्दप्रियजी व समस्त पण्डितपरिवार के सदस्यों ने तनमन से उनकी सेवा शुश्रूषा की। उस समय उनकी पुत्री सरला भी उनके साथ थी। कुछ स्वस्थ होने पर उन्हें अजमेर ले आया गया और उनकी विधिवत् चिकित्सा आरम्भ हुई।

आर्यसमाज के अनेक सभासद् यह अनुभव करते थे कि देश की राजनीति को जब तक धार्मिक और नैतिक आधार पर संचालित नहीं किया जायगा, तब तक देश में सच्चा स्वराज्य और सुराज्य स्थापित होना दुष्कर ही है। इस प्रकार राजनैतिक भावनाप्रवण आर्यसमाजियों ने आर्य स्वराज्य सभा का संगठन किया तथा उसका प्रथम आर्य स्वराज्य सम्मेलन मार्गशीर्ष १९७९ वि. को लाहौर में आयोजित किया। पं. रामगोपाल वैद्य शास्त्री इस संगठन के प्रमुख कार्यकर्ता थे। शारदा जी को सम्मेलन की अध्यक्षता करने हेतु आमन्त्रित किया गया। अपने अध्यक्षीय भाषण में शारदा जी ने वैदिक राजनीति का स्वरूप निरूपित करते हुये कहा—"वेदों में राजनैतिक, सामाजिक, वैज्ञानिक सब ही विषयों का सूत्र रूप से उपदेश है। आर्यसमाज का कार्य जहाँ धर्मार्य सभा, विद्यार्य सभा कायम करना है, वहाँ राजार्य सभा भी कायम करना है। वेद और महर्षि दयानन्द का बताया हुआ स्वराज्य सार्वभौम सभा सबके लिये आदर्श है। वैदिक राजनीति धर्म और सदाचार से पृथक् नहीं हो सकती। धर्म और सत्य के आधार पर ही राज्य चल सकते हैं। महात्मा गांधी ने भी महर्षि दयानन्द की आवाज को कांग्रेस मञ्च से गुंजाया है। हमें प्रसन्नता है कि यही अवस्था महर्षि दयानन्द लाना चाहते थे। जिन सच्चाइयों को आर्यसमाज वर्षों से कह रहा था, अब वह सारी जाति मान गई है।" अपने इस अभिभाषण में शारदा जी ने आदर्श वैदिक राज्य, गोरक्षा, आर्यसंगठन, हिन्दू-मुस्लिम एकता, दलितोद्धार, आर्यभाषा, देशी राज्य आदि प्रमुख समस्याओं का विस्तृत विवेचन किया। प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता डा. सत्यपाल आर्य स्वराज्य सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष थे।

□□

# शारदाजी का हीरक-जयन्ती समारोह

अपने जीवन के ६० वर्ष पूरे कर शारदा जी ने सार्वजनिक सेवा में अपनी अवशिष्ट आयु को व्यतीत करने का पुनः संकल्प व्यक्त किया। अतः उनकी ६० वीं वर्षगाठ उल्लास एवं हर्ष के वातावरण में २३ जून १९४८ को गांधी भवन में मनाई गई। ६० वर्ष पूरे कर लेने के उपलक्ष्य में बन्दूकों के ६० धड़ाके किये गये तथा प्रो. मदनसिंह जी (प्राध्यापक, मेयो कालेज अजमेर) की अध्यक्षता में एक सभा की गई। इसमें पं. जियालाल जी, मंत्री डी. ए. वी. कालेज अजमेर, प्रो. ताराचन्द गाजरा सिंध के आर्यनेता, डा० सूर्यदेव शर्मा आदि की वक्तृतायें हुई। वक्ताओं ने शारदाजी की देश, धर्म एवं समाज के प्रति की गई सेवाओं की सराहना करते हुये उनकी दीर्घायु की कामना की। इस अवसर पर माननीय माधव श्री हरि अणे, राज्यपाल बिहार; श्री प्रकाश जी, पाकिस्तान में भारत के उच्चायुक्त; माननीय जगजीवनराम, भारत सरकार के तत्कालीन श्रममंत्री; श्री. के. एम. मुन्शी हैदराबाद में भारत के तत्कालीन एजेण्ट जनरल; सेठ गोविन्ददास, ससद् सदस्य; माननीय श्री ब्रजलाल बियानी सदस्य, संविधान सभा; डा, गोकुलचन्द नारंग; स्वामी भवानीदयाल संन्यासी; स्वामी स्वतंत्रानन्द जी आदि देश के गण्यमान्य राजनीतिज्ञों तथा धार्मिक नेताओं के शुभकामना संदेश प्राप्त हुये। श्री पं. जियालाल जी की अध्यक्षता में इसी उपलक्ष्य में एक कवि सम्मेलन भी आयोजित किया गया। इसमें पं. जगन्नाथ जी उपाध्याय, कविरत्न पं. प्रकाशचन्द जी आदि की शारदा प्रशस्ति विषयक कवितायें पढ़ीं गई। शारदाजी ने इस अवसर पर जो अपना भाषण दिया, उसके उल्लेखनीय अंश इस प्रकार हैं—

आज मैंने अपने जीवन के ६० वर्ष समाप्त किये हैं। इस उपलक्ष्य में आपने मेरे प्रति जो शुभकामनाएँ प्रकट की हैं, उसके लिए मैं आपका अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। जैसाकि मैं मेरे पूर्व जन्म-दिवसों पर कहता आ रहा हूँ, वही मैं आज फिर दोहरा देता हूं कि जो कुछ मैंने किया है, वह ईश्वर की अपार कृपा और अनुकम्पा से किया है। मैं तो एक नाटक के पात्र के समान हूं। जो कुछ करता हूँ और जो कुछ होता है, वह मङ्गलमय भगवान् की कृपा से ही होता है। हम लोग तुच्छ प्राणी अज्ञानवश इसे अपना समझ कर अहंकार करते हैं और किये हुए कामों के लिए प्रशंसा और यश चाहते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि पुरुषार्थ अवश्य करना चाहिए। महर्षि दयानन्दजी ने कहा है कि आँखोंवाले को हम दृश्य बतला सकते हैं परंतु जो अन्धा है, उसे कैसे बतलावें। इसी प्रकार जो पुरुषार्थ करता है, उसे भगवान् सहायता देते हैं। मैं तो भगवान् से

यही प्रार्थना करता हूँ कि वह मुझे बल दें कि मैं अपने जीवन में यश और अहंकार को त्यागकर जनता-जनार्दन का सच्चा सेवक बनूं। जनता-जनार्दन की सेवा ही सच्ची ईश्वरभक्ति है। यश और कीर्ति तो कर्त्तव्य-पालन से अपने-आप मिल जाती है। मुझे भारत के प्रसिद्ध तत्त्ववेत्ता डा० भगवानदास जी, काशी ने आशीर्वाद भेजा है कि तुम तो गृहस्थी रहते हुए भी वानप्रस्थी का जीवन व्यतीत कर रहे हो। मुझ पर मेरे मित्रों ने देशदेशान्तरों से आशीर्वादों की वर्षा की हैं। उसके लिए उनको धन्यवाद देता हुआ मैं तो यही कहता हूँ कि "इदन्न मम" यह मेरा नहीं है। यह जो मेरी प्रशंसा है, वह सब मेरे मित्रों की है, मेरे सहयोगियों की है, मेरे परिवार, मित्र, सम्बन्धियों की है। उन्हीं के आशीर्वाद से मैं थोड़ी बहुत सेवा कर सका हूँ। अतः यह प्रशस्तियाँ, अभिनन्दन, कविताएँ मैं जनता-जनार्दन के चरणों में ही अर्पित करता हूँ। मैं तो अपने-आपको धन्य उसी समय तक समझ रहा हूँ और समझूंगा जब तक कि मेरे विचारों के अनुकूल आप कार्य करते रहेंगे।

### स्वराज्य

मुझे आज प्रसन्नता है कि जिन कामों को मैंने मेरे अनेक सहयोगी मित्रों की सहायता से प्रारम्भ किया था, उनमें सफलता मिलती जारही है। मैंने अपने जीवन का सारा ही समय देश की स्वतन्त्रता-प्राप्ति के आन्दोलन में लगाया और आज मुझे हर्ष है कि देश स्वतन्त्र होगया। मैं इस बात का अनुभव करता हूँ कि अभी जन-साधारण को देश की आजादी के मीठे फल चखने को नहीं मिले हैं।

मैं अपने शेष जीवन में यही प्रयत्न करूंगा कि लाखों ग्रामों की साधारण जनता जो अविद्यान्धकार में है, वह स्वराज्य और स्वतन्त्रता का वास्तविक सुख भोगे।

### अछूतोद्धार, दलितोद्धार व हरिजन सेवा

यह आंदोलन मैंने मेरे प्रारंभिक जीवन में उठाया था। इस मार्ग में हमें नाना प्रकार के कष्ट उठाने पड़े। अछूत पाठशाला खोलने पर जयपुर राज्य के मलसीसर ग्राम में हमारे मास्टर राधावल्लभजी के पैर को खोड़े में डाल दिया था। और अछूत भाइयों से बैठबेगार लेते थे और अच्छा खाना, अच्छा पहिनना, अच्छे मकानों में रहना, अच्छे आभूषण पहिनना उनके लिए वर्जित थे। मैंने "दलितोद्धार" नामक पुस्तक लिखी, पर हमारी अंग्रेज सरकार को और कुछ सवर्ण हिन्दुओं और मुसलमानों को मेरी इस पुस्तक से इतना विरोध हुआ कि वह जब्त करली गई।

परन्तु आज हमें हर्ष है कि हमारे सब प्रयत्न सफल हुए। हमारी विघ्न बाधाएँ दूर होगईं। कानून से अछूतपन हटा दिया गया और हमारे दलित भाई सच्चे हरिजन बन के स्वतन्त्रता की सांस लेरहे हैं। परन्तु अभी दिल्ली दूर है, अभी तक बहुत कुछ काम करना बाकी है। गांवों में अब भी बेगार, अस्पृश्यता और नाना प्रकार के अत्याचार होते ही आरहे हैं। मैं सदा की भाँति इस ओर पूरा ध्यान रक्खूंगा।

### दास-प्रथा

दास-प्रथा यद्यपि कागज़ों में मिट गई है परन्तु डावड़ियां (लड़कियां) डायजे (दहेज) में अभी भी दी जाती हैं, इसका भी उन्मूलन मैं करता रहा हूँ और आगे भी करूंगा।

### राष्ट्र-भाषा हिन्दी

मैं सन् १९४० ई० से बराबर हिन्दी के प्रचार का प्रयत्न करता रहा हुं, और हिन्दी साहित्य सम्मेलन में भाग लेता रहा हूँ तथा हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की परीक्षाओं का केन्द्र-व्यवस्थापक गत २० वर्षों से हूँ। लगातार आंदोलन के वाद अब बड़ी कठिनता से अदालतों में हिन्दी हो पाई है।

माननीय श्री घनश्यामसिंहजी गुप्त ने ठीक ही कहा है कि पारिभाषिक शब्दों का अनुवाद करने में संस्कृत का सहारा लिये बिना काम नहीं चल सकता। अतः प्रत्येक देवनागरी के समर्थक देशभक्त का कर्त्तव्य है कि राष्ट्र-भाषा हिंदी सर्वगुण नागरी देवनागरी के पक्ष को सबल करें। और आर्य संस्कृति की रक्षा के लिये हिंदी भाषा की रक्षा का व्रत लें।

और आम बोलचाल की संस्कृत-जन्य हिन्दी का प्रचार, जो महर्षि दयानन्द ने और देश के मान्य विद्वानों ने प्रारम्भ किया था, उसी का प्रचार करते रहें। मुझे पूर्ण आशा है कि मेरे सहयोगी सदा की भाँति इसमें भी सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

### देशी राज्यों में उत्तरदायित्वपूर्ण शासन

सन् १९१८ ई० से मैं लगातार देशी राजाओं के विरुद्ध उत्तर-दायित्वपूर्ण शासन प्राप्त करने के लिए आंदोलन करता आ रहा हूँ, आज मेरा हृदय खुशी से उछल रहा है कि हमने देशी राजाओं से हमारी मांगें पूरी कराली हैं। स्वर्गवासी सेठ जमनालालजी बजाज, गणेशशङ्करजी विद्यार्थी तथा श्री विजयसिंहजी पथिक, कन्हैयालालजी कलयंत्री इस आंदोलन में प्रारम्भ से ही मेरे सहयोगी रहे। माणिकलालजी वर्मा जो इस समय राजपूताना यूनियन के प्रधान मन्त्री हैं, जयनारायणजी व्यास जो इस समय जोधपुर राज्य के प्रधानमन्त्री हैं, गोपीकिशनजी वीजावर्गी जो इस समय ग्वालियर राज्य के स्तम्भ हैं, ये सभी सज्जन राजपूताना मध्यभारत सभा में हमारे सहयोगी रहकर देशी राज्यों के आंदोलन में हमारा हाथ बटाते रहे हैं। हमें हर्ष है कि आज भारत स्वतन्त्र हो गया है और देशी राज्यों के सम्वन्ध में हमारे स्वप्न पूरे हो रहे हैं। अब तो देश की दरिद्रता, भूख, वीमारी हटाने में और सैनिकीकरण करने में तथा उद्योग धन्धे में हमें लग जाना चाहिये।

### निजाम हैदराबाद

आज से ९ वर्ष पूर्व हैदराबाद सत्याग्रह का द्वितीय सर्वाधिकारी बनाकर आपने मुझे भेजा था। मुझे हर्ष है कि उसमें हमको धार्मिक अधिकार प्राप्त करने में सफलता मिली।

## शुद्धि-कार्य

जिस समय हमने ऋषि के शुद्धि के कार्य की दीक्षा ली और वैदिक नाद बजाकर मैदान में आये, उस समय हमारे पास अत्यल्प साधन थे। परन्तु हृदय में यह भाव था कि ऋषि ने देहरादून में सब से पहिले मुसलमान मौलवी को शुद्ध कर अलखधारी बनाया, उनका यह काम बराबर चलना चाहिये।

हमारे पास धन तो केवल भावनाओं और आदर्शों का था। हमने स्वामी श्रद्धानन्दजी के साथ तथा महात्मा हंसराज जी के साथ घूम-घूम कर शुद्धि का नाद मथुरा जिला तथा भरतपुर, अलवर राज्यों में फूंका और ४० हजार मलकाने राजपूत शुद्ध किये। इसके बाद दानवीर सेठ जुगलकिशोर जी बिड़ला की सहायता से पंडित आनन्दप्रिय जी के साथ मैं गुजरात के गांवों में घूमा और आगाखाँ के खोजापंथी लोगों के षड़यन्त्रों का भण्डा-फोड़ किया, और हरिजन बस्तियों में जैसे सोजत का ग्राम धर्मज खम्नान आदि में जाकर खोजाओं के धर्मगुरु आगाखाँ के नकलंक मण्डलों को तोड़ कर सहस्रों हरिजनों को मुसलमान होने से बचाया। इसी प्रकार मोले सलाम, गिरासियों, पीराना पंथियों व ईसाइयों के इन्द्रजाल से हरिजनों को बचा कर उन्हें पुनः हिन्दू धर्म में दीक्षित किया। इस काम में गुजरात के तेजस्वी आर्य नेता स्व० पं० आत्मारामजी के सुपुत्र श्री पं० आनन्दप्रियजी के उत्साह की जितनी प्रशंसा की जाय उतनी ही थोड़ी है। यह उन्हीं का प्रयत्न था कि दो लाख विधर्मी शुद्ध होकर हिन्दू धर्म में सम्मिलित हो गये।

इसके बाद शुद्धि का कार्य हम निरन्तर करते रहे और इस वर्ष १९४८ में जबकि हिजहाइनेस महाराजाधिराज जोधपुर के सभापतित्व में सैंदरा (मारवाड़) में शुद्धि सम्मेलन हुआ; तब हमारी मनोकामना पूर्ण हो गई और सहस्रों चीते महरात भाई शुद्ध होकर राजपूतों में सम्मिलित हो गए। इसी प्रकार सूरोठ (मेवाड़) में जाकर पांच हजार हमारे बिछुड़े भाइयों को हमने गले लगाया। उझयानी (यू. पी.) के गाँवों को मैंने श्री पं. बिहारीलालजी शास्त्री के साथ घूम कर शुद्ध किया था। मुझे हर्ष है कि जो काम वहां बाकी रह गया था, वह श्री पं. बिहारीलालजी के प्रयत्न से अब पूरा हो गया है। अब भी शुद्धि का क्षेत्र विस्तृत है।

इस समय सब से बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि हम आर्य धर्म को ही सर्वश्रेष्ठ धर्म मानें।

## शिक्षा-प्रणाली

हम महर्षि दयानन्दजी के भक्तों का पवित्र कर्त्तव्य है कि हम शिक्षा प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन करें और अंग्रेजी सभ्यता की गुलामी से भारत माता को बचावें।

## कांग्रेस और धर्म

हमारा यह अटल विश्वास है कि धर्म से रहित राजनीति जीवित नहीं रह सकती। वेद, स्मृति, चाणक्यनीति, रामायण, महाभारत, गीता, सत्यार्थप्रकाश आदि सब धार्मिक पुस्तकों में राजनीति तथा राजधर्म का वर्णन है। और इन्हीं के आधार पर हमारी संस्कृति बनी है।

## स्त्री-जाति का सुधार

हम चाहते हैं कि हमारा यह स्वतन्त्र भारत देश अब सारे संसार का नेतृत्व करे। माताओं ने ही महान् पुरुषों को उत्पन्न किया है और जब तक मातायें नहीं सुधरेंगी, तब तक महान् पुरुष उत्पन्न नहीं हो सकते। और जब तक महान् पुरुष उत्पन्न नहीं होते तब तक सारे संसार में आर्यों के चक्रवर्ती राज्य की हमारी भावना कार्यरूप में परिणत नहीं हो सकती। इसीलिये महर्षि दयानन्द सरस्वती ने नारी जाति के सत्कार का बारम्बार उपदेश दिया है। मैं भी अपने ६० वर्ष के जीवन में यही उपदेश देता रहा हूँ कि भारत को उन्नति के शिखर पर पहुँचाने के लिये हमें विदुषी महिलाओं की आवश्यकता है, जो अपने सुपुत्रों को रणभूमि में सुभद्रा, कुन्ती और जीजाबाई के समान भेजें और कैकेयी, पद्मिनी और लक्ष्मीबाई के समान स्वयं रण में जाकर युद्ध करें। इसीलिये आर्य कन्या गुरुकुल और आर्य पुत्री पाठशालाओं की मैं बराबर सहायता करता रहा हूँ। जब तक हमारा उद्देश्य पूरा न होगा और पश्चिमी सभ्यता से हम हमारी पढ़ी-लिखी बहिनों को नहीं हटावेंगे तथा आर्य संस्कृति के अनुकूल इनका शिक्षण व पोषण नहीं करेंगे एवं प्राचीन मर्यादा के ब्रह्मचर्य के पालन करनेवाले गुरुकुल नहीं स्थापित करेंगे, तब तक हमारा भारतवर्ष उन्नति के शिखर पर नहीं पहुँचेगा। मैं स्त्री शिक्षा का आन्दोलन मेरी शेष आयु में भी बराबर जारी रखूंगा। और यथाशक्ति प्रयत्न करूंगा कि प्राचीन आर्य-मर्यादा के अनुकूल हमारी पुत्रियों का राष्ट्रीय शिक्षण हो।

## उपसंहार

मैं जगद्गुरु महर्षि दयानन्द का अपने बाल्यकाल से ही अनुयायी और भक्त रहा हूं। मुझे मेरे पूज्य पिताजी से यही सबसे अधिक मूल्यवान् पैतृक सम्पत्ति मिली है। मैं अपना तन, मन, धन सब कुछ सत्य के ही प्रकाशनार्थ अर्पण कर चुका हूँ। ईशोपनिषद् के 'यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्येवानुपश्यति' के मन्त्र के अनुकूल चलकर मैंने सदा आनन्द प्राप्त किया है। मेरी यह दृढ़ धारणा है कि आर्य धर्म के उत्तम गुणों का प्रचार कर, सैनिक शिक्षण अनिवार्य कर, राष्ट्र-भाषा हिन्दी का प्रचार कर, हम अपने राष्ट्र को उन्नत बना सकते हैं। भारत जगद्गुरु रहा है और जगद्गुरु रहेगा। भारत माता का झण्डा सदा ऊंचा रहा है और वह समय शीघ्र आनेवाला है, जब हम अपने त्याग, तप और बलिदान से विरोधी शक्तियों पर विजय प्राप्त कर पुनः अखंड भारत बनायेंगे। और सारा संसार जगद्गुरु भारत के जयघोषों से गूंज उठेगा।

**जो बोले सो अभय ! वैदिक धर्म की जय !!**

□□

# १५ अगस्त १९४७ के प्रथम स्वतन्त्रता दिवस पर श्री चाँदकरणजी शारदा के भाषण का सार

"स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में ता. १५ अगस्त १९४७ ई. को सार्वजनिक सभा में भाषण देते हुए श्री देशभक्त कुंवर चांदकरणजी शारदा ने कहाः—

स्वतन्त्रता दिवस पर आज अजमेर नगर की खुशियों को देखकर मेरा हृदय फूला नहीं समा रहा है। आज से २५ वर्ष पहले जिस आन्दोलन को हमने और हमारे मित्रों ने उठाया था और जिसके लिए हमने जेलों में नाना प्रकार के कष्ट भोगे थे तथा जेल के बाहर भी अनेक कठिनाइयाँ, विरोध व दुःख सहे थे, वह आन्दोलन अब सफल होगया है। मैं नयाबाजार के चौपड़ में खड़ा होकर वन्देमातरम् के नारों में लोगों से सन् १९१९-१९२० में यह गीत गवाया करता थाः—

"नहीं रखनी नहीं रखनी सरकार ज़ालिम नहीं रखनी"

आज उस ज़ालिम अंग्रेज सरकार से हमें मुक्ति मिली है।

कांग्रेस के प्रारम्भिक काल में भयंकर कायरता और घोर निराशा छाई हुई थी। हमें कांग्रेस के विज्ञापनों पर हस्ताक्षर करनेवाले नहीं मिलते थे। सरकारी आतंक इतना छाया हुआ था कि लोग अपने दुःखों को प्रकाशित करने के लिए अर्जी देने, प्रतिवाद करने और अखबारों में समाचार तक छपवाने में डरते थे। नेताओं को ठहराने के लिए कोई मकान नहीं देता था। स्व. देशभक्त राजर्षि पंडित मदनमोहनजी मालवीय और बाबू शिवप्रसादजी गुप्त जैसे देशभक्त पहली बार जब अजमेर में आये थे तब हमें उनको हिन्दू होटल में ठहराना पड़ा था, उन दिनों मुसलमान तो कांग्रेस से कोसों दूर भागते थे। "हिन्दू मुसलमान दोनों की मीटिंग है," यह बतलाने के लिये मुझे अपने क्लर्क स्वर्गवासी मुन्शी यूसुफअली के दस्तख़त कराकर कांग्रेस की मीटिंग का विज्ञापन निकालना पड़ता था।

पहली बार जब डा. अन्सारी साहब और आसफअली साहब अजमेर पधारे, तब भी हमको इसी प्रकार मुसीबतों का सामना करना पड़ा। हिन्दू मुसलमानों को एक जगह लाने के लिये हमने इण्डियन एसोशियेशन खोला

और मौलाना मुईनुदीन साहब को प्रधान और मैं और बाबू ललताप्रशादजी शाद उसके मंत्री चुने गये। बाद में खिलाफत आन्दोलन के कारण मुसलमान कांग्रेस में सम्मिलित हुए। हमने मुसलमानों के खिलाफत आन्दोलन में तन, मन, धन से सहायता प्रदान की। परन्तु हमें दुःख है कि आन्दोलन के समाप्त होते ही कुछ अंगुलियों पर गिनने लायक मुसलमानों को छोड़कर बाक़ी के सब मुसलमान कांग्रेस से पृथक् होगये। मैं हिन्दू हितों और हिन्दू अधिकारों की रक्षा के लिये हिन्दू महासभा में सम्मिलित हो गया।

तबलीग़ जो मौलाना हसन निजामी साहब ने प्रारम्भ की थी, उसका मुक़ाबला करने के लिये मुझे शुद्धि आन्दोलन में भाग लेना पड़ा। मौलाना हसन निज़ामी पहले अजमेर में हमारे राजस्थान प्रान्तीय राजनैतिक कान्फ्रेंस में पधारे थे और उन्होंने कांग्रेसी मंच से व्याख्यान भी दिया था, परन्तु जब वो बदल गये, हमको भी उनका मुक़ाबला करना पड़ा। कांग्रेस और खिलाफत के नेता हम साथ-साथ एक ही ध्येय और एक ही उद्देश्य लेकर भारत में अंग्रेज़ी राज्य मिटाने के लिये जेलों में रहे थे।

कांग्रेस के प्रारम्भिक दिनों में जब हम बाहर से कांग्रेसी नेताओं को बुलाते थे और उनके व्याख्यान कराते थे तो उन दिनों नेताओं के लिये अजमेर के बड़े-बड़े सेठ साहूकार, नबाब, इस्तमरारदार, अपने मकानों पर ठहराना तो दूर रहा, गाड़ी तक नहीं देते थे। मोतीकटरे वाले स्वर्गवासी सेठ मगनमलजी रीयाँ वाले अजमेर के ऐसे देशभक्त सेठ थे जो हमारे बाहर से आये हुये नेताओं के लिये अपने सफेद घोड़ों की जोड़ीवाली बग्घी प्रदान कर दिया करते थे। अजमेर के कुछ इस्तमरारदान तो हमें कुचलने के लिये सदा तत्पर रहते थे। उनकी यह हालत थी कि जब उनके ही भाई राव साहब गोपालसिंहजी राष्ट्रवर खरवा नरेश बनारस षड़यन्त्र केस में जेल में डाले गये तो इन लोगों ने उनके छुड़ाने में जरा भी मदद नहीं दी, बल्कि सब ने मिलकर जो लाटसाहब को अजमेर आने पर अभिनन्दन पत्र दिया था, उसमें उनकी तीव्र निन्दा की।

आज हमें हर्ष है कि अब सभी देशभक्त हो गये हैं और भारत गुलामी की जंजीरों से छूट गया है। कौन ऐसा भारतीय होगा जिसको आज हर्ष न हो। हिंसा या अहिंसा चाहे किसी प्रकार से जिसने मातृभूमि को स्वतन्त्र करने में सहायता दी और देश की सेवा की, उनके प्रति हम आज के शुभ दिवस श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

१८५७ के स्वतंत्रता संग्राम में झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई, सेनापति तांत्या टोपे, नानासाहब पेशवा, जगतपुर बिहार के राणा कुंवरसिंह व अमरसिंह और दिल्ली के मुग़ल सम्राट् बहादुरशाह तथा लाखों वीर सिपाही

जिन्होंने फिरंगियों को भारत से निकालने में अपने प्राणों की आहुति दी, उनको हम आज के स्वतन्त्रतादिवस पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

इस शुभ अवसर पर मैं भारत के सबसे पुराने क्रांतिकारी नेता अजमेर के बैरिस्टर श्रीमान् पं. श्यामजी कृष्णवर्मा को नहीं भूल सकता, जिन्होंने इंग्लैण्ड में जाकर स्वतन्त्रता का नाद बजाया। अभिनव भारत, क्रान्तिकारी दल, अमेरिका ग़दर पार्टी, कोमागाटा मारू जहाज के क्रांतिकारी, सब के पिता वो ही थे। देशहितार्थ वे सारी उम्र देश निकाले में ही रहे और स्विट्जरलैण्ड में ही मरे। ऋषि दयानन्द ने अपनी भारतीय स्वतन्त्रता के लक्ष्य की पूर्ति के लिये कई क्रांतिकारी उत्पन्न किये, उनमें ऋषि के शिष्य विदेशों में जानेवाले श्यामजी कृष्णवर्मा को हम बारम्बार नमस्कार करते हैं। मैंने अपने विद्यार्थी जीवन में उनके 'इण्डियन सोशियोलाजिस्ट' नामक पत्र पढ़ कर ही देश-सेवा का व्रत लिया था। आज भारतीय स्वाधीनता के पुण्य अवसर पर हम उस ज्योतिर्धर ऋषि दयानन्द के प्रति, जिन्होंने स्वराज्य या प्रजातंत्र का मंत्र सब से पूर्व भारत को दिया, बारम्बार श्रद्धाञ्जलियाँ अर्पित करते हैं।

भारत के लिए अपने प्राणों की बाजी लगानेवाले स्वर्गीय व जीवित निम्नलिखित देशभक्तों को वार-वार श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ:—

**स्वर्गीय**

महारानी लक्ष्मीबाई, देवीमैना; नानासाहब फडनवीस, तांत्या टोपे, वीरमङ्गल पाण्डेय, सोहनलाल पाठक,बलवन्त फडके, कर्तारसिंह, खुदीराम बोस, हेमू कलानी, दिनेश गुप्ता, रामराजू, सत्येन्द्र बसु, यतीन्द्रनाथ दास, शेरजंग, गोपीनाथ साहा, अवधविहारी, कोतवाल, अमीरचन्द्र, बी. जी. पिङ्गले, कन्हाईलाल दत्त, काशीराम, रासविहारी बसु, लोकमान्य तिलक, अम्बिका चक्रवर्ती, पं. के. लाला लाजपतराय, अमरशहीद स्वामी श्रद्धानन्द, टेगरा, सूर्यसेन, प्रीति बाद्दार, गोखले, रानाडे, अनन्तसिंह, मनीदत्त, गणेश घोष, केसरीसिंह, प्रतापसिंह, रोशनसिंह, सूफी अम्बाप्रसाद, राजेन्द्र लाहडी, धन्नासिंह, वीगांरा, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव, लाला हरदयाल, गणेश दामोदर सावरकर, ऊधमसिंह, चित्तु पांडे, पं. मदनमोहन मालवीय, सरदार अजीतसिंह, नेताजी सुभाषचन्द्र वोस आदि।

**जीवित**

वीर सावरकर, भाई परमानन्द, राजा महेन्द्रप्रताप, बटुकेश्वरदत्त, पृथ्वीसिंह, शचीन्द्रनाथ सान्याल, जयप्रकाशनारायण, अच्युतपटवर्धन, अरुणा।

इन वीर हुतात्माओं और जीवित क्रान्तिकारियों तथा असंख्य अज्ञात

भारत माँ के सुपुत्रों की जीवनाहुति, तपस्या एवं आत्मसमर्पण का ही परिणाम आज भारत की स्वतन्त्रता है।

आज के दिन मैं छापेकर वन्धुओं को जिन्होंने मिस्टर रेण्ड को पूना में मारा तथा बंग-भंग के स्वदेशी आन्दोलन के समय गुप्त क्रांतिकारी दल वनाया था, अलीपुर के मनिकतला के वम्व वनानेवाले बंगाली मित्रों को तथा योगिराज अरविन्द घोष को और वन्देमातरम् अखवार चलानेवाले सम्पादकों को नहीं भूल सकता, जो अपनी जान को जोखिम में डाल देश हितार्थ जन्म भर गुप्त क्रान्तिकारी कार्य करते रहे। मैं श्रीमान्. स्वर्गवासी देशवन्धु चितरञ्जनदास को भी हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूं जिन्होंने क्रान्तिकारियों को पूरी सहायता दी और उनके मुकदमे लड़कर उनको जेलों से मुक्त कराया।

मैं श्रीमान् कन्हैयालालजी दत्त, देशभक्त खुदीरामजी वोस आदि क्रांतिकारियों के चरणों में आज मस्तक नमाता हूँ जिन्होंने अंग्रेजों के हृदय में तहलका मचा दिया था और गीता हाथ में लेकर हंसते-हंसते फांसी के तख्ते पर लटक गये थे।

श्री मदनलालजी धींगड़ा ने लंदन में सर कर्जन वायली को जो पहले राजपूताना के एजेन्टगवर्नर जनरल थे और जो विदेशों में गये हुये विद्यार्थियों को वहुत तंग करते थे, गोली से मार दिया और हंसते-हंसते फांसी के तख्ते पर लटक गये। अजमेर निवासियों को चाहिये, उस वीर देशभक्त मदनलाल धींगड़ा की याद अजमेर में सदा के लिये कायम रखें। मैं चाहता हूं कि अजमेर में जो स्टेशन के सामने घण्टाघर की मस्जिद के वरावर के. जे. महता के सामने संगमरमर का कर्जनवायली मेमोरियल बना है, उसका नाम "मदनलाल धींगरा मेमोरियल" रख दें। हम वीरेन्द्र घोष, रासविहारी को नहीं भूल सकते जिन्होंने दिल्ली दरबार के समय लार्डहार्डिंग पर वम्व फैंका और सी. आई. डी. पुलिस के हजार प्रयत्न करने पर भी उनके हाथ नहीं आये।

श्रीमान् स्वातन्त्र्यवीर सावरकरजी को हमारा वारम्वार प्रणाम है, जिन्होंने लंदन में अभिनव भारत के नाम से क्रांतिकारी दल वनाया। श्री रासविहारी वोस, लाला हरदयाल, राजा महेन्द्र प्रताप, सरदार अजीतसिंहजी आदि ने देश हितार्थ विदेशों में जाकर भारतीय स्वतन्त्रता के लिये प्रयत्न किया उनके वलिदानों को भारत सन्तान कदापि नहीं भूल सकती।

सन् १९१९ में पंजाब में डायर ओडायर ने जलियांवाला वाग में अमृतसर में निहत्थे लोगों को मशीन गनों से उड़वाया। पेट के वल चलाया और बच्चों के खून किये। उसके प्रतिकार में पंजाव की जनता ने वदला लिया और फलस्वरूप भाई परमानन्दजी, रतनचन्दजी, ला० हरिकिशनलाल

आदि को कालेपानी की सजायें हुई। उन सब देशभक्तों को मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। लोकमान्य तिलक, लाला लाजपतराय, विपिनचन्द्र पाल, डा० ऐनी विसेन्ट आदि गर्म दल के नेताओं को कि जिनके साथ में मुझे काम करने का मौका मिला, उन सबके प्रति आज सम्मान प्रकट करता हूँ।

अजमेर में रोलट बिल पास होते ही हमने अंग्रेजी सरकार को भारत से बाहर निकालने का आन्दोलन प्रारम्भ किया था। भाई राधामोहनजी तोषनीवाल वकील उस आन्दोलन में हमारे साथ थे। और मुझे हर्ष है कि उस आन्दोलन में आज हमको सफलता मिली है। जिस डायर ओडायर ने जलियांवाला हत्याकाण्ड किया और १० मिनट में १६५० राउन्ड फायर करके ११३७ आदमियों को हताहत किया, उस डायर ओडायर से बदला लेने वाले देशभक्त उधमसिंह को मैं आज हजार बार प्रणाम करता हूँ और चाहता हूँ कि उनकी फोटू घर-घर लटकाई जाय क्योंकि उन्होंने बदला लेकर देश का सम्मान रखा।

काकोरी के निकट रेलगाड़ी रोककर सरकारी खजाना लूटनेवाले श्री रामप्रसादजी विस्मिल, अशफाकउल्ला, राजेन्द्रलहरी और रोशनसिंहजी को भी मैं नहीं भूल सकता, जो फाँसी के तख्ते पर हंसते-हंसते लटक गये। भगतसिंहजी, राजगुरु और सुखदेवजी के लाहौर में बलिदानों को कौन भूल सकता है ? इलाहाबाद में पुलिस के आमने-सामने लड़कर मारे जानेवाले चन्द्रशेखर आजाद, चटगांव शस्त्रागार पर हमला करनेवाले बंगाल के क्रांतिकारी तथा राजस्थान के रावसाहब गोपालसिंहजी, केसरीसिंहजी बारहठ तथा उनके सुपुत्र प्रतापसिंहजी जिन्होंने अपने सर देश को स्वतंत्र बनाने के लिए चढ़ा दिये, उनको मैं आज श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

महात्मा गांधीजी और उनके साथ काम करने वाले सविनय अवज्ञा आन्दोलन चला कर जेलों में जाने वाले, सभी मेरे साथियों को मैं आज हार्दिक बधाई देता हूँ। साथ-साथ ही सन् १९४२ में "भारत छोड़ो" आन्दोलन करनेवाले, रेलों की पटड़िया उखाड़नेवाले, तार काटने वाले और हर प्रकार से तोड़-फोड़ करनेवाले, पुलिस की गोलियां लाठीचार्ज सहनेवाले सभी भाइयों के प्रयत्न का यह फल है कि आज का शुभ दिन हमें देखने को मिला।

सबसे अधिक श्रद्धा हमारी नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के प्रति है, उन्होंने भारत से बाहर जाकर सेना इकट्ठी की और भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए आज़ाद हिन्द सेना के सेनापति बनकर और झांसी की रानी नामक सेना संगठित करके अंग्रेजों को यह बतला दिया कि अब भारत में उनका राज्य नहीं टिक सकता। साथ-साथ देश के मजदूर और किसानों को उठाने

के लिए हजारों भाई जेलों में गये तथा मिलों के दरवाजों पर सम्पत्तिशाली लोगों की रक्षक अंग्रेज सरकार की गोलियाँ खाईं और जेलों में कष्ट भोगे, उनके प्रति भी मैं हार्दिक सम्मान प्रगट करता हूँ।

मुझे हर्ष है कि जो लेबरयूनियन और किसान कान्फ्रेंस आज से २५ वर्ष पहले हमने अजमेर में स्थापित की थी, वह अपने उद्देश्यों में सफलीभूत हो रही है और किसानों और मजदूरों का राज्य शीघ्र ही स्थापित होनेवाला है। आज के दिन लाल किले पर भारतीय झंडा लहराया जा रहा है, किस देशभक्त को प्रसन्नता न होगी। हम अजमेर के मि० वापट और रामजीलाल बन्धु जिन्होंने वीरतापूर्वक डोगरा शूटिंग और गिब्सन शूटिंग केस किया उनको भी नहीं भूल सकते।

भारत में हजारों गायें रोज मारी जाती हैं और गौओं के अभाव से दूध-घी नहीं मिलता है। खेती और अधिक अन्न उपजाने में बिना बैलों के हमें बड़ी भारी कठिनाइयाँ हो रही हैं। अतः और किसी बात पर नहीं तो कम कम सम्पत्तिशास्त्र की दृष्टि से गो-वध अवश्य बन्द होना चाहिये।

देशी राज्यों में उत्तरदायित्वपूर्ण शासन प्राप्त करने के लिये हमने सन् १९१८ से आन्दोलन प्रारम्भ किया और उसको हमारे साथी कर्मवीर श्री कन्हैयालालजी कलयंत्री, स्व. सेठ जमनालालजी बजाज, माननीय बृजलालजी बियानी, श्री० बा० गोविन्ददासजी, श्री रामनारायणजी चौधरी, स्व० अर्जुनलालजी सेठी, श्री विजयसिंहजी पथिक, स्व० श्री गौरीशंकरजी भार्गव श्रीमान् स्व० मोतीलालजी नेहरू, श्री पं० जवाहरलालजी नेहरू, श्री सरदार वल्लभ भाई पटेल, श्री. डा० राजेन्द्रप्रसादजी, श्री. मणिलालजी कोठारी, श्री स्वामी गोपालदासजी चुरू निवासी, देशभक्त दामोदरदासजी राठी, श्री. श्रीकृष्णदासजी जाजू. श्री प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति, श्री ला० देशबन्धु गुप्ता, श्री हरिभाऊजी उपाध्याय तथा बिड़ला बन्धुओं आदि अपने अनेकों सहयोगी देशभक्तों को इस शुभ दिन हार्दिक बधाई व श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

महात्मा गांधी के हम सब आभारी हैं कि उन्होंने २५ वर्ष निरन्तर प्रयत्न करके हमारे देश को आज का दिन देखने का अवसर दिया।

परमात्मा करे कि हम सब भाई-भाई आपस में मिलकर प्रेम से रहें और भारतमाता को सदा स्वतन्त्र और सुखी रखने के लिये दिन-रात त्याग, तप और बलिदान का जीवन बिताते हुए आर्य्यों का चक्रवर्ती राज्य न केवल भारत में परन्तु सारे संसार में स्थापित करें।

## भविष्य का प्रोग्राम

इस समय तो सबसे पहले जनता के सामने दो ही बातें रखनी चाहियें एक तो 'हिन्दी राष्ट्रभाषा' का सब हिन्दुस्तान में प्रचार हो और यही

कचहरियों व दफ्तरों की भाषा हो और यही शिक्षा का माध्यम हो। दूसरा 'गोरक्षा' का प्रश्न है, हिन्दुस्तान भर में कानून से गोवध बन्द होना चाहिये इन कार्यों को कार्यरूप में परिणत करने के लिये हमें अनेक विघ्न-बाधायें सहनी पड़ेंगी और आपत्तियाँ उठानी पड़ेंगी, परन्तु यदि आप त्याग, तप और बलिदान के साथ कार्य-क्षेत्र में कूद पड़ेंगे तो भारत का वेड़ा पार हो जायगा।

भारत जगद्गुरु रहा है और जगद्गुरु रहेगा। भारत माता का झण्डा सदा ऊंचा रहा है। ईश्वर से प्रार्थना है कि सदा हम विजयी रहें। बोलो! भारतमाता की जय! देश पर बलिदान होनेवाले देशभक्तों की जय!!

"जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं नर-पशु निरा है और मृतक समान है॥

□□

# शारदाजी का शुभ संदेश

मैं आपका अत्यन्त कृतज्ञ हूँ कि आपने मेरे ६६ वें जन्म-दिवस पर मेरे पास शुभ कामनायें भेजीं, और मुझे अधिक से अधिक देश-सेवा करने के लिये उत्साहित किया, यह सारे अभिनन्दन व कवितायें व श्रद्धाञ्जलियाँ जो आपने मेरे जैसे वैदिक धर्म के अतितुच्छ सेवक को भेंट की हैं, वे सब, मैं सादर सप्रेम जनता जनार्दन को भेंट करता हूँ और "इदन्नमम" का पाठ पढ़ता हुआ मेरे सब शुभ कर्म मैं परम पिता परमात्मा के चरणों में भक्ति से अर्पण करता हूँ।

मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा,
तेरा तुझ को सौंपते, क्या लगेगा मेरा,

वर्तमान शिक्षा प्रणाली जो पश्चिमी सभ्यता की बेटी है, वह जब तक आमूल-चूल परिवर्तन कर नहीं हटाई जायगी तब तक आर्य सभ्यता और आर्य-संस्कृति की रक्षा कदापि नहीं हो सकेगी। आर्यसंस्कृति त्याग, तप, बलिदान में है। यह शरीर परमात्मा का दिया हुआ है अतः इस शरीर को परमात्मा की सेवा में ही अर्पण करना हमारा धर्म है। परमात्मा की सेवा का अर्थ जनता जनार्दन की सेवा है, दुःखियों के दुःख मिटाना ही सच्चा ईश्वर भजन है। राम, कृष्ण, प्रताप, शिवा, शंकर, दयानन्द अनेक वीरों, संतों और नेताओं ने अनेक कष्ट सहकर यही बतलाया की दुःखियों की सेवा करो। इस समय भारत को सदाचार निर्माण की अत्यन्त आवश्यकता है। बिना सदाचार के हम भारत को गारत करने वाले भ्रष्टाचार, अत्याचार, कालाबाजारी को कभी नहीं मेट सकते, जनता भारत में रिश्वतखोरी, बेईमानी, कपट, छल, भुखमरी, दरिद्रता, बेरोजगारी से तंग है। अब हमको चाहिये कि हम स्कूलों में ऐसी शिक्षा दें ताकि विद्यार्थी जब स्कूल से निकले तो नौकरी के लिये मारा-मारा न फिर कर अपने पैरों आप खड़ा हो जाये और अपना पेट भरने जितना अन्न कमा ले। हमें दुःख है कि अंग्रेजी जमानेवाली शिक्षा अब भी दी जा रही है, लाखों विद्यार्थी मैट्रिक पास कर बेकार घूम रहे हैं, संस्कृत पढ़े मैक्समूलर आदि अंग्रेज विद्वानों ने हमारे प्राचीन गौरव को मिटाने के लिये वेदों के अंग्रेजी में भद्दे अनुवाद कर हमारी श्रद्धा हमारे धर्म ग्रन्थों से हटादी, हमें हमारे विश्वविद्यालयों से ऐसे सब ग्रन्थों की पढ़ाई बन्द कर देनी चाहिये, व्यायाम और परिश्रम से जी चुरानेवाले रात-दिन सिनेमा जाने वाले, कामोद्दीपक गाने गानेवाले, ब्रह्मचर्यहीन नवयुवकों से राष्ट्र का उत्थान

नहीं हो सकता। अब देश को लाखों की तादाद में मैट्रिक से निकले हुये इन बेकार फेशनेबुल बाबुओं की फौज से कोई लाभ नहीं। पश्चिमी सभ्यता में रंगे हुये कोरे कोट-पेंट धारी नेकटाई लगा कर कुर्सी पर बैठकर हुक्म चलाने वाले बाबुओं की देश को आवश्यकता नहीं है।

राम के उज्ज्वल चरित्र, कृष्ण की राजनीति के आप वारिस हैं। आपके पास शंकर का पाशुपत, अर्जुन का गाण्डीव, द्रोण का ब्रह्मास्त्र है, और दधीचि ऋषि का बलिदान है। आप मृत्युञ्जय हैं। आपने प्राचीन, मध्यकाल तथा अर्वाचीन काल में अनेक तेजस्वी वीर-वीरांगनायें उत्पन्न की हैं। अपने पूर्वजों के गौरव को स्मरण करो। दूर क्यों, जाते हो, इसी वर्ष इसी जून मास में आपके ही वीर भारतीय तेनसिंह शेरपा ने सबसे पहले २९ हजार फीट की ऊंचाईवाले गौरीशंकर नामक हिमालय की संसार में सबसे ऊंची पर्वत की चोटी पर सबसे पहले पहुँच कर भारत के गौरव की रक्षा की है। और वहां अंग्रेज और यूरोपियन से आगे जाकर भयंकर बर्फीले तूफानों को पार करके भारतीय झण्डा गाड़ा है। महर्षि दयानन्द ने हमें यही शिक्षा दी है कि तर्क और बुद्धि की तुला पर तोल कर अपने विचारों का प्रचार करने का प्रत्येक व्यक्ति को पूरा-पूरा अधिकार है, इस सत्य वैदिक धर्म प्रचार के लिये पहले भी, अब भी और आगे भी, आर्य नर-नारियों ने अपना सर्वस्व न्यौछावर किया है और करेंगे। हम मिट जायेंगे, इसकी कोई परवाह नहीं। परन्तु हमारा परम पवित्र धर्म सदा जीवित रहे और आर्य संस्कृति का प्रसार कर हम रामराज्य स्थापित करें, यही हमारी सदा से अभिलाषा रही है। भगवान मुझ में बल दे कि मैं मेरी आयु के शेष भाग में भी इन व्रतों को भली प्रकार कर्मवीर बन कर निभाऊं।

## राष्ट्र भाषा हिन्दी का निरन्तर प्रचार करो

आज कल भाषावार प्रान्तों के बनाने पर चारों ओर से दबाव डाले जा रहे हैं। आंध्र प्रान्त तो बन ही चुका है। युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द एक भाषा, एक धर्म, एक विचार के समर्थक थे। इसी वास्ते आर्य संस्कृति के प्रचार पर बल देते थे। संस्कृतजन्य राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रबल प्रचारक थे और आर्यसमाज उसी पक्ष का है। हम चाहते हैं कि जो बात श्री बाबू पुरुषोत्तमदासजी टंडन हिन्दी भाषा के प्रचार के लिये कह रहे हैं, वह हमारी सरकार कार्य रूप में परिणत करे। हिन्दी में संस्कृत के नब्बे प्रतिशत शब्दों से अधिक शब्द हैं। अतः हिन्दी भाषा-भाषी कभी भी संस्कृत के विरोधी नहीं हो सकते, कुछ मद्रासी तथा दक्षिणी वृथा ही हिन्दी का विरोध कर रहे हैं, यह शोचनीय है। मैं मेरे जन्म-दिवस पर प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं निरन्तर अपने व्याख्यानों और लेखों द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी का ही प्रचार करूंगा।

मेरे जीवन में प्रारम्भ से ही अब तक प्रभु की कृपा से ईश्वर-विश्वास और निर्भयता रही है। मैं परिस्थितियों को नहीं कोसता और न फलित ज्योतिष में विश्वास करता हूँ। मेरा विश्वास है कि इस संसार में वेही मनुष्य सफल होते हैं जो अपनी परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना लेते हैं। और यदि कभी न बना पायें तो अपने अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न कर लेते हैं। मैं इस बात में विश्वास करता हूँ "मर्द वो हैं जो जमाने को बदल देते हैं, जमाना हमें बदल नहीं सकता।" मैंने कायरता से कभी किसी के सामने हाथ नहीं जोड़े। मैं मेरे नवयुवक मित्रों को यह संदेश देता हूँ कि बुराइयों से युद्ध करो, और अत्याचार और अन्याय का निराकरण करना अपना स्वभाव बनाओ। परमात्मा मुझे बल दे कि मैं अपने शेष जीवन में भी इसी प्रकार निर्भय आर्यवीर बना रहूँ। वे लोग आर्यसमाज को समझे ही नहीं हैं, जो मेरे जैसे आर्यसमाजी को साम्प्रदायिक बतलाते हैं। हम तो मानव-समाज के कल्याण की भावना से काम करते हैं। अत्याचार, अन्याय का विरोध करना हमारा मुख्य धर्म है। हम तो सब को यही उपदेश देते हैं कि जीवन में सत्य, विवेकशीलता, शक्ति और क्षात्रबल धारण करने में ही मनुष्यता है। महर्षि दयानन्द कदापि साम्प्रदायिक नहीं थे, वे तो संसार का कल्याण और उपकार करना हमारा मुख्य धर्म बतला गये हैं। परम पिता हमें बल दे कि हम हमारे गुरु महर्षि दयानन्द के पदचिह्नों पर चलते हुये संसार के कल्याण में जुट जावें।

स्मरण रहे, बिना सामाजिक क्रान्ति, राजनैतिक सुधार नहीं हो सकता ......... हम भारतीय सभ्यता का पवित्र ध्वज शुभ्र हिमालय की हिमाच्छादित चोटियों और हिन्द महासागर की अनन्त तरंगों को लांघ कर द्वीपान्तरों में लहरायेंगे और वृद्ध भारत को पुनः संसार का गुरु बनायेंगे।.........हम अंधविश्वास के खण्डित बन को जलाकर पवित्र भारतीयता का इन्द्रप्रस्थ बसायेंगे।"

(अ० भा० राजस्थानी नवजीवन मण्डल, अजमेर के द्वितीय अधिवेशन की स्वागतकारिणी समिति के सभापति पद से प्रदत्त भाषण दि. ११ अप्रेल १९२९)

× × × ×

जिस प्रकार भगवान् कृष्ण सुदामा से मिले थे तथा जिस प्रकार उन्होंने राजसूय यज्ञ में पैर धोने का काम लिया था, उसी प्रकार हमें भी जाति की छोटी से छोटी सेवा करने के लिये सदैव उद्यत रहना चाहिये। छूत-अछूत का भेद मिटा कर आब्राह्मणचाण्डाल पर्यन्त एक संगठन में बंधकर हिन्दू जाति का उद्धार करना चाहिये।...... ....सुमेरु पर्वत सोने का होगा, परन्तु इससे हमें क्या ? क्योंकि हमें तो सुमेरु पर्वत के दर्शन नहीं होते और न उसे उपयोग में ही ला सकते हैं। हमें तो भूमि के रजकण ही अच्छे लगते हैं,

जो हमारे गरीव किसानों के खेतों पर गाते हुये गीतों में सम्मिलित होते हैं और शाम को खेतों से थक कर लौटते हुये किसानों के पारस्परिक प्रेम वार्तालाप में सम्मिलित होते हैं। कभी तो वह मार्ग की धूलि से उठकर हमारे मस्तक पर बैठते हैं। हमें उस विजली से क्या प्रयोजन जो वादलों की टक्कर से गरजने के वाद तेजी से शक्ति फेंकती है, बच्चों और स्त्रियों को भयभीत कर देती है और जरा सी देर में विलीन हो जाती है। हमें तो गरीब किसानों की झोपड़ी में जलता हुआ दीपक ही भला मालूम होता है जो अंधेरे में आनेवाले व्यक्तियों का पथप्रदर्शन करता है तथा जो दूसरों के उपकार लिये अपने-आपको जलाता है और जिसकी गर्दन जव गुल (दीपक की वत्ती से जो लाल हिस्सा बत्ती का आगे आता है, वह गुल कहलाता है) के रूप में काटी जाती है तो और भी अधिक उज्ज्वल हो संसार को प्रकाशित कर देता है। जिसकी परोपकार वृत्ति इतनी है कि वह अपने नीचे अंधेरा रख कर भी सारे संसार को सुप्रकाशित करता है। समाज के संगठन का आधार पैसा नहीं, वल्कि सेवा है। जहाँ पर सेवा मानवीय सम्बन्धों का मूल आधार होता है, वहाँ पर प्रेम जीवन का स्रोत सिद्ध होता है।............प्राचीन काल में प्रेम तथा सेवा समाज के आधार थे। विद्या का दरिद्रता मे नाता जोड़ा गया था। धन को समाज में तीसरा तथा शक्ति को दूसरा स्थान दिया गया था।............प्राचीन आर्य संस्कृति को पुनः स्थापित करने के लिये पैसे की प्रधानता के विरुद्ध जो विद्रोह खड़ा किया गया है, वह न्याय संगत ही है। ............प्राचीन काल में सबको समान सुविधायें दी जाती थीं और धन के मुकाबिले में ज्ञान को महत्त्व दिया जाता था (प्राचीन काल में स्वेच्छा पूर्वक स्वार्थ का त्याग करने में लोग अपना गौरव समझते थे।"

(अखिल महाराष्ट्र नवयुवक परिषद के पण्ढरपुर अधिवेशन के अध्यक्ष पद से दिया गया भाषण।)

□□

# चांदकरण शारदा : साहित्यकार के रूप में

शारदाजी के बहुमुखी व्यक्तित्व का एक रूप साहित्यकार का भी है। वे सशक्त लेखक थे। अपने विचारों का प्राणवान् शैली में प्रमाण पुरस्सर उपस्थित करना उनके लेखन की विशेषता थी। विद्यार्थी जीवन से ही उनकी लेखन प्रतिभा का चमत्कार दृष्टिगोचर होने लगा था। आश्चर्य है कि एक महान् देशभक्त, समाजसेवी और सार्वजनिक नेता की प्रथम कृति एक उपन्यास थी। जब शारदाजी आगरा में अध्ययन करते थे, उसी समय उन्होंने 'कॉलेज हास्टल' शीर्षक यह उपन्यास लिखा। इसके कुछ परिच्छेद डा. केशवदेव शास्त्री द्वारा सम्पादित 'नवजीवन' मासिक पत्र में धारावाही छपते रहे। कालान्तर में यह उपन्यास पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित हुआ। उपन्यास यद्यपि आदर्शवादी शैली में लिखा गया है, परन्तु उसमें हास्यरस का अच्छा समावेश हुआ है। लेखक के आदर्शवादी विचारों की झलक सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है। लेखक की वर्णन-चातुरी प्रशंसनीय है। यदि शारदाजी का सार्वजनिक जीवन में प्रवेश नहीं होता और वे अपनी औपन्यासिक प्रतिभा को ही विकसित करते तो इसकी पूरी सम्भावना थी कि वे हिन्दी के एक गण्यमान्य उपन्यासकार के रूप में ख्याति अर्जित करते। तत्कालीन पत्र पत्रिकाओं में इस कृति की प्रशंसापूर्ण समालोचनायें प्रकाशित हुईं। इसका तृतीय संस्करण विद्यार्थी मनोरंजनमाला के अन्तर्गत १९५० वि. में प्रकाशित हुआ।

शारदाजी जिस समय भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में अपने सम्पूर्ण उत्साह से भाग ले रहे थे, उस समय उन्होंने कतिपय ऐसे ग्रन्थ लिखे जो उनकी राजनीतिक धारणाओं के परिचायक थे। नागपुर कांग्रेस के अवसर पर उन्होंने 'असहयोग' नामक पुस्तक लिखी। इसमें महात्मा गांधी द्वारा प्रवर्तित असहयोग आन्दोलन के विविध पहलुओं पर सर्वांगीण प्रकाश डाला गया है। असहयोग आन्दोलन अपने-आप में एक क्रान्ति थी, जो देश की समग्र सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक व्यवस्था को परिवर्तन करने के लिये ही प्रवर्तित किया गया था। उस समय के नरमदली राजनीतिज्ञ असहयोग की महत्ता तथा उपयोगिता को स्वीकार करने में अपने को असमर्थ पाते थे। उनके असहयोग के सम्बन्ध में विभिन्न तर्क तथा सन्देह थे। शारदाजी ने १९२२ में 'माडरेटों की पोल' शीर्षक पुस्तक लिख कर असहयोग विषयक सभी आशंकाओं का तर्कपूर्ण ढंग से समाधान किया है।

शारदाजी की अन्य कृतियाँ मुख्यत: सामाजिक तथा धार्मिक विषयों से

सम्बन्धित हैं। महर्षि दयानन्द की जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में शारदाजी ने एक पुस्तक लिखी—दलितोद्धार। यह एक भाषण शैली में लिखा गया ग्रन्थ है, जिसमें आर्यसमाज द्वारा संचालित अछूतोद्धार की महत्ता और उपयोगिता को विभिन्न शास्त्रीय प्रमाणों द्वारा सिद्ध किया गया है। इसका प्रथम संस्करण १९८१ वि. में प्रकाशित हुआ। जब यह शीघ्र ही समाप्त हो गया तो एक वर्ष बाद ही १९८२ वि. में द्वितीय संस्करण प्रकाशित हुआ। ऋषि दयानन्द निर्वाण अर्द्धशताब्दी पर दलितोद्धार का परिवर्द्धित संस्करण छापा। श्री कल्याणसिंह वैद्य इसके सम्पादक थे। इस संस्करण में वर्णपरिवर्तन विषयक अनेक नवीन प्रमाण संगृहीत किये गये तथा महात्मा गांधी के अछूतोद्धार सम्बन्धी विचारों को भी संकलित किया गया है।

शुद्धि—यह एक लघु पुस्तक है। स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा जब आर्यधर्मेतरों की शुद्धि का आन्दोलन चलाया गया तो चांदकरण जी ने यह पुस्तक लिखी।

शुद्धि चन्द्रोदय—यह अपने विषय की एक अपूर्व पुस्तक है। विभिन्न शास्त्रीय एवं ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर इसमें शुद्धि का तात्त्विक विवेचन किया गया है। इस ग्रन्थ को लिखने की प्रेरणा शारदाजी को उस समय मिली जब वे शुद्धि का शंखनाद करते हुये समस्त देश में भ्रमण कर रहे थे। यह ग्रन्थ शुद्धिविषयक जानकारी का एक विश्वकोश ही है। विद्वान् लेखक ने अन्य मतावलम्बियों के आर्यधर्म में प्रवेश का औचित्य विभिन्न ऐतिहासिक प्रमाणों द्वारा सिद्ध किया है। शुद्धि को भारतीय इतिहास के सभी कालों में अपनाया जाता रहा यह बताने के लिये विद्वान् लेखक ने हिन्दू शासनकाल, मुस्लिम शासनकाल तथा सिक्ख राजपूत एवं मराठा इतिहास की विभिन्न घटनाओं का उल्लेख किया है। शुद्धि के सम्बन्ध में जो विभिन्न समस्यायें उत्पन्न हुईं, उनका भी लेखक ने विशद विवेचन किया है। शारदाजी ने इस ग्रन्थ को शुद्धि आन्दोलन के प्रवर्तक स्वामी श्रद्धानन्द जी की पुण्य स्मृति में समर्पित किया। ग्रन्थ का प्रथम संस्करण १९८४ वि. में प्रकाशित हुआ।

विधवा विवाह करो—विधवा विवाह के समर्थन में लिखी गई यह लघु पुस्तक १९८१ वि. में प्रकाशित हुई।

शारदा एक्ट—बाल विवाह का प्रतिरोधक कानून आर्यसमाज के प्रसिद्ध लेखक, विद्वान् तथा नेता दीवान बहादुर हरविलास के प्रयत्नों से सर्वप्रथम १९२९ में भारतीय विधायिका द्वारा स्वीकार किया गया था। पुनः १९३८ ई. में इस कानून में कतिपय महत्त्वपूर्ण संशोधन किये गये। इस पुस्तक में लेखक ने बाल-विवाह-निषेधक कानून का मूल आलेख देकर बाल-विवाह विषयक विभिन्न प्रश्नों का विवेचन किया है। इसका प्रकाशन १९९५ वि. में हुआ। इसका एक संक्षिप्त संस्करण भी प्रकाशित हुआ था।

**हिन्दू संगठन**—संगठन की महत्ता का विवेचन इस पुस्तक का विषय है।

वानप्रस्थ ग्रहण करने के पश्चात् शारदा जी ने आध्यात्मिक साधना की ओर विशेष ध्यान दिया। इस काल में इनकी निम्न पुस्तकें प्रकाशित हुईं—

**संध्या—आर्यों की दैनिक उपासना**—महर्षि दयानन्द प्रणीत दैनिक संध्योपासना पर यह एक विवेचनात्मक ग्रन्थ है। लेखक ने अपनी विस्तृत भूमि में आर्यों की उपासना प्रणाली का विवेचन करते हुये संध्या की उपयोगिता पर प्रकाश डाला है। २०१२ वि. में यह ग्रन्थ शारदा सत्कार समिति अजमेर द्वारा प्रकाशित हुआ।

**सृष्टि की कहानी (अर्थात् वैदिक सृष्टि विज्ञान और डार्विन मत) भाग १**—लेखक ने सृष्टि रचना के सम्वन्ध में वैदिक मान्यताओं का निरूपण पुरुषसूक्त के आधार पर किया है। साथ ही प्रसिद्ध वैज्ञानिक डा. चार्ल्स डार्विन द्वारा प्रतिपादित विकासवाद की समीक्षा भी इस पुस्तक की विशेषता है। लेखक ने अपने मत को प्रामाणिक बनाने के लिये विभिन्न प्रमाण प्रस्तुत किये हैं। यह पुस्तक लेखक के विशाल स्वाध्याय की परिचायिका है।

**नोआखाली का भीषण हत्याकाण्ड**—देश विभाजन से पूर्व मुस्लिम लीग की सीधी कार्यवाही के परिणामस्वरूप पूर्वी बंगाल के नोआखाली जिले में भीषण साम्प्रदायिक उत्पात हुये। शारदा जी स्वयं पीड़ित हिन्दुओं की सहायतार्थ नौआखाली गये थे। यह रोमाञ्चकारी विवरण उस भयंकर त्रासदी का यथार्थ परिचायक है।

शारदा जी अपनी आत्मकथा तथा अफ्रीका-यात्रा को पुस्तक रूप में प्रकाशित देखने के इच्छुक थे, परन्तु १९५७ ई. में उनके निधन के कारण ये ग्रन्थ प्रकाश में नहीं आ सके।

## शारदा जी—पत्रकार के रूप में—

सार्वजनिक जीवन में भाग लेनेवाले व्यक्ति के लिये पत्रकारिता से किसी न किसी रूप में सम्वन्धित हो जाना स्वाभाविक ही है। चांदकरण जी का पत्र पत्रिकाओं से वहुत पुराना सम्वन्ध रहा है। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मुख्यपत्र आर्यमार्तण्ड में उनके सैकड़ों लेख प्रकाशित हुये। १९५०-५१ के वर्षों में उन्होंने आर्यमार्तण्ड का स्वयं सम्पादन करना आरम्भ किया। उनके सम्पादन काल में आर्यमार्तण्ड आर्यजगत् के सर्वश्रेष्ठ पत्रों में गिना जाने लगा। उच्चस्तरीय लेख तथा विवेचनापूर्ण सामग्री के कारण आर्यसमाज पत्रकारिता में आर्यमार्तण्ड ने एक नया मानदण्ड स्थापित किया। इसी अवधि में मार्तण्ड के अनेक विशेषांक निकले। विशेष रूप से २००७ वि. (मार्च १९५१) की शिवरात्रि पर प्रकाशित 'ऋषि बोधांक'

अपनी पठनीय सामग्री तथा अपूर्वसाजसज्जा के कारण विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस वर्ष तक आर्यमार्तण्ड को प्रकाशित होते २९ वर्ष समाप्त हो चुके थे। फलतः देश के विशिष्ट नेताओं, विद्वानों तथा गण्यमान्य व्यक्तियों ने आर्यमार्तण्ड के प्रति अपनी शुभकामनायें प्रेषित करते हुये सम्पादक के रूप में शारदाजी का अभिनन्दन किया। मार्तण्ड के इन प्रशंसकों में माननीय माधव श्री हरि अणे, राज्यपाल बिहार; माननीय कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी, खाद्यमन्त्री भारत सरकार, श्रीगणेश वासुदेव मावलंकर, स्पीकर, लोकसभा; श्री पुरुषोत्तम दास टण्डन, कांग्रेसाध्यक्ष; डा. गोपीचन्द भार्गव, मुख्यमन्त्री पंजाब; श्री ब्रजलाल वियाणी, सदस्य लोकसभा; श्री देशबन्धु गुप्त एम. पी.; दानवीर सेठ जुगलकिशोर बिड़ला; श्री बसन्तकुमार बिड़ला तथा घनश्यामसिंह गुप्त, स्पीकर मध्यप्रदेश विधान सभा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

इसके अतिरिक्त शारदाजी ने आर्यजगत्, आर्यमित्र, आर्यसन्देश, आर्यशक्ति आदि पत्रों में अनेक लेख लिखे। आर्यसामाजिक पत्रों के अतिरिक्त नवभारत टाइम्स, दिल्ली; राजस्थानी वीर पूना, आदि में भी उनके विभिन्न लेख सामयिक सामाजिक—राजनैतिक प्रश्नों पर प्रकाशित हुये। जब वे अफ्रीका-यात्रा पर गये तो दि डेली जैंजीरबार वॉयस (The Daily Zanzibar Voice) दि कॉलोनियम टाइम्स नैरोवी (The Colonial Times Narobi) दि केन्याडेली मेल मोम्बासा ((The Kenya Daily mail) दि मोम्बासा टाइम्स (The Mombasa Times) आदि पत्रों में भी भारतीय समस्याओं पर प्रकाशित हुये। पत्र-पत्रिकाओं की स्वाधीनता तथा पत्रकारों के हितों की रक्षा के लिये अजमेर में नारी जागरण की अग्रदूत तथा स्त्री शिक्षा की वरिष्ठ प्रचारिका स्व. श्रीमती गुलाब देवी 'चाची जी' के अभिनन्दन ग्रन्थ का सम्पादन शारदाजी का एक अन्य उल्लेखनीय कार्य था। यह अभिनन्दन ग्रन्थ चाची जी की ८० वीं वर्षगांठ पर मार्च १९५४ में समर्पित किया गया। नारी समस्याओं पर विभिन्न उच्च कोटि के लेखों का संग्रह तथा राजस्थान में नारी जागरण का सिलसिलेवार इतिहास, इस अभिनन्दन ग्रन्थ की विशेषता है।

शारदाजी प्रारम्भ से ही पूर्ण तत्पर रहे। अजमेर पत्रकार परिषद् के वे अध्यक्ष रहे तथा पत्रकारों के अधिकारों की रक्षा के लिये उनको अनेक संघर्ष करने पड़े। अजमेर से प्रकाशित होनेवाले सिंधी दैनिक 'हिन्दू' के विरुद्ध जब सरकार ने कार्यवाही की तथा उसे सेन्सर करना आरम्भ किया, तो शारदाजी ने उसका विरोध किया तथा सेन्सर के आदेशों को निरस्त कराया। १९५०-५१ में अखिल भारतीय समाचार पत्र सम्पादक सम्मेलन का दिल्ली में अधिवेशन स्व. देशबन्धु गुप्त (सम्पादक तेज) की अध्यक्षता

में हुआ तो शारदाजी भी उसमें सम्मिलित हुये तथा सम्पादकों के समक्ष एक प्रेरणाप्रद भाषण दिया। उसी अवसर पर आपने तत्कालीन राष्ट्रपति डा. राजेन्द्रप्रसाद से भी भेंट की।

## राष्ट्रभाषा हिन्दी और शारदाजी—

आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने अपनी दूरदर्शिता के कारण हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने पर बल दिया। आर्यजनों की समस्या बोल-चाल की भाषा होने के कारण उन्होंने हिन्दी को आर्य-भाषा के नाम से अभिहित किया तथा संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् होते हुये भी अपने ग्रन्थों की रचना हिन्दी में की। आर्यसमाज ने भी हिन्दी के प्रचार और प्रसार के लिये अपने संस्थापन काल से ही जो प्रयत्न किया, वह सर्व-विदित है। आर्यसमाज के एक सक्रिय कार्यकर्त्ता होने के कारण राष्ट्रभाषा के प्रति शारदा जी को सहज अनुराग था। वे हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशनों में निरन्तर भाग लेते रहे तथा १९४० से उन्होंने राष्ट्रभाषा के प्रचार में सक्रिय रूप से योग दिया। वे बीसों वर्षों तक सम्मेलन की परीक्षाओं के केन्द्रव्यवस्थापक भी रहे।

अपनी ६० वीं वर्षगांठ पर भाषण देते हुये शारदाजी ने राष्ट्रभाषा की ज्वलन्त समस्या पर अपने ओजस्वी उद्‌गार इस प्रकार व्यक्त किये—लगातार आन्दोलन के बाद अब बड़ी कठिनता से अदालतों में हिन्दी हो पाई है। .... हमारे राष्ट्रीय जीवन में हम कदापि अंग्रेजी को स्थान नहीं देंगे। मुसलमानी काल में हम पर उर्दू फारसी लादी गई और अंग्रेजी राज्य में हम पर अंग्रेजी भाषा लादी गई। ....माननीय श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त ने ठीक ही कहा है कि पारिभाषिक शब्दों का अनुवाद करने में संस्कृत का सहारा लिये बिना काम नहीं चल सकता।

प्रत्येक देवनागरी के समर्थक देशभक्त का कर्तव्य है कि राष्ट्रभाषा हिन्दी सर्व गुणआगरी देवनागरी के पक्ष को निर्बल बनाने वालों का तीव्र विरोध करे और आर्य संस्कृति की रक्षा के लिये हिन्दी भाषा की रक्षा का व्रत ले। हमें मातृभाषा हिन्दी की रक्षा के लिये श्री पुरुषोत्तम दास टण्डन के पद चिह्नों पर चल कर कार्य करना चाहिये और आम बोलचाल की संस्कृत जन्य हिन्दी का प्रचार—जो महर्षि दयानन्द ने और देश के मान्य विद्वानों ने प्रारम्भ किया था, उसी का प्रचार करना चाहिये। अजमेर मेरवाड़ा की अदालतों में हिन्दी का प्रवेश—१९४१ में बैरिस्टर फतहचन्द मेहता द्वारा सम्पादित राजपुताना इको (Rajputana Ecko) नामक समाचार पत्र में अजमेर की अदालतों में हिन्दी भाषा में प्रार्थना पत्र अभियोग पत्र आदि स्वीकार किये जाने के समर्थन में शारदा जी ने एक प्रभावशाली लेखमाला प्रकाशित कराई। इसका परिणाम यह निकला कि इस वर्ष अजमेर मेरवाडा के मुख्य आयुक्त ने हिन्दी में लिखे प्रार्थना पत्रों को स्वीकार किये जाने का आदेश प्रसारित कर दिया।

□□

# शुद्धि आन्दोलन में चांदकरण शारदा

वैदिक धर्म की व्याप्ति मनुष्यमात्र के लिये है, उसे किसी देश, काल, वर्ग तथा सम्प्रदाय विशेष की सीमा में आबद्ध नहीं किया जा सकता। वेदों में आर्य और दस्यु के रूप में जो दो प्रकार के मानव बताये गये हैं वे गुण-कर्मानुसार ही हैं न कि जन्मगत जाति के अनुसार। मनुस्मृति में यह उल्लेख मिलता है कि ब्राह्मणों के अदर्शन से क्षत्रिय जातियाँ द्विजोचित संस्कारों से भ्रष्ट होकर वृषलत्व को प्राप्त होती हैं। इसी प्रकार ये आर्येतर जातियां कालान्तर में पौण्ड्रक, औड्र, द्रविड़, किरात, कम्बोज, यवन, शक, पारद, अपल्हव, चीन, दरद और खश आदिनामों से अभिहित होने लगीं।

परिणाम यह निकला कि प्राणवान् आर्य जाति विभिन्न प्रकार के अनार्य संस्कारों को ग्रहण कर लेने के कारण संकीर्ण और संकुचित बनती चली गई। इसका एक दुखद फल यह निकला कि अन्य मतावलम्बियों को अपने भीतर समाविष्ट करना तो दूर, उसमें स्वधर्मियों की रक्षा की क्षमता भी नष्ट हो गई। सहस्रों लाखों की संख्या में हिन्दू मुसलमान और ईसाई बन गये। महाराष्ट्री विद्वान् पं. नीलकण्ठ शास्त्री गोरे, बंगाली कवि माईकेल मधुसूदनदत्त, कांग्रेस के प्रथम प्रधान श्री व्योमेशचन्द्र बनर्जी आदि गण्यमान्य पुरुषों का हिन्दू धर्म त्याग कर ईसाई बन जाना एक विडम्बना तथा लांछना पूर्ण स्थिति थी।

ऐसी परिस्थिति में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अत्यन्त दूरदर्शिता पूर्वक आर्यधर्मेतरों को पुनः वैदिक संस्कृति में दीक्षित कर उन्हें सुदृढ़ आर्य-समाज का एक उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण घटक बनाने के लिये शुद्धिचक्र का प्रवर्तन किया। उन्होंने देहरादून में स्वकरकमलों से मुहम्मद ऊमर नामक एक मुसलमान को वैदिक धर्म की दीक्षा देकर अलखधारी नाम दिया। तत्पश्चात् जब भारत के राजनैतिक क्षितिज पर मुस्लिम साम्प्रदायिकता का धूमकेतु अपनो भयावनी छाया डालने लगा, उस समय आर्यसमाज के शिरोमणि नेता स्वामी श्रद्धानन्दजी ने एक बार पुनः शुद्धि का शंखनाद किया। १९२३ में उन्होंने भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना की।[1] स्वयं स्वामी श्रद्धानन्द सभा के प्रधान थे। उपप्रधान महात्मा हंसराज जी

---

१. १३ फरवरी १९२३ को जब आगरा में 'भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा' की स्थापना की गई, उस समय प्रारम्भिक विचार विमर्श करने तथा सभा के उद्देश्यों का निर्धारण करने के लिये बृहद् हिन्दू समाज के विभिन्न सम्प्रदायों के ८५ प्रतिनिधि आमंत्रित किये गये थे।

बनाये गये । इस प्रकार शुद्धि के कार्य में आर्यसमाज के सभी नेताओं ने अपना पारस्परिक भेदभाव भुलाकर योगदान दिया ।

स्वामी श्रद्धानन्दजी के नेतृत्व में नौमुसलिम मलकाने राजपूतों को पुनः हिन्दूधर्म में दीक्षित करने के विचार से आगरा, मथुरा तथा भरतपुर के समीप रहने वाले मलकानों के गांव के गांव शुद्ध किये गये । चाँदकरण शारदा इस शुद्धि यज्ञ के प्रमुख होता बने । लगभग ४०००० मलकानों को पुनः हिन्दू धर्म में प्रवेश मिला । राजस्थान और उत्तरप्रदेश के क्षत्रियों ने इस कार्य में पूर्ण सहयोग किया । शाहपुरा नरेश राजाधिराज नाहरसिंह जी स्वयं उपस्थित हुये तथा मलकानों को पूर्ण आदर देकर क्षत्रिय वर्ग में सम्मिलित किया । शारदाजी तथा उनके सहयोगी पं. रामसहायजी आदि उपदेशक कार्यकर्त्ताओं का इस शुद्धि कार्य में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा । इसी प्रकार अजमेर जिले के चीते, मेहरात, रावत आदि जातियों को ईसाई और मुसलमान होने से बचाने का एक महत्त्वपूर्ण अभियान शारदाजी द्वारा संचालित किया गया । यदि इन पिछड़ी जातियों के प्रति हिन्दू जाति अपने कर्त्तव्य को विस्मृत नहीं करती तो कोई कारण नहीं कि वे अन्य धर्मप्रचारकों के आकर्षक प्रलोभनों में पड़ कर विधर्मी बनते । वस्तुतः शुद्धि कार्य के प्रति शारदाजी आजीवन निष्ठावान् रहे । शुद्धि और संगठन के प्रति शारदाजी ने सर्वप्रथम अपना सुविचारित मत १९२२ में अखिल भारतीय आर्य स्वराज्य सभा के वार्षिक सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुये लाहौर के ब्रैडला हॉल में व्यक्त किया था ।

शुद्धि के सम्बन्ध में चाँदकरण जी ने महात्मा गांधी से भी विचार-विमर्श किया था । महात्माजी का शुद्धि के प्रति दृष्टिकोण पर्याप्त तर्कपूर्ण नहीं था । वे मानते थे कि शुद्धि एक नया आन्दोलन है जो आर्यसमाजियों के द्वारा ईसाइयों की नकल करके चलाया गया है । महात्मा जी से भेंट करने हेतु शारदा जी बम्बई के निकट जुहू नामक स्थान पर गये जहाँ महात्मा जी स्वास्थ्य लाभ कर रहे थे । उस समय दीनबंधु सी. एफ. एण्ड्रूज तथा सेठ जमनालाल जी बजाज भी महात्मा जी के निकट थे । शारदा जी ने दृढ़तापूर्वक कहा कि शुद्धि आन्दोलन नया नहीं है । हिन्दू धर्म में इतर धर्मावलम्बियों का प्रवेश सदा से होता रहा है, यह सिद्ध करने के लिये उन्होंने सुप्रसिद्ध पुरातत्त्वज्ञ डॉ० भाण्डारकर कृत Foreign Elements in Hindu Society के उद्धरण भी प्रस्तुत किये । शुद्धि के समर्थन में शारदाजी ने देश के विभिन्न भागों में सहस्रों भाषण देकर प्रबल जनमत तैयार किया था ।

**महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर से शुद्धिविषयक वार्तालाप—**

बहुत कम लोगों को ज्ञात होगा कि शारदाजी ने विश्वकवि रवीन्द्रनाथ से भेंटकर उनसे शुद्धि और संगठन की उपयोगिता के सम्बन्ध में प्रश्नोत्तर किये थे । ७ दिसम्बर १९२३ को महाकवि के बड़ोदा आगमन पर शारदा जी

ने राज्य के अतिथिगृह में महाकवि से भेंट की। उन्होंने जब शुद्धि और संगठन के सम्बन्ध में महाकवि ठाकुर से पूछा तो उत्तर में रवि बाबू ने कहा "ये दोनों (शुद्धि एवं संगठन) बड़ी भारी लहरें हैं और मैं इनको पसन्द करता हूं। इन लहरों से भारत को लाभ होगा।" शारदाजी के यह कहने पर कि मुसलमान लोगों ने तथा कुछ कांग्रेसी नेताओं ने भी शुद्धि एवं संगठन का विरोध किया है, महाकवि बोले—"यह विरोध उचित नहीं है। मेरी समझ में नहीं आता कि मुसलमान भाई इनका क्यों विरोध करते हैं जब कि वे स्वयं दूसरे धर्मवालों को मुसलमान बना लेते हैं।" वार्तालाप के इसी प्रसंग में महाकवि ने स्पष्ट किया कि जब तक सामाजिक सुधार नहीं होगा तब तक स्वराज्य प्राप्त नहीं हो सकता।

**गुजरात में शारदाजी द्वारा शुद्धि कार्य—**

गुजरात में आगाखानी फिर्के के मुस्लिम प्रचारकों ने हिन्दुओं की अछूत जातियों में अपना प्रचार बढ़ा रक्खा था तथा वे उन्हें मुसलमान बनाने के यत्न करते थे। शारदाजी ने इसका प्रतिरोध करने के लिये बड़ौदा में शुद्धि सभा की स्थापना की तथा पं. आनन्दप्रियजी के सहयोग से नवीन आगाखानी मुसलमानों की शुद्धि का कार्य प्रारम्भ किया। इस कार्य में उन्हें स्व. दानवीर जुगलकिशोर बिड़ला तथा राजा नारायणलाल पित्ती जैसे श्रेष्ठियों का आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। इसी प्रकार गुजरात में मोलेसलाम नाम के नवमुस्लिमों को पुनः हिन्दू धर्म में दीक्षित कर उन्हें राजपूतों के समाज में प्रविष्ट कराने का श्रेय भी शारदाजी को ही है।

शारदाजी के लिये अछूतोद्धार तथा शुद्धि केवल सैद्धान्तिक विचारधारायें ही नहीं थीं। वे मानवमात्र की समानता को हार्दिक भाव से स्वीकार करते थे। उनके यहाँ तो एक अछूत (भंगी) नौकर के रूप में रहता था। अनेक व्यक्तियों ने शारदाजी के यहाँ इसीलिये आना जाना छोड़ दिया था क्यों कि वहाँ उन्हें उस अन्त्यज के हाथ का पानी पीना पड़ता था। शारदाजी की पत्नी की सेविका जो गृहकार्य तथा बच्चों को संभालती थी वह भी अछूत थी। जीवन पर्यन्त वह सेविका बन कर रही।

**ब्रह्मदेशीय आर्य सम्मेलन की अध्यक्षता—**

भारत के निकटवर्ती ब्रह्मदेश (बर्मा) में आर्यसमाज का प्रचार पर्याप्त काल से है। वहाँ के आर्यधर्म संघ ने १९४० में ब्रह्मदेशीय आर्य सम्मेलन का आयोजन किया था। श्री चाँदकरण शारदा इसके अध्यक्ष मनोनीत हुये। फलतः वे रंगून गये और इस सम्मेलन की अध्यक्षता की। यहाँ से आपने सम्पूर्ण ब्रह्मदेश का भ्रमण किया और आर्यसमाजों के माध्यम से वैदिक धर्म का संदेश बर्मावासियों को सुनाया। माण्डले तथा अन्य नगरों में उनका अभिनन्दन किया गया। □□

# शारदाजी और शिक्षा-प्रचार कार्यक्रम

शारदा जी का आर्यसमाज से जन्मजात सम्बन्ध है। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि आर्यसमाज ने शिक्षा-प्रचार के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। शासन के पश्चात् शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार में यदि किसी सार्वजनिक संस्था का योगदान रहा है, तो वह आर्यसमाज ही है। आर्यसमाज के द्वारा विदेशी शासकों द्वारा प्रचलित शिक्षा पद्धति का अंधानुकरण नहीं किया। आर्यसमाज सदा से ही इस बात का हामी रहा है कि शिक्षा के द्वारा छात्रों में राष्ट्रीय भावना जागृत की जानी चाहिये तथा उन्हें सुनागरिक बनने के लिये तैयार करना शिक्षा का महत्त्वपूर्ण लक्ष्य है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये आर्यसमाज ने अपने प्रवर्तक स्वामी दयानन्द की स्मृति में सर्वप्रथम लाहौर में डी. ए. वी. कालेज की स्थापना की तथा उसमें भारतीय धर्म के आधारभूत संस्कृत शास्त्रग्रन्थों के साथ-साथ पश्चिमी ज्ञान विज्ञान, कला कौशल आदि के शिक्षण की भी व्यवस्था हुई। कालान्तर में जब डी. ए वी. कॉलेज प्रणाली के द्वारा लक्ष्य की पूर्ति असम्भव प्रतीत होने लगी तो महान् शिक्षाशास्त्री स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हरिद्वार में गंगा के सुपावन एवं रमणीय तट पर कांगड़ी गुरुकुल स्थापित किया जिसमें प्राचीन ब्रह्मचर्याश्रम प्रणाली में आधार पर बालक को गुरु के निकट सम्पर्क में रख कर शिक्षण दिया जाता था।

अजमेर में आर्यसमाज का डी. ए. वी. विद्यालय उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक में ही स्थापित हो गया था तथा स्वयं चांदकरण जी की एन्ट्रेन्स तक शिक्षा इसी विद्यालय में हुई थी। आर्यसमाज का नारी-शिक्षा में भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। अजमेर के आर्य पुरुषों ने सन् १८९८ में आर्य पुत्री विद्यालय की स्थापना की थी। यह विद्यालय कई वर्षों तक प्रारम्भिक स्तर तक ही रहा, परन्तु शारदाजी ने उसे समुन्नत करने का दृढ़ विचार किया। उनके इस कार्य में उनकी विदुषी पुत्री सुश्री सरला शारदा का पूर्ण सहयोग मिला। सरला जी ने आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा में शिक्षा ग्रहण की है। पिता और पुत्री के अनथक प्रयास से आर्य पुत्री विद्यालय, हायर सैकण्डरी स्तर तक उन्नत हुआ तथा उसका सर्वांगीण विकास सम्भव हो सका।

इसी प्रकार महात्मा कन्हैयालालजी को सहयोग देकर शारदा जी ने दयानन्द विद्यालय नामक एक अन्य विद्यालय प्रारम्भ करवाया। आज यह

विद्यालय सैकण्डरी स्तर तक का विद्यालय है और केसरगंज स्थित परोपकारिणी सभा के भवन में संचालित होता है।

श्रीमती म. गुलाबदेवी आर्य कन्या विद्यालय की प्रबंधकारिणी समिति के भी आप वर्षों प्रधान तथा सदस्य रहे।

नगरों और कस्बों में तो शिक्षा की व्यवस्था येन केन प्रकारेण हो ही जाती थी, परन्तु आज से ३०-४० वर्ष पूर्व देहातों में शिक्षा का घोर अभाव था। विदेशी शासकों ने शिक्षा के प्रसार में कभी रुचि नहीं ली। वे जानते थे कि यदि भारत के देहातों में रहने वाले करोड़ों ग्रामीण किसान शिक्षित हो जायेंगे तो वे अपने अधिकारों की रक्षा हेतु संघर्ष का मार्ग अपनाने में तनिक भी संकोच नहीं करेंगे। फलतः देहातों को शिक्षा-सुविधाओं से सदा ही वंचित रक्खा गया। परन्तु कुछ सार्वजनिक लोकोपकारी संस्थाओं ने ग्रामीण-शिक्षा की ओर ध्यान दिया। शारदाजी ने भी इन संस्थाओं का सक्रिय सहयोग लेकर अजमेर के निकटस्थल ग्रामों में विद्यालयों का एक जाल बिछा दिया। यहाँ यह स्मरणीय है कि इन देहाती स्कूलों के आर्थिक भार का वहन बिड़ला शिक्षा न्यास पिलानी करता था, परन्तु देखरेख तथा संचालन चांदकरणजी के ही जिम्मे था। निम्न ग्रामों में शारदाजी के मार्गदर्शन में विद्यालय चलाये जाते थे—

वूवानी—बिरला शिक्षा न्यास के द्वारा संचालित। अध्यापक को अखिल भारतीय आर्य (हिन्दू) धर्म सेवा संघ से भी स्वल्प अनुदान धार्मिक प्रचार हेतु मिलता था।

भूडोल—यहाँ का विद्यालय भी न्यास तथा आर्यधर्म सेवा संघ से सहायता एवं अनुदान प्राप्त करता था। इसी प्रकार पर्वतपुरा, मदारपुरा होकराँ, मसीना आदि ग्रामों में बिड़ला शिक्षा निधि के द्वारा शारदाजी के नियंत्रण में शिक्षण संस्थायें चलाई जाती रहीं। मोहमी तथा दांता में अखिल भारतीय आर्य हिन्दू सेवा संघ के तत्त्वावधान में विद्यालय चलते थे। शारदाजी यह अनुभव करते थे कि अजमेर के इस देहाती क्षेत्र में ईसाई प्रचारकों ने सर्वत्र विद्यालय, औषधालय आदि के द्वारा अपने केन्द्र खोल रक्खे हैं। अतः इन ग्रामों में ईसाइयों के अराष्ट्रीय प्रचार के मुकाबिले पर आर्यसमाज तथा अन्य हिन्दुत्वनिष्ठ संस्थाओं द्वारा शिक्षण संस्थायें खोलना अत्यन्त आवश्यक है। इस हेतु शारदाजी ने तन मन से इस कार्य को पूर्ण किया। इस प्रकार ग्रामीण बालकों में भी शिक्षा की ज्योति जगाने का श्रेय शारदाजी को है।

□□

११

# किसान-मजदूर वर्ग का नेतृत्व : श्रम संगठनों को शारदाजी का सहयोग

प्रायः देखा जाता है कि धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में कार्य करने वाले सार्वजनिक पुरुष देश के आर्थिक कार्यक्रमों तथा आर्थिक आन्दोलनों से विमुख ही रहते हैं। शारदाजी इसके अपवाद थे। उनकी जितनी रुचि धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में थी उतनी ही आर्थिक समस्याओं के समाधान में भी। वे किसान और मजदूर वर्ग के सच्चे हितैषी थे। ग्रामों में भाषण कर देश के अन्नदाता किसान की वस्तुस्थिति का उन्होंने वास्तविक ज्ञान प्राप्त किया था। १९२१ में जब व्यावर में किसान-सभा का सम्मेलन हुआ तो शारदाजी ने उसकी अध्यक्षता की। इसी वर्ष अजमेर में बी. बी. एण्ड. सी. आई रेल्वे के कारखानों के मजदूरों का संगठन किया गया। इस श्रमिकसंघ की अध्यक्षता का गुरुतर दायित्व भी शारदाजी को ही सौंपा गया। उन्होंने मजदूर वर्ग की कठिनाइयों का समाधान करने में पूर्ण शक्ति लगा कर कार्य किया। रायसाहब चन्द्रिकाप्रसाद तिवारी के सहयोग से उन्होंने देश में उस समय श्रम संगठन का कार्य किया, जब उस क्षेत्र में आने का साहस कोई भी नहीं कर सका था। भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री वराहगिरि वैंकटगिरि ने भी अजमेर की श्रमिक समस्याओं में अभिरुचि प्रदर्शित की थी। समय समय पर वे समाज के विभिन्न कमजोर वर्ग के लोगों की सहायता के लिये तत्पर रहते थे। १९५०-५१ में उन्होंने पटवारियों के सम्मेलन की अध्यक्षता की तथा उनके पैन्शन के अधिकारों का समर्थन किया।

**क्रान्तिकारियों के साथी—**

भारत को स्वाधीन कराने की सशस्त्र क्रान्तिकारी चेष्टाओं का इतिहास जितना पुराना है, उतना ही मनोरञ्जक भी। राजस्थान में भी क्रान्तिकारियों को अपनी गतिविधियों का संचालन करने के लिये उपयुक्त वातावरण प्राप्त होता रहा। महर्षि दयानन्द के पट्ट शिष्य और कालान्तर में यूरोप को अपना कार्यस्थल बनाकर सशस्त्र क्रान्ति की चेष्टा करने वाले पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा पर्याप्त समय तक राजस्थान में रहे थे। रतलाम और उदयपुर राज्यों में उच्च पदों कर कार्य करने के साथ साथ वे अजमेर भी रहे। यहाँ के वातावरण में क्रान्तिकारी विचारों को भरने में श्याम जी का महत्त्वपूर्ण योग रहा। श्री अर्जुनलाल सेठी, केसरीसिंह बारहठ, राव गोपालसिंह

खरवा आदि की क्रान्तिकारी प्रवृत्तियों के प्रति चांदकरण शारदा का सदा ही प्रशंसा एवं सहयोग का भाव रहा। खरवा अजमेर के अन्तर्गत एक छोटी सी जागीर है। उसके स्वामी राव गोपालसिंह अत्यन्त स्वाभिमानी प्रवृत्ति के क्षत्रिय थे। अंग्रेजों को निकाल कर देश में स्वराज्य की स्थापना करने के जो क्रान्तिकारी प्रयास किये जाते थे, खरवा के राव साहब का उन्हें पूर्ण सहयोग और समर्थन प्राप्त था। श्री विजयसिंह 'पथिक' राव साहब के दाहिने हाथ थे। शारदाजी का इन सभी क्रान्तिकारियों से अत्यन्त निकट का सम्पर्क था। बनारस षड्यन्त्र अभियोग के बाद जब राव गोपालसिंह को उत्तर-प्रदेश में बंदी बना लिया गया तो शारदा जी ने उन्हें छुड़ाने के अनेक प्रयास किये। जब राव गोपालसिंह नजरबंदी से मुक्त होकर अजमेर आये तो कांग्रेस के तत्कालीन प्रधान के नाते शारदाजी ने उनका अभूतपूर्व स्वागत किया तथा नगर के मुख्य बाजारों से होकर उनका जुलूस निकाला। इसी प्रकार श्री अर्जुनलाल सेठी के कारावास से मुक्त होकर आने पर उनका जो अजमेर में उत्फुल्ल भाव से स्वागत हुआ, उसमें भी शारदाजी की ही प्रेरणायें काम करती थीं।

यदा कदा भारत-विख्यात क्रान्तिकारी अजमेर आकर शारदाजी से अपना प्रच्छन्न सम्पर्क बनाते। शारदाजी भी अत्यन्त निर्भीक भाव से देश के लिये अपने सर्वस्व का बलिदान करने वाले इन आतंकवादी क्रान्तिकारियों को पूर्ण सहयोग और संरक्षण प्रदान करते। १९३० में अचानक चन्द्रशेखर 'आजाद' का अजमेर आगमन हुआ। उस समय वे अपने आपको सरकारी गुप्तचरों की दृष्टि से बचा कर दिल्ली जाने की फिराक में थे। वे सीधे शारदाजी के निवासस्थान पर शारदाभवन में आ गये। उसके पश्चात् किस प्रकार भारत के इस महान् क्रान्तिकारी को शारदाजी ने अपनी जान जोखिम में डालकर सुरक्षित दिल्ली भिजवा दिया, यह वृत्तान्त एक प्रत्यक्ष दर्शी-स्वयं शारदाजी के ही बड़े पुत्र श्रीकरण शारदा के मुख से सुनिये—

ब्यावर के क्रान्तिकारियों के सहयोगी सेठ दामोदरदास राठी तो शारदाजी के समधी ही थे। क्रान्तिकारी आन्दोलन को आर्थिक सहायता देना राठी जी का खास काम था। वैश्य होकर भी गजब के साहसी थे। श्यामजी कृष्ण वर्मा तथा अरविंद घोष जैसे क्रान्तिकारियों को जोखम उठा कर अपने यहाँ ठहराया करते थे।

चन्द्रशेखर आजाद पुलिस से छुपते हुए जब शारदाभवन पहुँचे तब वहाँ खेलते हुए बच्चों से, जिनमें मैं भी था, शारदाजी के बारे में पूछा। मैं उन्हें पूज्य पिताजी के पास ले गया। चन्द्रशेखर को देखकर पिताजी गले मिले और आने का कारण पूछा। आजाद ने कहा कि पुलिस मेरे पीछे आ रही है मेरी रक्षा करके मुझे दिल्ली पहुँचाने का प्रबन्ध करें। पिताजी ने कुछ क्षण

सोचा और बच्चों को आनासागर की तरफ जहाँ अपनी नाव पड़ी थी उसको लेके पतवार ले कर पहुँचने को कहा। हम लोग आनासागर अपनी नाव के पास पहुँच गये। कुछ ही क्षणों में पिताजी चन्द्रशेखर को लेकर वहाँ आ गये। उन्होंने झट से नाव को पानी में उतारा और चन्द्रशेखर को उसमें बिठा कर नाव स्वयं खेने लगे। चीफ कमिश्नर की कोठी के पास नाव को खड़ा कर चन्द्रशेखर को उसी में बैठे रहने का अनुरोध कर बजरंगगढ़ से घर लौट आये। थोड़ी देर में पुलिस आई। पिताजी से चन्द्रशेखर के बारे में पूछताछ की। पिताजी ने कहा मुझे कुछ नहीं मालूम तदपि पुलिस ने घर के प्रत्येक कमरे की तलाशी ली किन्तु कुछ न मिलने पर निराश लौट गई। पिताजी प्रातः चार बजे पुनः नाव के पास पहुँच गये जहाँ रात्रिभर चन्द्रशेखर बैठे थे। उन्हें किनारे उतार कर चौरसियावास गाँव की ओर उनके साथ पैदल चल दिये। गाँव में अपने मुवक्किल को बैलगाड़ी जोतने को कहा और उसमें चन्द्रशेखर को ओढ़ा कर लिटा दिया गया और गाड़ीवान को उनको किशनगढ़ रेलवे स्टेशन पर उतार देने को कहा गया। किशनगढ़ से रात्रि की मेल से चन्द्रशेखर दिल्ली पहुँच गये।

□□

# चाँदकरण शारदा का हिन्दूसभा में प्रवेश

कांग्रेस ने मुसलमानों के सम्बन्ध में एक विशेष तुष्टिकारिणी नीति सदा से ही अपना रखी थी। असहयोग आन्दोलन में मुसलमानों का सहयोग लेने के लिये महात्मा गांधी ने भी एक विशुद्ध साम्प्रदायिक प्रश्न खिलाफत का समर्थन किया था। वास्तव में टर्की में मुस्तफा कमाल पाशा का उद्भव एक प्रगतिशील राष्ट्र के अभ्युदय का सूचक था। कमाल पाशा ने परम्परागत रूढ़िवाद पर आश्रित खिलाफत को समाप्त कर टर्की को यूरोप का अत्यन्त समुन्नत आधुनिक राष्ट्र बनाया, परन्तु भारत के मुसलमानों ने उसी खिलाफत की रक्षा करने का बीड़ा उठाया और अंग्रेजों का विरोध किया था। यद्यपि अनेक विचारशील लोगों ने खिलाफत के एक विदेशी प्रश्न को भारत की स्वाधीनता के आन्दोलन के साथ जोड़े जाने का विरोध किया था, परन्तु हिन्दू-मुस्लिम एकता की गहमागहमी में इस ओर किसी का ध्यान नहीं गया। परन्तु एकता का यह उत्साहप्रद वातावरण वस्तुतः बालू की नींव पर ही खड़ा था, इसलिये जब टर्की में खिलाफत का जनाजा निकल गया तो भारत के मुसलमानों का भी मध्यकालीन सामन्तवादी स्वप्न अनायास ही भंग हुआ। इधर महात्मा गांधी ने भी चौरी-चौराकाण्ड से दुःखी होकर असहयोग आन्दोलन को अनायास ही स्थगित कर दिया। समस्त देश में निराशा और उदासी का वातावरण छा गया। अचानक ही साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठे। कानपुर, कलकत्ता लाहौर आदि नगरों के हिन्दू-मुस्लिम दंगों में अपार जन-धन की क्षति हुई। उधर १९२३ में मलाबार में मोपला मुसलमानों ने हिन्दुओं पर नाना प्रकार के अत्याचार किये। निरपराध हिन्दुओं को मारा गया, उनके मकान लूटे गये, स्त्रियों पर अत्याचार हुए। सारा देश साम्प्रदायिक दंगों की विभीषिका से थर्रा उठा।

विचारशील नेताओं ने हिन्दू मुस्लिम समस्या को एक भिन्न दृष्टिकोण से देखना आरम्भ किया। उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि एकता का सुदृढ़ आधार समानता और परस्पर बंधुत्व की भावना ही है, न कि अनावश्यक रूप से संतुष्ट कर एक सम्प्रदाय विशेष को पृथक् सुविधायें या रिआयतें देने की प्रवृत्ति। साम्प्रदायिक दंगों में हिन्दुओं की ही विशेष क्षति हुई थी। हिन्दू समाज अपनी विविध दुर्बलताओं, संगठन की कमी, जातिगत प्रेम के अभाव तथा स्वाभिमान शून्यता के कारण सदा ही कठिनाइयों का शिकार होता रहा। 'दैवो दुर्बलघातकः' की उक्ति हिन्दुओं पर पूर्णतया चरितार्थ होती रही है। इन परिस्थितियों में हिन्दू समाज के शुभचिन्तक महानुभावों

ने हिन्दू जाति को सुसंगठित बनाने की आवश्यकता अनुभव की। पं. मदन-मोहन मालवीय, लाला लाजपतराय और स्वामी श्रद्धानन्द जैसे तपःपूत नेताओं ने अखिल भारतीय हिन्दू महासभा को सबल बनाने का यत्न किया। यद्यपि हिन्दू महासभा की स्थापना बहुत पूर्व ही हो चुकी थी, उसके वार्षिक अधिवेशन भी कांग्रेस के साथ ही साथ होते थे, परन्तु उसमें प्राणों की ऊष्मा का संचार अभी तक नहीं हो सका था।

जब मौलाना मुहम्मदअली जैसे कांग्रेसी नेताओं ने भी अपनी गर्हित एवं संकीर्ण साम्प्रदायिक मनोवृत्ति का परिचय देकर काकीनाडा कांग्रेस के अधिवेशन में सभापति पद से भाषण देते हुये सात करोड़ अछूत जातियों के हिन्दू और मुसलमानों द्वारा बराबर बांट लेने की बात कही, तब विचार-शील हिन्दुत्वनिष्ठ नेताओं का चौंकना स्वाभाविक ही था। मुस्लिम मनोवृत्ति की संकीर्णता उस समय भी देखी गई जब मौलाना मुहम्मदअली जैसे कांग्रेस के एक वरिष्ठ नेता ने महात्मा गांधी की तुलना में एक निकृष्ट एवं बदचलन मुसलमान को भी श्रेष्ठ बताया। ऐसे ही साम्प्रदायिक विद्वेष से पूर्ण वातावरण से क्षुब्ध होकर हिन्दू महासभा के माध्यम से हिन्दू समाज को जागृत, कर्त्तव्यनिष्ठ तथा शक्तिसम्पन्न बनाने का प्रयत्न किया गया। १९२३ में महामना मालवीय जी के निमंत्रण पर शारदाजी बनारस गये तथा महासभा को प्राणवान् बनाने के सम्बन्ध में विचार-विमर्श किया। इसी अवसर पर उन्होंने दलित जातियों के उत्थान पर एक भाषण-माला प्रस्तुत की। १९२५ और १९२६ में वे हिन्दू महासभा के कलकत्ता और दिल्ली अधिवेशनों में सम्मिलित हुये। अन्य प्रान्तों की भांति राजस्थान में भी हिन्दू सभा का संगठन किया गया। राजस्थान प्रान्तीय हिन्दू सभा का प्रथम अधिवेशन अजमेर के निकट पुष्कर में कार्तिक शुक्ल १४, १५ सं. १९८१ वि. को सम्पन्न हुआ। अधिवेशन की अध्यक्षता राजस्थान के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी सामन्त राव गोपालसिंह राठौड़ खरवा ने की। शारदाजी स्वागत-कारिणी समिति के अध्यक्ष थे। इस अवसर पर उन्होंने अपनी ओजस्विनी वक्तृता प्रस्तुत करते हुये पुष्कर तीर्थस्थान के धार्मिक तथा ऐतिहासिक महत्त्व का निरूपण किया तथा भारतीय हिन्दू समाज के समक्ष प्रस्तुत विभिन्न समस्याओं का उल्लेख किया।

**अजमेर में हिन्दू सभा—**

१९२३ में अजमेर में भी साम्प्रदायिक उपद्रव हुये। जगदीश की सवारी पर हमला हुआ, मंदिर को क्षति पहुंची, तथा निरपराध हिन्दुओं के घरों पर हमले हुये। शारदा जी ने अविलम्ब हिन्दू सभा का संगठन किया तथा हिन्दू हितों के संरक्षण के लिये तत्पर हो गये। १९२८ में वे अजमेर प्रदेश की हिन्दू महासभा के महामंत्री निर्वाचित हुये। अजमेर हिन्दू सभा के तत्त्वावधान

में हिन्दू जाति को संगठित एवं शक्तिशाली बनाने के विभिन्न उपाय किये गये। १९२३ से १९२८ तक की अवधि में नगर में स्थान-स्थान पर व्यायाम शालायें तथा मल्लशालायें स्थापित की गईं, जिनमें युवकों को शारीरिक दृष्टि से सबल बनाने की चेष्ट की जाती थी। महाराणा प्रताप, शिवाजी, तथा दुर्गादास जैसे राजस्थान के गौरवशाली ऐतिहासिक महापुरुषों की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिये जयन्तियों का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त नगर के हिन्दुओं के हितों के संरक्षण, शुद्धि, दलितोद्धार, अबलारक्षण आदि के विविध कार्यक्रम संचालित किये जाते रहे। शारदाजी का इन सभी कार्यों में सक्रिय सहयोग रहा। उन्होंने समय-समय पर महामना मालवीय जी, श्री एन. सी. केलकर, लाला लाजपतराय, डॉ० मुञ्जे जैसे अखिल भारतीय स्तर के नेताओं को अजमेर आमंत्रित किया तथा उनके व्याख्यानों का आयोजन कर सुप्त हिन्दू समाज में नवीन जागृति फैलाई। १९३१ में शारदाजी को गुजरात प्रान्तीय हिन्दू सम्मेलन की अध्यक्षता हेतु अहमदाबाद आमंत्रित किया गया। इस अवसर का लाभ उठाकर उन्होंने गुजरात का व्यापक दौरा किया तथा बड़ौदा, सूरत, भड़ौच, बलसाड तथा बम्बई जाकर हिन्दू संगठन तथा अछूतोद्धार का संदेश दिया। इसी वर्ष हिन्दू महासभा के आकोला अधिवेशन में वे सम्मिलित हुये तथा राजस्थान प्रान्तीय हिन्दू महासभा के महामंत्री नियुक्त हुये। १९३२ में महासभा का वार्षिक अधिवेशन दिल्ली में हुआ जिसमें शारदा जी सम्मिलित हुये। १९३४ में वे राजस्थान प्रान्तीय हिन्दू महासभा के प्रधान पद पर अभिषिक्त हुये।

इस प्रकार महासभा की प्रवृत्तियों और गतिविधियों में निरन्तर भाग लेने के कारण वे अखिल भारतीय स्तर के महासभाई नेताओं में परिगणित होने लगे। १९३५-३६ में महासभा के पूना अधिवेशन में महामंत्री निर्वाचित हुये। इस महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व को शारदाजी ने भली भाँति निभाया और आगामी वर्ष में वे महासभा के संदेश को सर्वत्र प्रसारित करते रहे। १९४३ में उन्होंने महासभा के मन्तव्यों के प्रचारार्थ सिंध तथा संयुक्त प्रान्त का विस्तृत भ्रमण किया। इस अवसर पर उन्होंने 'विश्व की नई व्यवस्था', युद्धोपरान्त 'नवनिर्माण का कार्यक्रम' आदि विषयों पर भाषण दिये। इस भ्रमण के दौरान वे जैकोबाबाद, हैदराबाद (सिंध), सक्खर, मीरपुर खास, कराची, दिल्ली, लखनऊ, कानपुर आदि नगरों में गये। १९४४ में भी वे प्रान्तीय महासभा के अध्यक्ष पद पर रहे। अखिल भारतीय महासभा की कार्यकारिणी के सदस्य निर्वाचित हुये तथा शामली (संयुक्त प्रान्त) में हिन्दू सम्मेलन की अध्यक्षता की। इस वर्ष महासभा का वार्षिक अधिवेशन अमृतसर में हुआ था। उसमें सम्मिलित होने के साथ-साथ आपने हिन्दू हितों की रक्षा के लिये राजस्थान के क्षत्रिय नरेशों से व्यक्तिगत रूप से भेंट की।

१८ जनवरी १९४४ को महाराजा जोधपुर, फरवरी १९४४ में महाराजा झालावाड़, महाराव कोटा तथा २४ अप्रैल १९४४ को महाराणा उदयपुर से भेंट की।

इन दिनों सिंध की मुस्लिम लीगी सरकार ने आर्यसमाज के मान्य ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के चौदहवें समुल्लास पर प्रतिबंध लगा देने की धमकी दे रक्खी थी। विचार स्वतंत्रता को कुण्ठित करने की इस घृणित प्रवृत्ति का सर्वत्र विरोध हो रहा था। आर्यसमाज ने अपने आदरणीय प्रवर्तक के इस महान् युग परिवर्तनकारी ग्रन्थ के किसी भी अंश पर प्रतिबंध लगाये जाने का दृढ़ विरोध किया। शारदाजी ने भी अपने भ्रमण के प्रसंग में सत्यार्थप्रकाश की रक्षा में आर्यों को सर्वस्व न्यौछावर करने की प्रेरणा दी। जोधपुर नरेश महाराजा उम्मेदसिंह जी को शारदाजी ने सत्यार्थप्रकाश भेंट की तथा सत्यार्थ प्रकाश विषयक आर्यसमाज के भावी आन्दोलन की रूपरेखा से अवगत किया। महाराजा ने शारदाजी को आश्वासन दिया कि सत्यार्थप्रकाश की रक्षा के लिये वे पूर्ण कटिवद्ध हैं तथा स्वकर्त्तव्य पालन में कुछ भी उठा नहीं रखेंगे। इसी प्रकार के आश्वासन आपको झालावाड़, कोटा तथा उदयपुर के शासकों की ओर से भी मिले। इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत देशी रियासतों के अनेक राजपुरुषों से भेंट करने का अवसर भी शारदाजी को मिला, जिनसे रियासती राजनीति, हिन्दू हितों की सुरक्षा तथा अन्य सार्वजनिक विषयों पर चर्चा हुई। जोधपुर के मुख्यमंत्री सर डोलाण्ड फील्ड, उपमुख्य मंत्री दीवानबहादुर पं० धर्मनारायणजी, महाराजा के छोटे भाई महाराजाधिराज श्री अजीतसिंहजी, उदयपुर के प्रधानमंत्री सर टी. वी. राघवाचार्य, युवराज श्री भगवतसिंहजी आदि से आपकी भेंट विशेष उल्लेखनीय रही।

मई १९४४ में शारदाजी ने जम्मू काश्मीर की यात्रा की। प्रथम जम्मू में उनका प्रभावशाली भाषण हुआ। तदुपरान्त राजौरी में आपने जम्मू काश्मीर प्रान्तीय हिन्दू सम्मेलन की अध्यक्षता की। तत्पश्चात् श्रीनगर पहुँचे। पहलगाँव, अनन्तनाग, मुजफ्फराबाद आदि स्थानों पर आपने अपने प्रभावशाली भाषणों में पाकिस्तान विषयक मुस्लिम लीग की योजना का भण्डाफोड़ करते हुये मिस्टर जिन्ना की द्विराष्ट्रवाद की नीति का पर्दाफाश किया। पुनः रावलपिण्डी, लाहौर तथा दिल्ली में भाषण देते हुये अजमेर लौटे। शारदाजी के उद्योग से अलवर, ईडर, प्रतापगढ़ तथा डूंगरपुर के नरेशों ने हिन्दू महासभा की राजस्थान प्रान्तीय शाखा का संरक्षक बनना स्वीकार किया। राजस्थान प्रान्तीय हिन्दू सभा ने शारदाजी के नेतृत्व में बाढ़ में सहायता, नारीरक्षा, अजमेर जिले के गांवों में शिक्षाप्रचार, औषधि वितरण, शुद्धि, दलितोद्धार आदि के कार्य तत्परतापूर्वक किये। इसी बीच राजनीतिक जागृति के भी अनेक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

११ फरवरी १९४५ को आबू शिखर पर अखिल भारतीय हिन्दू धर्म सम्मेलन का आयोजन शारदाजी के तत्त्वावधान में हुआ। सम्मेलन का मुख्य प्रयोजन था हिन्दू धर्म के विभिन्न मत सम्प्रदायों के आचार्यों को हिन्दू हितों के लिये संघर्षरत होने की प्रेरणा देना। आबू पर्वत स्थित सर्वेश्वर श्री रघुनाथजी के मन्दिर के महन्त श्री रामशोभादास जी इस सम्मेलन के सभापति निर्वाचित हुये। महन्त जी अत्यन्त उदार विचारों वाले साधुमना पुरुष थे। डा० मुञ्जे, पं० आनन्दप्रिय, महन्त वासुदेवाचार्य तथा स्वयं शारदाजी के प्रेरणाप्रद भाषणों ने हिन्दू समाज में एक नई स्फूर्ति उत्पन्न कर दी। २० अगस्त १९४५ को महासभा के प्रधान डॉ० श्यामाप्रसाद मुकर्जी शारदा जी के आमंत्रण पर अजमेर आये। डा० मुकर्जी का नगर में व्यस्त कार्यक्रम रहा। वे पुष्कर भी गये। इसी दिन सायंकाल को शारदा जी की अध्यक्षता में एक विशाल सभा आयोजित की गई जिसमें डा० मुकर्जी तथा हिन्दू महासभा के मंत्री श्री आशुतोष लाहिड़ी के ओजस्वी भाषण हुये। प्रान्तीय हिन्दू सभा के तत्त्वावधान में इस वर्ष पीपाड़ के साम्प्रदायिक उपद्रवों में हिन्दू हितों की रक्षा तथा तारागढ़ पर पृथ्वीराज स्मारक विषयक योजना को क्रियान्वित किया गया। मनोहरपुरा, मुकुन्दगढ़, रींगस (जयपुर राज्य), बालोतरा, पीपाड़ (जोधपुर राज्य), शिवगंज (सिरोही राज्य) तथा हमीरगढ़ (मेवाड़ राज्य) में हुये साम्प्रदायिक दंगों में हिन्दू हितों की रक्षा के लिये किये शारदाजी के प्रयत्नों की सर्वत्र सराहना की गई।

१९४५ में महासभा का अधिवेशन बिलासपुर में हुआ। शारदाजी इस वार पुन: महामंत्री चुने गये। इस महत्त्वपूर्ण पद का निर्वाह करते हुये आपने मध्यप्रदेश, गुजरात, सौराष्ट्र, सिंध, पंजाव, उत्तर प्रदेश, बिहार तथा बंगाल का व्यापक दौरा किया। हिन्दू संगठन और सत्यार्थप्रकाश की जब्ती के विरुद्ध लोकमत जागृत करने हेतु आपने सैकड़ों भाषण दिये। पत्रकार सम्मेलन आयोजित किये तथा गुजरात में पोरबंदर, नवानगर के जामसाहब, तथा राजकोट के नरेशों से भेंट की। १९४६ का वर्ष भी गुजरात काठियावाड़, राजस्थान तथा मध्यप्रदेश के दौरों में व्यतीत हुआ। हिन्दू संगठन, दलितोद्धार तथा हिन्दू जाति को शक्तिशाली बनाने की प्रेरणा देते हुये शारदाजी ने अपने व्याख्यानों द्वारा सर्वत्र जागृति का शंखनाद किया।

□□

शारदाजी जब महर्षि दयानन्द स्मारक समिति टंकारा के आर्थिक साहाय्य के लिए पूर्वी अफ्रीका के दौरे पर थे, तब वहाँ रलवे ट्रेन के पहले दर्जे के डिब्बे में नीचे की बर्थ पर सोते हुए यात्रा कर रहे थे, उस समय ऊपर की बर्थ पर एक पर्याप्त भारी भरकम हवशी भी सो रहा था, उसकी करवटों से हवशी समेत ऊपर वाला बर्थ शारदाजी के ऊपर ही आ गिरा जिससे आप के शिर के अतिरिक्त अन्य अङ्गों पर भीतरी गंभीर चोटें आई। इसके परिणामस्वरूप शारदाजी तभी से हृदयरोग के रोगी हो गए। क्योंकि उन पर सहसा बर्थ का आघात सोते समय हुआ।

पूर्वी अफ्रीका की सफल यात्रा कर जब आप बम्बई से अजमेर आ रहे थे तो उन पर हृदयरोग का आक्रमण हुआ। इसलिए बड़ोदा स्टेशन पर दर्शनार्थ आए हुए उनके साले साहब पं. आनन्दप्रियजी ने उनको साग्रह ट्रेन से उतार लिया। २० दिन तक बड़ौदा में हृदय रोग के उपचारार्थ रुक कर आप फिर अजमेर पहुँचे। किन्तु तब से वे निरन्तर रोगग्रस्त ही बने रहे।

इसी अन्तराल में आपने संन्यास ग्रहण कर अपने आपको स्वामी चन्द्रानन्द सरस्वती के नाम से उद्घोषित किया। तदनन्तर वे स्वामी चन्द्रानन्द जी सरस्वती के नाम से ही जाने जाते रहे।

कुछ समय के पश्चात् पौरुषग्रन्थि (Prostrate Gland) का ऑपरेशन हुआ, तब से वे नेहरू अस्पताल अजमेर से बाहर आ-जा नहीं सकते थे। डाक्टरों ने उनको चलने-फिरने से रोक रखा था। इतने पर भी वे पंजाब के हिन्दी आन्दोलन में सम्मिलित होना चाहते थे किन्तु वे डाक्टरों के मना करने से ही रुके, अन्यथा वे कभी रुकते ही नहीं। क्योंकि वे जोश की जीवित प्रतिमा जैसे थे, रुकना वे कभी जानते ही न थे। करते भी क्या स्वास्थ्य साथ नहीं देरहा था और फिर स्वास्थ्य के अधिकारी उनको घूमने-फिरने का अधिकार भी नहीं दे रहे थे। अतः विवश होकर वे अस्पताल की रुग्णशय्या पर भी सिंह के समान दहाड़ते ही रहे।

अस्पताल में भी वे अपने दैनिक यज्ञ को नहीं भूलते थे। वे कहा करते थे कि मेरा नाम 'चन्द्रानन्द' इसलिए है कि मैं चन्द्रवार को इस संसार से विदाई ग्रहण करूंगा। कुछ भी कहिये किन्तु उनकी बात तब चरितार्थ हुई जब चन्द्रवार दिनाङ्क ४ नवम्बर १९५७ तदनुसार मिति कार्त्तिक शुक्ला द्वादशी वि. सं. २०१४ को प्रातः आर्यसमाज के सच्चे सेवक का वैदिक अन्त्येष्टि संस्कार सम्पन्न हुआ और वह सदा के लिए ब्रह्मलीन हो गया।

□□

# शारदा जी के जीवन की कुछ झलकियाँ

१. कलकत्ता कांग्रेस में शरीक होने जब शारदाजी व उनके साथी जारहे थे तब अजमेर रेल्वे स्टेशन पर एक अंग्रेज अफसर ने उन्हें व उनके साथियों को रेल के सेकिन्ड क्लास डिब्बे से उतार दिया और गाली दी कि तुम काला आदमी हमारे साथ नहीं बैठ सकता। इस पर शारदाजी के व उस अंग्रेज अफसर के बीच धक्का-मुक्की हो गई और शारदाजी ने उसके थप्पड़ मार दिया। इस पर स्टेशन पर हंगामा मच गया। अंग्रेज स्टेशन मास्टर आया। शारदाजी ने उनको टिकिट बतलाया और कहा कि हम इसी ट्रेन से सफर करेंगे। स्टेशन मास्टर के इन्कार करने पर शारदा जी व उनके साथी रेल की पटरी पर लेट गये। ट्रेन दो घण्टा लेट हो गई और आखिर में उन्हें दूसरे कम्पार्टमेण्ट में बिठलाया गया तभी ट्रेन रवाना हो सकी।

२. एक बार सेठ जमनालाल जी बजाज व शारदा जी बीकानेर में एक आम सभा को सम्बोधित करने गये। वहाँ के महाराजा गंगासिंह जी को जब पता लगा कि शारदा जी बीकानेर आये हैं और भाषण देंगे, उन्होंने इन्सपेक्टर जनरल को बुलाकर कहा कि मेरे राज्य में कोई राजनैतिक मीटिंग नहीं हो सकती। अतः दोनों को गिरफ्तार कर हमारे राज्य से बाहर निकाल दो। डी. आई. जी ने दोनों को पकड़ कर एक फर्स्ट क्लास रेल के डिब्बे में पुलिस के पहरे में बन्द करके एक इंजिन लगाकर उस डिब्बे को फुलेरा उतार दिया।

३. प्रतिवर्ष कार्तिक मास में पुष्कर मेले के अवसर पर शारदा जी हिन्दू सम्मेलन का आयोजन करते थे। एक बार वीर सावरकर व डा. मुञ्जे उस सम्मेलन की अध्यक्षता व उद्‌घाटन करने अजमेर आनेवाले थे। किसी वजह से उनकी मोटर खराब होने से वे समय पर नहीं पहुँच सके। शारदा जी अकेले ही पुष्कर रवाना हो गये जिससे कि समय पर सभा आरम्भ की जा सके। वीर सावरकर व डा. मुञ्जे कुछ समय बाद पहुँचे तो उनके पुत्र श्री-करण ने बताया कि शारदाजी पुष्कर गये। वीर सावरकर ने कहा कि बहुत भूख लगी है कुछ फल व दूध लाओ। उस समय सवेरे-सवेरे दूध आया नहीं था। घर में कुछ पपीते व अनार पड़े थे। वे उनके सामने रख दिये।

सावरकर जी ने चाकू का इन्तजार किये विना अपना छुरा निकाल कर पपीते काट कर खाना शुरू कर दिया। सावरकर जी ने श्रीकरण से कहा अगर राजनीति में भाग लेना है तो याद रखो सब तुम्हारे साथी नहीं बन सकते। तुम्हें यह मोटो याद रखना होगा—

If you come, with you; if you donot come without you. if you oppose inspite of you, we will carry on our banner of freedom fight".

४. डा. राममनोहर लोहिया शारदा भवन में ठहरे हुये थे, उन दिनों उनको सुनने की बहुत धूम थी। कुछ लोगों ने लोहिया जी से कहा कि शारदाजी साम्प्रदायिक हैं, उनके यहाँ नहीं ठहरना चाहिए। डा. लोहिया ने जवाब दिया कि शारदा जी उस समय के स्वतन्त्रता सेनानी हैं, जब तुम्हें आजादी के मायने भी नहीं आते थे।

५. जब बाबू जयप्रकाशनारायण अजमेर आये, शारदाभवन में उनके सम्मान में चाय पार्टी का आयोजन था। कुछ समाजवादी कार्यकर्त्ताओं ने श्री जयप्रकाशनारायण से कहा कि आपको उनकी पार्टी में नहीं जाना चाहिए। जयप्रकाश बाबू ने कहा कि शारदा जी राजस्थान में क्रांति के अग्रदूत व राष्ट्रीय चेतना के प्रतीक हैं, उनका मैं बहुत आदर करता हूँ।

६. श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन अजमेर में कांग्रेस प्रेसीडेन्ट की हैसियत से आये तो उन्होंने स्टेशन पर उतरते ही कहा कि मैं मेरे पुराने मित्र चांदकरण जी के पास ठहरूंगा और शारदाजी के साथ शारदाभवन आ गये। टण्डन जी ने घर पहुँचते ही शारदाजी की पुत्रवधू से कहा कि मेरे लिये चाय लाओ। वे जल्दी से चाय बना लाईं। चाय को देखकर टण्डन जी हंसने लगे और कहा—बेटी मेरी चाय अनोखी है। गरम पानी में गुड़ और नींबू डाल कर ले आओ, यही मेरी चाय है।

७. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक गुरु गोलवल्कर जब-जब अजमेर आये शारदा जी से बिना मिले नहीं गये। और अनेक बार उनके ही निवास-स्थान पर ठहरे।

८. जब श्री जगजीवनराम रेलमंत्री थे और अजमेर आये हुये थे उन्हें पता लगा कि शारदा जी रुग्ण हैं तो उनसे मिलने उनके निवास-स्थान पर गये और अपने साथियों से कहा कि मैं जो कुछ हूँ, वह शारदा जी की कृपा का फल है। मैं आपके उपकार भूल नहीं सकता। आपने अछूतों के

हित के लिये उस जमाने में कितना कार्य किया, जबकि अछूत को सवर्ण लोग कुएँ से पानी तक नहीं भरने देते थे। मैं भी आपकी सहायता से पढ़ा और इस योग्य बना कि आज भारत सरकार का मंत्री हूँ।

९. भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्रप्रसाद जब अजमेर आये तब शारदा जी रुग्ण थे और राजेन्द्र बाबू ने उनसे मिलने की इच्छा प्रकट की परन्तु उन्हें बताया गया कि वे प्रोटोकल के हिसाब से जा नहीं सकते। तब उन्होंने अपना संदेश शारदा जी के पुत्र श्रीकरण के साथ यह कहते हुये भेजा कि पैर में बेड़ियाँ पड़ी हैं इसलिये अपने पुराने दोस्त से मिलने ही नहीं आ सकता।

१०. डाक्टर सम्पूर्णानन्द जी, राज्यपाल राजस्थान ने बतलाया कि मैं शारदा जी का बड़ा अहसानमन्द हूँ। जब मैं बिना नौकरी के था और खाने पीने के लाले पड़ रहे थे, उस समय शारदा जी ने मेरी मदद की थी। यह उद्गार उन्होंने उस समय कहे जब वे दयानन्द मार्केट का शिलान्यास करने आये।

११. सन् १९२३ में अजमेर में हिन्दू-मुस्लिम दंगा हुआ उसमें सैकड़ों हिन्दू गिरफ्तार कर लिये गये। उस समय शारदा जी ने अकेले उनके मुकदमों की पैरवी कर उन्हें छुड़ाया।

१२. जब भारत का विभाजन हुआ तो सैकड़ों शरणार्थी अजमेर स्टेशन पर आते। उनके खाने-पीने की व्यवस्था शारदा जी करते और उनको अजमेर में बसाने में पूरी सहायता देते। जब अजमेर में दंगे हुये, सैकड़ों सिन्धी शरणार्थियों को पकड़ कर जेल में डाल दिया गया। उनको छुड़ाने के लिये जमानत देने वाला कोई तैयार नहीं था। उस समय शारदाजी व उनके पुत्र श्रीकरण ने उनके मुकदमों की निःशुल्क पैरवी की तथा स्वयं जमानत देकर उन सबको जेल से छुड़ाया।

१३. जब शारदाजी की आयु केवल १६ वर्ष की थी तब वे टाइफाइड से गंभीर रूप से बीमार हो गये। उस समय उन्हें स्वास्थ्य-सुधार हेतु उनके पिताजी के मित्र श्री मायारामजी चौधरी के यहां सोजत भेजा गया। वहाँ वे ६ मास तक रहे। तभी उन्होंने अपना प्रथम व्याख्यान आर्यसमाज सोजत में दिया। जिससे जनता बहुत प्रभावित हुई।

१४. बहुत समय पहले की बात है, शारदाजी ब्यावर से रेल में जिस

तृतीय श्रेणी के डिब्बे में बैठने लगे, उसमें कई मुस्लिम थे, उन्होंने उनको डिब्बे में चढ़ने से रोका। शारदाजी ने तुरन्त छुरा निकाल लिया। वादविवाद बढ़ने लगा। भीड़ इकट्ठी हो गई। स्टेशन मास्टर को खबर मिली। भागा हुआ आया और उसने डिब्बे में बैठे मुस्लिम यात्रियों से कहा—आप किसका मुकाबला कर रहे हैं ? ये चांदकरण जी शारदा हैं। उनका नाम सुनते ही पूरा का पूरा डिब्बा खाली हो गया। ऐसा प्रभाव था शारदाजी का।

१५. एक बार शारदाजी दिल्ली जा रहे थे। साथ में उनके भाई की पत्नी भी थी। बांदीकुई स्टेशन पर अलवर के तहसीलदार ने उनको डिब्बे में बैठने नहीं दिया। शारदाजी को भी जोश आ गया, हम इसी डिब्बे में बैठेंगे। तहसीलदार ने अपने पद का रौब बताना शुरू किया तभी कई शारदाजी के परिचित लोगों ने कहा—ये शारदाजी हैं आपने तंग किया तो आपकी नौकरी खतरे में पड़ सकती है। तुरन्त तहसीलदार साहब ठंडे पड़ गये और सम्मानपूर्वक उनको डिब्बे में बैठने दिया।

१६. शारदाजी कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन में अपने साथियों के साथ गये हुए थे। कलकत्ता प्रवास में वे लोग पोर्ट ट्रस्ट भी गए। वहां के अधिकारी ने दो सिपाहियों को बुलवाकर उन्हें रुकवा दिया और गाली दी। इस पर शारदाजी उत्तेजित हो गए और अपनी कमर से बेल्ट निकाल कर उनकी पिटाई कर दी। पुलिस आई और उन्हें गिरफ्तार करके ले गई। शारदाजी कलकत्ता में श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका सॉलिसीटर के मेहमान थे। शारदाजी ने पुलिस थाने से प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका को फोन किया। श्री हिम्मतसिंहका ने पुलिस कमिश्नर को फोन करके शारदाजी को तुरन्त रिहा करा दिया। श्री शारदाजी की निर्भीकता और अन्याय के विरुद्ध डट कर विरोध की भावना से कलकत्ता निवासी बड़े प्रभावित हुए।

१७. दांता रामगढ़ के ठाकुर शारदाजी के भाई श्री अमरचन्द जी की कपड़े की दूकान मै. हँसराज अमरचन्द से हजारों रुपये का कपड़ा उधार खरीदा करते थे। एक बार जब ठाकुर साहब पर १० हजार रु. से अधिक का उधार हो गया तथा शारदाजी के भाई ने रुपयों की मांग की तो ठाकुर साहब ने इन्कार कर दिया। अजमेर कोर्ट की डिक्री रजवाड़ों में तामील नहीं हो सकती थी। अतः शारदाजी ने रुपयों की डिक्री तो ठाकुर साहब के विरुद्ध लेली और कार्यवाही का इन्तजार करते रहे।

साहब ने इन्कार कर दिया। अजमेर कोर्ट की डिक्री रजवाड़ों में तामील नहीं हो सकती थी। अतः शारदाजी ने रुपयों की डिक्री तो ठाकुर साहब के विरुद्ध लेली और कार्यवाही का इन्तजार करते रहे।

एक बार ठाकुर दातारामगढ़ जब अजमेर आये और सिविल लाइन्स में ठहरे हुए थे तो शारदाजी कोर्ट के नाजिर को लेकर डिक्री की वसूली के लिये पहुंचे। ठाकुर साहब ने पिस्तौल निकाल ली और नाजिर को डराया। शारदाजी ने भी पिस्तौल निकाल ली पर नाजिर डर कर भाग गया और कोर्ट में जाकर रिपोर्ट की कि मुझे पिस्तौल दिखलाई जा रही है। अदालत ने नाजिर की अर्जी पर पुलिस फोर्स लेजाकर कुर्की करने का आदेश दिया। शारदाजी जैसे ही नाजिर व पुलिस को लेकर पहुँचे, ठाकुर साहब ने पैसे गिन दिये और डिक्री की वसूली हो गई।

ऐसी अनेक घटनायें शारदाजी के जीवन में आती हैं, जिनसे उनकी निर्भीकता, सहृदयता, उदारता आदि का परिचय मिलता है। सबका विवरण देना सम्भव भी नहीं है।

□□